मृत्यु

उठ आगे बढ़ लक्ष्य अपना ब्रह्म को बना
तू मृत्यु को ठोकर लगाते हुए रे चल"

'भाषा के भजनों' में इन पंक्तियों के प्रणेता साधक एवं विद्वान डॉ.त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय जी ने अपने "आत्मसने" जीवन में कभी अपने 'को लकीर का फकीर' होने नहीं दिया। इस बात को विगत चार पांच वर्षों के उनके दिव्य अमृत—छाया तले सत्सानिध्य में पदे—पदे अनुभव ही नहीं किया अपितु समय—समय पर स्व—जीवन को "आत्महना" होने से बचाने हेतु प्रेरणाएं भी प्राप्त करता आया हूं।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के आधार पर मृत्यु तथ्यों को विश्लेषित करती पुस्तकें आपने पढ़ीं होंगी.. इसी प्रकार सांस्कृतिक पक्ष को आधार बनाकर मृत्यु पर लिखी पुस्तकों का भी स्वाध्याय आपने किया ही होगा। किन्तु मुझे विश्वास है विज्ञान एवं सांस्कृतिक तथ्यों को अति गहन एवं सूक्ष्म धरातल पर मृत्यु संदर्भ में एकसाथ उजागर करती यह पुस्तक अपने आप में अनूठी सिद्ध होगी। आधुनिक चिकित्सा विज्ञानविद् गवेषकों के लिए जहां यह पुस्तक मार्गदर्शक बनेगी वहीं पर मुझ सदृश साधकों के लिए भी इसकी उपादेयता में संशय नहीं होना चाहिए।

***श्री.शारदादीन** जी (भिलाई) से १००० रु. इसके प्रकाशन व्यवस्था में प्राप्त हुए हैं तथा भिलाई से प्राप्त १५०० रु. गुप्तदान भी इसमें प्रयुक्त हुए हैं... जिससे संगणकीय प्रतिलिपी, मुखपृष्ठ छपाई एवं जिल्दादि में व्यय संभव हुआ है। प्रकाशन व्यवस्था में इन दिनों मेरे अनन्य सहयोगी **श्री.हर्षकुमार आर्य** (जबलपुर) रहे हैं... उक्त सभी एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी महानुभावों का मैं हार्दिक ऋणी हूं।* ... **"आर्यवीर"**

यदि जीवन से लबालब भरे जीवन्त साधक को अचानक निर्णायक मण्डल से प्रतिभागियों के ही अनुरोध पर सिर्फ दो मिनट प्रतियागिता में प्रतियोगी के रूप में भाग लेने को कहा जाए और उसे बोलने का अप्रत्याशित, तात्कालिक जो विषय दिया जाए वह हो ''तुम कैसे मरना चाहोगे?'' तो क्या होगा?

एक- उसे प्रथम पुरस्कार मिलेगा। दो- उसे प्रथम पुरस्कार में पेन मिलेगा। तीन- उसे पहले ही किसी ने डायरी दे रखी होगी। चार- वह डायरी को पेन से भरेगा। पांच- वह छोटा फैशनेबल पेन मृत्यु को प्राप्त होगा। छै- दूसरे के दान प्रदत्त पेन से लेखन पूरा होगा। और सात- इस प्रकार डायरी भरने का विषय होगा 'मृत्यु'। यह संयोग मेरे साथ हुआ। अरूणभाई के हाथ 'मृत्यु' मेरे हाथ लिखी डायरी रूप में लगी।

आज 'मृत्यु' आपके हाथ में है।

डॉ. त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय
पी. एच. डी. (वेद), एम. ए. (आठ विषय),
सत्यार्थ शास्त्री, बी. ई., एल. एल. बी.,
डी. एच. बी., पी. जी. डी. एच. ई.,
एम. आई. ई., आर. एम. पी. (१०७५२)
बी.५१२/सड़क ४, स्मृतिनगर, भिलाई नगर,
पिन-४६००२०, (म.प्र.), ☐ ०७८८—३९२८८४

मृत्यु रहस्य है जो सबसे अधिक सुलझा हुआ है। अत्यधिक सरल तथ्य सर्वाधिक कठिनता से समझ में आते हैं। यह मृत्यु के विषय में भी सत्य है। दुनियां मौत की चारागाह है। आदमी का चारा जिन्दगी है। वह आदमी जो शानदार जिन्दगी जीता है उसकी मौत भी शानदार ही होती है। उस आदमी का क्या कहना जो मौत को भी जिन्दगी की तरह जी लेता है।

"वायु अनिल अमृत है"

"भस्म अन्त है शरीर का" यह छोटा सा वेद सत्य बहुत बड़ी बात कहता है। इस सत्य की प्रखरता तब और स्पष्ट होती है जब हमें पता चलता है कि "आत्महना के लिए असूर्य नाम का लोक तय है"। "भस्म अन्त है शरीर का" का पूर्व कथन है "वायु अनिल अमृत है"। क्या वायु अनिल अमृत का रह जाना, शरीर भस्म हो जाना मृत्यु है? यदि हां तो मृत्यु अमृत है। मृत्यु है अमृत और जीते जी आत्महनन है असूर्यलोक। याने आंख बन्द होना ही मृत्यु है। मृत्यु रहस्य है जो सबसे अधिक सुलझा है।

"जीवन ही मृत्यु"

"आंख बन्द" का संस्कृत भाव है **"न पश्यति"** याने नहीं देखता है। कौन नहीं देखता है? जो नहीं छोड़ता है। उसे भी सब छोड़ना पड़ता है तो उसके अन्तिम शब्द होते हैं हाय लाकर! हाय रुपया! हाय सम्पत्ति! हाय खेती! जो जीवन भर पकड़ता फिरता है मृत्यु समय कैसे छोड़ सकता है? नहीं छोड़ सकता, नहीं देख सकता है। नहीं देख सकता है कि आंख बन्द है। अर्थात् आत्महना है, अर्थात् मृत्यु है। जहां जीवन ही मृत्यु है तो मृत्यु क्या होगी?

"चयन स्वतन्त्र है चित्"

जीता मरता नहीं है **"देव काव्य"** अर्थात् यह जगत। देवकाव्य अमर है, देव अमर है। देवकाव्य स्थाई है, देव स्थाई है। देह का अन्त भस्म है, वायु अनिल स्थाई है। मृत्यु का अर्थ स्पष्ट है- सत् स्थाई है, सच्चिदानन्द स्थाई है। सत्-चित् अस्थाई है। सत् अर्ध प्रकृति अंश है सच्चित् में, और चित् अर्ध ब्रह्म अंश है। सत् भस्म ही प्रकृति मिलना है। इससे बन्धना- इससे बन्धन भावना आत्महना भावना है। ब्रह्म युजन ब्रह्म भावना आत्म-अमृता है। चित् चयनता में ही आत्म-मृता या आत्म-अमृता है। चयन स्वतन्त्र है चित्।

मृत्यु पूर्व की मृत्यु ज्यादा भयावह स्थिति है। हे मानव! तू छोड़, ताकी तू देख १सके। तू देख, ताकी तू छोड़ सके। मृत्यु से बचने का सरल पथ है मृत्यु पूर्व मृत्यु मत भोग।

चयन स्वतन्त्र है चित्। सत्-चित् बन्धा है चयन स्वतन्त्रता से। अगर चित् का चयन है बन्धन, तो यह चयन ही सत्-चित् को फुटबाल बना देता है मृत्यु का.. और मृत्यु किक् करती खेलती है इस फुटबाल से। मृत्यु की जीवन को किक् बड़ी ही भयानक होती है। आदमी थर्-थर् कांपता जीता रहता है। जितना मौत से भागता है, उतना ही मौत उसका पीछा करती है। अगर चित् का चयन है आनन्द.. और प्रयास है सच्चिदानन्द तो क्या बात है! तब मृत्यु हो जाती है फुटबाल, और सच्चित् हो जाता है खिलाड़ी। सच्चित् जीवन में मृत्यु किक् करते हुए चलता है। मृत्यु एक खिलौना हो जाता है आदमी को।

सदियों की
सारी धरती उगी
विचार फसलों को
काट-काट कर
उनका परिशोधन कर
मस्तिष्क आगार में उसे भर
मात्र साठ वर्षीय आदमी
सदियों ज्ञान, वेद, उपनिषद,
दर्शन, गीता, पुराण, भजन,
संत्रास छाया, प्रगति, जन भरा,
अरस्तू से लेकर मैकियाविली मार्क्स भरा,
एक मरण हो खाक
रह जाता मुट्ठीभर राख
नदी बह जाता, धूल बिखर जाता
भस्मान्तम् शरीरम्
सच नहीं है आदमी।
उसका विचार ऐश्वर्य

उसका कृत कर्म ऐश्वर्य
आनेवाली सदियों तक
संवत्सर होकर
बराबर बंटता है।
बराबर बांटता है।
वह पुनः पुनः जन्मता है
अगर वह है आदमी
अन्यथा
वह है एक बुलबुला
फूला, फैला, चमका, फट गया
स्वतन्त्र हो तुम
सदियां बटोर
सदियां बांटने में
या
बुलबुला चमक फूट जाने में

नीरज कहता है.....

"न जन्म कुछ न मृत्यु कुछ, बस इतनी सी बात है,
किसी की आंख खुल गई, किसी को नीन्द आ गई।"

मृत्यु पर दो तरह के चिन्तन आम मिलते हैं। एक मृत्यु सीमा के भीतर रहते, दूसरे मृत्यु सीमा के बाहर रहते। **भस्मान्तं शरीरम्** मृत्यु सीमा के बाहर का चिन्तन है। यह 'शरीरम्' शब्द स्पष्ट करता है।

नीरज का चिन्तन भी सीमा चिन्तन है। गौतम बुद्ध के विषय में एक कथा प्रचलित है- एक महिला ने वर्षों तपस्या करके एक पुत्र प्राप्त किया.. उसका लालन-पालन किया.. उसका पुत्र जवान हुआ.. महिला जब-जब उसे देखती गर्व से भर जाती। एक दिवस वह पुत्र बीमार पड़ा.. सारी तीमारदारी करने पर भी वह बच न सका.. महिला अर्धविक्षिप्त हो गई.. उसकी लाश को छोड़ती ही न थी.. उसे पता चला गौतम बुद्ध सिद्ध पुरुष हैं.. गांव के बाहर ठहरे हुए हैं। वह उनके पास चली गई। उसका करूण क्रन्दन सुन गौतम बुद्ध ने कहां "चिन्ता मत करिए मैं आपके पुत्र को जीवित कर सकता हूं"। महिला आशान्वित हुई, आखों में चमक भरकर बोली "चलिए न मेरे साथ"। गौतमबुद्ध बोले "पर देवी उसे जिलाने के लिए मुझे एक औषधी बनानी होगी, जिसमें एक मुट्ठी राई लगेगी"। महिला ने कहां "मैं अभी राई लाती हूं"। गौतम बुद्ध ने कहां "पर मुझे राई उस घर से चाहिए जिसमें कभी भी कोई मृत्यु न हुई हो"। महिला गांव दौड़ गई, घर-घर भटकी.. हर कोई राई देने को तैयार था, पर कोई घर उसे ना मिला जिसमें मृत्यु न हुई हो.. उसे पुत्र जीवन तो न मिला, पर एक नए ज्ञान से वह जगमग हो गई।

मौत एक मांदगी का वक्त है।
कि आगे चलेंगे दम लेकर।।

'मीर' स्वयं भी नहीं जानता कि वह आगे चला कि नहीं? क्योंकि वह दुबारा यह बताने नहीं आया.. पर इस्लाम के अनुसार वह कब्र में पड़ा है, खुदा के न्याय की प्रतीक्षा करते करते।

गौतमबुद्ध, जीनो का चिन्तन भी विचित्र है- कि आदमी हर पल मरता है, हर पल जिन्दा होता है, हर पल वस्त्र पहनता है, पर आदमी को हर पल मरना जीना भी छोड़ना पड़ता है। उसके बाद के क्रम पर दर्शन मौन हो जाता है। गौतमबुद्ध भी मौन हो गए। कोई एक महापुरुष होता जो दुबारा आकर यह बताता कि मैं था तब, यह मैं हूं अब। मैं कहना यह चाहता हूं मृत्यु पश्चात् जीवन का यथावत यथार्थ प्रमाण नहीं है, चिन्तनात्मक या ज्ञानात्मक प्रमाण है।

जिन्दगी एक विचित्र चीज है.. उसमें चैतन्यतायुक्त प्राणीजगत और विचित्र है। सारे प्राणियों में नवसंचार तब होता है जब वे दुनियां से टूटते हैं, खुद से टूटते हैं... खुद से टूटने पर ऊर्जा संचार की व्यवस्था नीन्द है। आदमी गिरता है बिस्तर पर की सुबह पुनः तरोताजा हो सके.. व्यवस्था भी अबूझ है आदमी को, पर यह व्यवस्था है। ढीले-ढाले जड़वत अनजाने बेसुध पड़े रहो.. कि दूसरे दिन के लिए तरोताजा हो सको.. यह आदमी के साथ जुड़ी व्यवस्था है।

"अरे नीन्द भी क्या चीज है,
जागने का अमृत देती है"

और इसका व्यतिक्रम.....

"कड़ी मेहनत भी क्या चीज है,
नीन्द का अमृत देती है"

"अमृत नीन्द है, अमृत जागरण है।" क्या यह सूत्र 'मृत्यु-जन्म' पर लगाया जा सकता है?

'जीवनायाम' तथा 'मृत्यु-आयाम'

"सारी मृत्युएं एक समान होती हैं" यह एक **भौतिक सत्य** है। *"सारी मृत्युएं असमान होती हैं"* यह एक **जैविक सत्य** है। भौतिक मृत्यु से तात्पर्य शारीरिक तथ्यों से है।

भौतिक जन्म गर्भ से सशरीर शिशु के बाहर आने की घटना का नाम है। सशरीर वह शिशु गर्भ से बाहर आते ही मानव होता है। भौतिक जन्म की पहली क्रिया है फेफड़ों का आयतन बढ़ना। जन्म पूर्व फेफड़े पानी से भारी होते हैं। शिशु नाल से सांस लेता है। पहली सांस लेना जीवन की भौतिक अवस्था की सबसे बड़ी घटना है। पहली सांस फेफड़े फूलना उनका पानी से हलका होना जीवन का पहला लक्षण है। इसी प्रकार अन्तिम प्रश्वास छोड़ना भौतिक अवस्था की सबसे महत्वपूर्ण घटना है.. जिसका नाम मृत्यु है। भौतिक जन्म-मरण ओषजन आधारित है। भौतिकतः वरुण देव जन्म-मरण प्रमाण हैं। स्पष्ट है प्राण आयाम=प्राणायाम जीवन की अत्यधिक महत्वपूर्ण विधा है.. इसे 'जीवनायाम' तथा 'मृत्यु-आयाम' कहा जा सकता है।

'अन्तिम प्रश्वास' पश्चात् रक्तदाब समाप्त होता है.. हृदय धड़कन बन्द हो जाती है.. प्राणआयाम खो जाते हैं.. मस्तिष्क को ओषजन ह्रास सिकुड़न होती है.. रक्त ठहराव, नाड़ी बन्द, धड़कन बन्द भौतिक मृत्यु लक्षण हैं। बदन के इर्द-गिर्द जीवन आभा समाप्त हो जाती है, तब वजन में अतिन्यून करीब पचास-साठ ग्राम की कमी होती है। अग्नि जलन फफोले नहीं पड़ते.. नाड़ी कटन रक्त नहीं बहता.. फेफड़ों (छाती) पर रखी जल तस्तरी में जल स्थिर रहता है.. प्रश्वास रहितावस्था का नाम मृत्यु है। शरीर ऊष्मा समाप्ति, नेत्र चमक गति समाप्ति, शरीर रंग पीतपन, धरा तरफ रक्त संचयन, मांसपेशियों का नियन्त्रण क्रमशः पलकों, चेहरे, गर्दन, छाती, पेट एक प्रोटीन 'एक्टो-मायसिन' के नष्ट होने से समाप्त हो जाना आदि-आदि भौतिक मृत्यु के लक्षण हैं।

"उसे मृत्यु सुखद होती है"

चिकित्सा विज्ञान के मृत्यु पर मानसिक दशाओं के मस्तिष्क तथा हृदय तरंग वक्रों के निष्कर्ष यह हैं कि मृत्यु बड़ी ही सुखद घटना है। परन्तु यह वास्तव में सत्य नहीं है। मृत्यु के महापुरुषों पर भी प्रभाव एक ही नहीं है, अलग-अलग हैं। चिकित्सा विज्ञान में मस्तिष्क तरंगों को मस्तिष्क बाह्य परत (Cortex) की ई.ई.जी. (इलेक्ट्रो एसिफेलो ग्राफ) लेकर नापते हैं। मस्तिष्क की विद्युत सक्रियता सुषुप्ति, तन्द्रा, नेत्र मून्दकर विश्राम तथा जागृत अवस्था में क्रमशः डेल्टा थीटा, अल्फा बीटा तरंग माप क्रमशः २-३ प्रति सेकंड, ३-२ प्रति सेकंड, ८-१३ प्रति सेकंड से १४-३० प्रति सेकंड होती है। ध्यानावस्था में अल्फा तरंगों की मात्रा बहुगुणित हो पूरे मस्तिष्क में फैल जाती है। गहनध्यानावस्था में तन ओषजन खपत कम हो जाती है।

चिकित्सा विज्ञान के मृत्यु तथ्य कि "मृत्यु एक सुखद घटना है" भ्रामक है। गहन ध्यानावस्था में तन में ओषजन खपत, तरंग आवृत्ति समकरण चैतन्यता में स्व नियन्त्रण, स्व अभ्यास, स्वसाधना, स्वाधीनता, स्वतन्त्रता, स्वस्ति आदि के कारण होता है। यही कारण है कि साधकों तथा सामान्य व्यक्तियों की मृत्यु पर उनकी मानसिक अवस्थाओं में भेद होता है। एक साधक मृत्यु को भी साधना सांचे में ढ़ाल लेता है। अतः उसे मृत्यु सुखद होती है। इसकी चरमावस्था मृत्युंजय अवस्था है।

सामान्य अवस्था में पुत्त, वित्त, यश की एषणाओं से त्रस्त मानव के साथ मृत्यु जबरदस्ती करती है.. वह जीवन को पकड़े रहता है, मृत्यु उसे लीलती जाती है.. और वह हाय खेती, हाय पैसा, हाय बेटा, हाय कुर्सी की मानसिक यन्त्रणा में दम तोड़ता है।

"अतिभस्म का बोझ"

ब्रह्म, सत्य, धर्म, जाति, देश पर बलिदान भावना मृत्यु अभयता के विभिन्न स्तर देती है। सबसे घटिया एषणा स्थिति है। एषणा स्थिति का दिग्दर्शन इस तथ्य में निहित है कि औसतः साठ सत्तर वर्षीय सीमित (वैदिकतः शत वर्षीय सीमित) अस्थाई मानव शताधिक संसाधनों को बटोर उससे स्वयं को घेर लेता है, और मृत्यु की जबरदस्ती का शिकार बनता है। इतना सा सच कौन समझाए आदमी को कि शरीर के भस्म होते ही उस आदमी के लिए जमीन, जायदाद, धन सभी अतिभस्म हो जाते हैं। अतिभस्म का बोझ ढ़ोना मानव की सबसे बड़ी विडम्बना है।

"कालजयी"

"तब" "अब" "तब" अर्थात् कल, आज, कल महान आचार्य है। महान आचार्य है "त्रिकाल"-भूत, भविष्यत, वर्तमान। होकर चला जाए-भूत, रहकर न रहे-भविष्य। वास्तव में दोनों नहीं हैं.. और आदमी जो भस्म होने वाला है, दोनों की अतिभस्म फांकता जीता है। आदमी अतिभस्म न फांके तो? अतिभस्म रहेगी अपनी जगह, और आदमी रहेगा अपनी जगह.. आदमी 'आज' हो जाएगा.. 'अब' हो जाएगा.. त्रिकाल समाप्त हो जाएगा। द्विकाल समाप्त कर दो, 'काल' समाप्त हो जाएगा.. भूत, भविष्य न

रहे मानव **कालजयी** हो जाएगा.. एक काल हो जाएगा। परमात्मा है एक काल, परमात्मा में कल घटित नहीं होते। मानव के परमात्मा के निकट होने का सहज सरल तरीका है उसका एक काल होना।

एक काल होने का सरल पथ है **चरैवेति-चरैवेति!** बढ़े चलो-बढ़े चलो! गति के सबसे बड़े कदम हैं ज्ञान कदम। सोनेवाला कलयुग है.. कलों का युग कलयुग है। एक है भूत कल, दूसरा है भविष्य कल। इसमें डूब जाना, सोना है कलयुग। कलयुग भयानक राक्षस है.. इतिहास चीथ ड़ाले हैं इसने। इतिहास गाथाएं कल+कल=कलयुग की गाथाएं हैं.. इतिहास गाथाएं कल+कल=कल के प्रवहण का युग है। करवट बदलने वाला द्वापर है.. द्वा+पर अर्थात् कल+कल के द्वा से परे हटता, परे हटना प्रारम्भ करता। उठकर खड़े होने वाला है त्रेता.. त्रेता- कल कल और इनकी सन्धियों का ज्ञाता.. सन्धि त्रि को ज्ञाता है त्रेता। और चलने वाला है सतयुग. . सतयुग कलहता-एककाल.. एककाल हो तुम आदमी! अनन्त ज्ञान है अनन्त कदमों से नापने के लिए तुम्हारे लिए.. अपने कदम ज्ञान कर लो कलजयी हो जाओगे! कलजयी है कालजयी भैरव- द्विगुणित का रव, फैलती किरणों का ज्ञान रव.. फैलती किरणों का ज्ञान आकाश, जहां है अमृत।

"सद्गति"

सचैतन्यता से, ध्यानावस्था से मृत्यु में गमन सर्वाधिक सुखद भैरव स्थिति है। अहा! क्या आह्लाद है! क्या आनन्दातिरेक है यह स्थिति! सर्वोच्च साधना में शरीर का कण-कण स्वतः अद्भुत् योगदान दे रहा है.. शानदार मृत्यु अर्थात् अमर अमृत है यह मृत्यु। इसमें कल+कल की अतिभस्म नहीं, वर्तमान का सम साम्य सतयुग है.. यह सर्वोच्च सत् गति है। **सद्गति** को प्राप्त होना ऐसे ही नहीं कहा जाता है। मैंने नहीं देखी सुकरात की मृत्यु, दयानन्द की मृत्यु, अपनी नानी मां की मृत्यु, अरविन्द की मृत्यु, हकीकत राय की मृत्यु, भगतसिह आदि की मृत्यु.. पर में जानता हूं सद्गति मृत्यु की हकीकत...

मैंने देखी है अपनी मां की मृत्यु। एक भव्य कर्म महल थी मेरी मां.. कर्मयुग थी मेरी मां.. उसमें मैंने कल नहीं देखा। अज्ञानी था मैं.. मैंने मां को तब पहचाना जब मां जा चुकी थी.. मां पर मैंने एक कविता लिखी थी-

"व्यस्तता की एक सांस ली
व्यस्तता की एक सांस छोड़ी
बस केवल दो ही सांसे
मां मेरी ने जी जिन्दगी"

मेरी कर्ममयी मां, खेस बुनती मां, उन खेसों ओढ़ने का अमृत भरा है मेरे जीवन में.. निवार बुनती मां, उस निवार का अमृत बिछौना बिछा है मेरे जीवन में... जमावड़ा रिड़कती मां, वह मक्खन भरा है मेरे तन जीवन में.. पिन्नियां बनाती मां, रोटी बनाती, खाना खिलाती मां, कपड़े धोती मां, और सतत कर्मलीना मां, सुखमन्नी गाती सुखमनी मां, गीता गाती मां, अर्ध धर्म भजन गाती मां, इसके सहारे सतत कर्मा मां। सतयुग थी मेरी मां, उसके पास कल नहीं था। वर्तमान में मैं "मां" हूं खुद.. अर्ध ध र्म मैंने धर्म में बदल लिया है।

खाना-पीना नहीं ले रही मां.. मात्र सिरींज से कुछ ग्लूकोज सेलाइन में दे रहा हूं मां को.. कैंसरित सूखी काया है मां। कर्मयुग, सतयुग मां को एक कलयुग ने ग्रस लिया.. कलयुग ने पक्षाघात दिया, दी हड्डी टूटन, दिया कैंसर और पहुंचाया मौत के कगार पर।

कर्मयुग मां कैंसरित सूखी काया पर, उसके चेहरे पर आभा है, दिव्याभा है उसके सत की, उसके आज जीवन की। सारी रात मैं जगा हूं मां के चरण तले, मां की छाया तले, मां के अव्यक्त आशीषों तले। ब्राह्म बेला है.. मैं सबसे कहता हूं-"आइए सन्ध या करें"। और उस ब्राह्म बेला में ब्रह्म अर्चना के स्वर उठते हैं। **ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय** ..... से एक प्रवहण चलता है बाह्य में, और एक प्रवहण चलता है मां में.. मां के तन की ओषजन घटती जाती है.. मां के तन की तरंगें बढ़ती जाती हैं.. द्विगुणित, त्रिगुणित और अनन्तगुणित.. सन्ध्या समाप्त होती है-

द्यौः शान्तिः अन्तरिक्ष शान्तिः शान्ति पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिः विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व॰ शान्तिः शान्तिरेव शान्ति सामा शान्तिरेधि। शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ और अन्तिम शान्ति के साथ मां अन्तिम प्रश्वास लेती है.. सद्गति प्राप्त करती है।

मां की सद्गति न देखी होती मैंने तो जीवन भर सद्गति को पहचान न पाया होता। मां का आशीष है मेरा जीवन! मां को भजन सना, वेदमन्त्र सना, कर्म सना, सतयुग सना एक प्रणाम है मेरा जीवन!

सद्गति विषयक एक किंवदन्ती है कि मरते समय परमात्मा का नाम मुख से निकले.. इस किंवदन्ती का वैज्ञानिक आध ाार यही है कि क्रमशः क्षीण होती भौतिकता का आध्यात्मिक उपयोग कर लिया जाए। इस किंवदन्ती का घटिया रूप यह है कि अपने पुत्रों का नाम ब्रह्म से जोड़ रख लिया जाए।

हकीकत राय जी सकता था जीवन.. पर साक्षर था वह। साक्षर वह होता है जो पढ़ता है उसे ही जीता है। बालक हकीकत राय सत्य पर फिदा था। बेगुनाह था वह.. उसने गुनहगार होना मंजूर नहीं किया.. अपने न्याय शब्द वापस नहीं लिए.. सच्चा तटस्थ था वह.. उसकी बुद्धि की आत्मा जागृत थी। **तटस्थता बुद्धि की आत्मा है।** उसे उसके मुसलमान मित्रों ने कहा था "तुम्हारे देवी देवता मस्जिद में झाड़ू लगाते हैं".. तो उसने कहा था कि "यही बात मैं तुम्हारे देवी देवताओं के बारे में भी कह सकता हूं".. और मौलवी व्यवस्था जो अन्धी थी न्यायच्युत हो गई.. उसे मृत्युदण्ड मिला। अपने माता-पिता, अपने समाज के न्यायच्युत हो जाने पर भी सब के उसे जीवित रखने की भावना के कारण न्यायच्युत होने पर भी हकीकत राय ने हकीकत न्याय से च्युत होना स्वीकार नहीं किया.. वह अच्युत रहा.. और उसने मृत्यु को जीत लिया। हकीकत राय को मेरे जीवन के प्रणाम!

प्रणाम **सुकरात** को! जिसने 'स्व-न्याय' हेतु ५०१ न्यायाधीशों को इतिहास मुर्दा कर दिया। सत्तर वर्ष की उम्र में सुकरात पर आरोप लगाए गए कि (१) वह अपने देवताओं में विश्वास करता है, (२) वह एथेंस के देवताओं को नहीं मानता है, (३) उसने उन्मुक्त चर्चाओं से एथेंस के युवकों का चरित्र बिगाड़ दिया है। उसका मुकद्दमा सुनने ५०१ न्यायाधीश बैठे.. तीन न्यायाधीशों ने उस पर आरोप लगाए.. और सुझाव दिया कि उसे मृत्युदण्ड दिया जाए.. सुकरात ने सफाई पेश की-

सुकरात के सामने तीन रास्ते रखे गए। (१) वह एथेंस छोड़कर चला जाए, (२) वह अपनी बुद्धि की अभिव्यक्ति जुबान के माध्यम से न करे, विचार अभिव्यक्त न करे, (३) उपरोक्त दो न करने पर मृत्युदण्ड स्वीकार कर ले। उसने प्रथम दो को स्व-न्याय के विपरीत पाया.. और अस्वीकार किया.. उसे मृत्युदण्ड दिया गया। उसने ५०१ न्यायाधीशों से कहां-

"हे न्याय करने वालों! तुम्हें भी मृत्यु को साहस के साथ स्वीकार करना चाहिए और समझना चाहिए कि ***एक भले पुरुष पर न तो जीवन में, और न मृत्यु के बाद ही कोई आपत्ति आ सकती है..*** देव उसके भाग्य की ओर से उदास नहीं होते। जो सजा आज मुझे दी गई है वह अनायास नहीं है, मेरी आस्था है कि मेरे लिए अब मरना और क्लेश से उन्मुक्त होना ही अच्छा है.. यही कारण है कि मेरे मार्ग प्रदर्शक चिह्न ने मुझे बच निकलने की प्रेरणा नहीं की। मैं न आरोप लगाने वालों पर कुपित हूं, न दोषी ठहराने वालों पर रुष्ट हूं। अब समय आ गया है कि हम यहां से चल दें.. मैं मरने के लिए, और तुम जीने के लिए.. परन्तु यह परमात्मा ही जानता है कि जीवन और मृत्यु में कौन श्रेष्ठ है।"

जिस दिन सुकरात को जहर देना था प्रातः उसके कुछ शिष्य उससे मिलने गए... वह खर्राटे लेता निद्रा मग्न था। नियत समय कर्मचारी विष का प्याला लाया.. सुकरात ने पूछा "क्या इसमें से थोड़ा अर्घ्य देवता को दे सकता हूं?" कर्मचारी ने कहां "नहीं, यह तुम्हारे लिए सटीक मात्रा में तैयार किया गया है।" सुकरात ने विष पी लिया और सद्गति अमर हो गया।

एक भले पुरुष पर न तो जीवन में, और न मृत्यु के बाद ही कोई आपत्ति आ सकती है यह सद्गति भावना है, जो बड़ी ऊंचाइयों पर मिलती है। एक्विनास का चिन्तन मानों मृत्यु दर्शन दर्शाता है। ***"परिवर्तन अन्तिम परिवर्तक तथा कारण की ओर इंगन करता है।"*** अनित्य तथा अस्थिर की नींव नित्य और स्थिर सत्ता पर होती है। अनित्य तन क्षरण के क्रमिक चरण साधना चरणों में परिवर्तित होते हैं। यही तो **"मृत्योर्मा अमृतं गमय"** है। मृत्यु नहीं अमृत वरण करना ही सद्गति है।

नरसिंह चितामणि केळकर (महाराष्ट्र) ने एक सायं चाय का एक प्याला पिया.. फिर मेज पर बैठकर एक कविता लिखी.. कविता का भाव था-

"प्रभो! अब मैं पूर्णतः तैयार हूं,
मुझे अपनी गोद में सुला लो।"

यह लिखकर वे लेट गए.. यह लेटना उनकी चिर निद्रा थी.. उनकी चिरनिद्रा सद्गति मृत्यु थी। सद्गति मृत्यु **दयानन्द** ने भी प्राप्त की थी। दयानन्द को सत्रह बार विष दिया गया था। अन्तिम बार विष घातक सिद्ध हुआ। उनका सारा शरीर भीतर बाहर दर्दीले फफोलों से भर गया था.. फिर भी वे शान्त थे। मृत्यु दिवस उनसे लाला जीवनदास ने पूछा-"आप कहां हैं?" दयानन्द का उत्तर था "ईश्वरेच्छा में"।

दयानन्द ने मृत्यु पूर्व सारे दरवाजे, सारी खिड़कियां खुलवा दीं.. उनके तखत के सामने ही दरवाजा था। अपने सामने से सभी को हटवा दिया.. उन्होंने ऊपर देखा, चारों ओर देखा.. वेद मन्त्रों का पाठ किया.. ईश्वर प्रार्थना की.. गायत्री मन्त्र उच्चारण किया.. गहन साधनावस्था में गए.. साधनावस्था से वापस आए.. आंखे खोलीं, ओ३म् का उच्चारण किया और कहां...

"हे सर्वशक्तिमान ईश्वर
तेरी यही इच्छा है
तेरी यही इच्छा है
तेरी इच्छा पूर्ण हो!"

करवट ली, श्वांस रोककर अन्तिम प्रश्वास लेकर तन से मुक्त हो गए। गुरुदत्त नामक नास्तिक उस पल आस्तिक हो गया।

सहज स्वाभाविक ज्ञान

जीव शत प्रतिशत स्वतन्त्र है कर्म करने में। जीवन में जीव दो स्थल परतन्त्र है-जन्म और मृत्यु में। जन्म-मरण ब्रह्म के हाथ है.. जन्म-मरण मध्य का क्षेत्र मानव के हाथ है.. लेकिन मरण-जन्म के मध्य का क्षेत्र ब्रह्म के हाथ है। माताश्रित बालक भोग योनि होता है.. आरम्भ में बालक तृतीय पुरुष में बात करता है.. वह सहज स्वाभाविक ज्ञान का मालिक होता है.. कई बार अत्यन्त बौद्धिक बातें करता है।

शुचि बहुत छोटी थी.. बहुत बातें करती थी। हम सब बरेली में थे.. मैंने मजाक में शुचि से कहां- "तेरे को यहीं छोड़ देंगे, बहुत शैतानी करती है।" शुचि ने भोलेपन से पूछा "आप हमारे पापा हो न?" मैंने कहां "हैं".. उसने फिर पूछा "आप हमें प्यार करते हो न?" मैंने कहां "करते हैं बेटे".. उसने निष्कर्ष दिया "फिर हमें कैसे छोड़ दोगे?"

जगद्गुरु कृपालुदास, विनोबाभावे, आनन्दस्वामी, सत्यानन्द, आत्मानन्द, रजनीश भगवान (?) आदि-आदि हजारों जाने मानों से तर्क में न हारनेवाला मैं शुचि की सहज तर्कणा से हार गया।

करीब तीन वर्षीय **नमित** और मैं सड़क पर जा रहे हैं.. नमित पैर रगड़-रगड़ कर चल रहा है तथा चप्पल से आवाज हो रही है.. मैं उसे मना करता हूं "बेटे हलके पांव चलना चाहिए वैसे ही जैसे कि बिल्ली चलती है, बिल्कुल आवाज नहीं होती।" नमित इसका सहज उत्तर देता है "बिल्ली कोई चप्पल थोड़े ही पहनती है?"

तृतीय पुरुष से प्रथम पुरुष में आते ही मानव स्वतन्त्रता का उपयोग करने लगता है। शायद यही कारण है कि **फिख्ते** ने अपने लड़के के तृतीय पुरुष से प्रथम पुरुष पर उतरते ही पार्टी दी थी। मानव जीवन की सार्थकता उसी में है कि वह जीवन के अन्तिम पड़ाव पूर्व पुनः तृतीय पुरुष में पहुंच जाए तथा कर्मस्वतन्त्र भी रहे.. यही अवस्था परिष्कृत बचपन जीना है, जो कि सद्गति पूर्व अवस्था है.. इसके पश्चात् है सद्गति अवस्था।

प्रयाणकाले मनसाऽचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव।
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् सतं परं पुरुषमुपैति दिव्यम्।। (गीता८/१०)

प्रयाण काल में, अचल मन (अचंचल मन युक्त), भक्ति से ओतप्रोत (स्व पवित्रतम अस्तित्व ब्रह्म कृपा याचक), योग बल से (योग साधनाओं के सात्विक ब्रह्मयुक्तता उपयोग से), प्राणों को त्रिनाड़ी संयम भृकुटि पर संयमित करके इड़ा, पिंगला, सुषुम्ण नाड़ी सिद्ध दिव्य वह उस परमपुरुष को प्राप्त करता है।

सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च।
मूर्ध्न्याध्यायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणम्।। (गीता८/१२)

प्राण त्यागने के पूर्व समस्त नौ द्वारों पर संयम करके मन हृदय को संयुक्त निरुद्ध करके, आठ चक्र शान्त मूर्धा (सहस्रार) चक्र में प्राण स्थापित सर्वोच्च योगाभ्यास का आधारण करना चाहिए।

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्।। (गीता८/१३)

ओ३म् इस एक अक्षर (अ- क्षणं क्षणं परिवर्तनशीलम्, अक्ष-रमणम् एकत्वम्-सर्व इन्द्रिय एकत्व रमणम्) में व्यापकतम यथार्थ धारण एवं लवलीनता (सतत प्रवहण) स्थिति है जिसकी वह यह देह द्रुततम गति से तजकर परम हो अव्याहत गति संकल्प शरीर हो प्राप्त करता है.. यह सद्गति स्वरूप है।

"मृत्यु महोत्सव"

मृत्यु सामाजिक सत्य नहीं सामाजिक अहसास है, पर परिशुद्ध एकाकी सत्य है। मृत्यु इतना एकाकी सत्य है कि संसार में सारी मृत्युओं को समान समझा जाने पर भी हर मृत्यु एक-एक अलग-अलग ही होती है.. कोई भी दो व्यक्ति समान मृत्यु प्राप्त नहीं करते.. यहां तक कि परमगति प्राप्त दो व्यक्ति भी समान (शत-प्रतिशत) एक मृत्यु वरण नहीं कर सकते हैं कि परम गति मानव क्षेत्र नहीं ब्रह्म क्षेत्र है। सर्वदेशीय सर्वज्ञता ब्रह्म क्षेत्र है, एकदेशीय सर्वज्ञता मानव सर्वोच्च सीमा है।

है जन्म बहु है मृत्यु बहु,
बड़ी ही दिव्य ये बात है।
किसी को सर्वज्ञ ज्ञात है,
किसी को अज्ञ ज्ञात है।।

वाल्मीकीय रामायण में राम द्वारा तथा अयोध्यावासीयों द्वारा मृत्युवरण का चित्रण जो कालांतर में धुंधला गया प्रतीत होता है एक मृत्यु महोत्सव की ओर इंगन है। मूल संस्कृत वाल्मीकीय रामायण मुझे उपलब्ध न होने के कारण मैं मात्र अनुवाद इंगन

से अंशतः लिया हुआ वह मृत्यु महोत्सव यहां **कल्पित** कर रहा हूं।

काल का राम से एकान्त में संवाद हुआ.. एकान्त संरक्षक लक्ष्मण था.. काल ने संवाद में कहा "पूर्वावस्था में हिरण्यगर्भ की उत्पत्ति के समय मैं अव्यक्त द्वारा ब्रह्म से व्यक्त हुआ सर्व संहारकारी हूं".. राम ने कहा "तीन लोक प्रयोजन की सिद्धि हेतु की पूर्ति हुई है, अतः अब मैं जहां से आया था वहीं चलूंगा".. काल-राम के संवाद का संरक्षक लक्ष्मण था.. दुर्वासा के अचानक आ जाने तथा तत्काल राम को सूचना देने के हठ अन्यथा सभी को शापग्रस्त कर देने की बात के कारण लक्ष्मण ने एकान्त भंग किया.. प्रतिज्ञा भंग के कारण राम ने 'लक्ष्मण-वध' के अन्तर्गत सभासदों की राय से लक्ष्मण त्याग किया.. लक्ष्मण तत्काल वहां से चले गए और बिना घर गए "सरयू के किनारे जाकर आचमन किया और हाथ जोड़कर सम्पूर्ण इन्द्रियों को वश में करके प्राणायाम को सहज सरल थमन दिया।"

इसके पश्चात् राम ने भरत के राज्यशासन हेतु मना करने पर लव तथा कुश को श्रावस्ती तथा कुशावती नगरियों में सुस्थापित किया.. राम आहूत शत्रुघ्न ने अपने पुत्रों सुबाहु और शत्रुघाती को मथुरा और विदिशा में सुप्रस्थापित किया.. सुग्रीव अंगद का राज्याभिषेक कर भरत शत्रुघ्न के समान राम सानिध्य में आ गया.. राम ने जाम्बवान, बिभीषण, हनुमान, मैन्द एवं द्विविद को जीवित रहने के आदेश दिए.. और दूसरे दिन प्रातः मृत्यु महोत्सव राम के आधिपत्य में प्रारम्भ हुआ।

"चतुर्वेद समन्वित अग्निहोत्र प्रज्ज्वलित अग्नि तथा वाजपेय यज्ञ (दान, पूजा, संगतिकरण) मेरे निकटस्थ हैं" राम के इस कथन के साथ महाप्रयाण पर वशिष्ठ (जिसका वास ब्रह्म में अतिशय है) ने समय ऋतु-सन्धि अनुष्ठान किया.. महोत्सव गमनित राम सूक्ष्म शरीर पवित्र संस्कारावरणित, संकल्पित, यशबलमय हस्तयुक्त, परब्रह्म प्रतिपादक वेदमन्त्रों का उच्चारण करते, मन में आरे के समान ऋक्, साम, यजु, अथर्व प्रतिष्ठित कर सहज गतित लौकिकता रहितावस्था में दीप्तिमय थे.. श्रीदेवी, भू-देवी, संहृति देवी उनके सानिध्य थीं.. वे शौर्य की प्रतिमा थे.. नैष्ठिक ब्राह्मणवत वेदज्ञ थे.. गायत्री, ओंकार, वषट्कार त्रिभक्त थे वे।

इनके साथ सम्पूर्ण अयोध्या समुदाय भरत, शत्रुघ्न सहित हृष्टपुष्ट, प्रसन्न, गुणमुग्ध, अपापविद्ध, महान हर्षित, एकाग्रचित्त, भक्तिमय चल रहा था.. कोई भी दीन दुःखी लज्जित नहीं था.. सभी में महान हर्ष था.. सभी भक्तिभाव से पूर्ण थे।

सभी भंवरयुक्त सरयू के किनारे उत्तम स्थान पर आए.. वहां तैतीस देवताओं का सामंजस्यमय वास था.. आकाश सौम्य दिव्य तेज व्याप्त था। व्यक्तित्व स्व-तेज दीप्त थे.. उनकी दीप्ति आभा विस्तारित थी.. पवित्र, सुगन्धित, सुखदायिनी समीर प्रवाहित थी.. इस स्थिति जरारहित, अचिन्त्य, अविनाशी स्वरूप राम ने अपने बन्धुओं समेत वैष्णव तेज में प्रवेश किया एवं उपस्थित समुदाय ने सन्तानक लोक में प्रवेश किया।

महात्मा गांधी ने नाथूराम गोड़से द्वारा अचानक गोलीयां मारने पर भी "हे राम" कहां और प्राण त्याग दिए। **विनोबा भावे** ने अपने अन्तिम दिनों में अन्न, जल, दवा त्याग दिया और ध्यान उपासनामई मृत्यु का इच्छावरण किया। **इंदिरा गांधी** को बेअन्तसिंह ने स्टेनगन की बौछार द्वारा अन्त दिया और इंदिरा गांधी के अन्तिम शब्द थे "अरे रे...! यह क्या करते हो?" मृत्यु के समय इंदिरा गांधी आश्चर्यभीत थीं.. इंदिरा मृत्यु असद्गति मृत्यु थी।

यीशु की मृत्यु का वर्णन इस प्रकार है- तब हातीम के सिपाहियों नें यीशु को किले में ले जाकर सारी पलटन उसके चहुं ओर इकट्ठी की.. उसके कपड़े उतारकर उसे किरमिजी (बैंगनी) बाना पहनाया.. कांटों का मुकुट गूंथकर उसके सिर पर रखा.. . उसके दाहिने हाथ में सरकंडा दिया.. उसके आगे घुटने टेककर उसके टट्टे उड़ाने लगे कि "हे यहूदियों के राजा नमस्कार!" उस पर थूका और वही सरकंडा लेकर उसके सिर पर मारने लगे.. तब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया और पर्ची ड़ालकर उसके कपड़े बांट लिए.. उसका दोषपत्र उसके सिर पर चिपकाया कि "यह यहूदियों का राजा है".. और कहते थे कि "हे मन्दिर के ढ़ानेवाले और तीन दिन में बनानेवाले अपने आप को बचा! यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो क्रूस पर से उतर आ! इसने औरों को बचाया और अपने को नहीं बचा सकता.. यह तो इस्राइल का राजा है... उसने परमेश्वर पर भरोसा रखा है.. यदि वह इसको चाहता है तो अब इसे छुड़ा ले! क्योंकि इसने कहा था मैं परमेश्वर का पुत्र हूं।"

दोपहर से लेकर तीसरे प्रहर तक उस सारे देश अन्धेरा छाया रहा। तीसरे प्रहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द पुकारकर कहा "एली एली लमा शबक्तनी?" हे मेरे परमेश्वर! हे मेरे परमेश्वर! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?.. (खड़े लोगों में से) एक तुरन्त दौड़ा और स्पंज लेकर सिरके में डुबोया तथा सरकंडे पर रखकर उसे चुसाया। औरों ने कहा "रह जाओ! देखें एलियाह उसे बचाने आता है कि नहीं।" तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिए।

"उसका जीवन निषेधात्मक था"

गौतम बुद्ध की मृत्यु पूर्व का विवरण इस प्रकार है- बुद्ध भिक्षुओं को स्त्रियों से दूर ही रखना चाहता था। उसकी मृत्यु से पहले आनन्द ने उससे पूछा "भगवन! स्त्रियों के सम्बन्ध में हम कैसा व्यवहार करें?" बुद्ध ने कहा "उनसे दूर रहो!" आनन्द ने कहा "यदि कभी निकट हो जाए तो क्या करें?" बुद्ध ने कहा "उनसे बातचीत मत करो!" आनन्द ने फिर पूछा "यदि इस स्थिति

में पहले स्त्री कुछ कहना आरम्भ कर दे तो?" बुद्ध ने कहा "सावधान रहो!"

बुद्ध की मृत्यु अस्सी वर्ष में हुई.. उस समय संघ में पांच सौ भिक्षु शामिल हो चुके थे। अन्तिम शब्द जो बुद्ध ने अपने शिष्यों से कहे ये थे- "भिक्षुओं मैं फिर तुम्हें याद कराता हूं कि सारे मिश्रित पदार्थ टूटते हैं.. सावधान रहो!"

गौतम बुद्ध निषेध में पला था.. उसका जीवन निषेधात्मक था.. उसके सन्देश निषेधात्मक हैं- 'हिंसा न करो', 'झूठ न बोलो', 'चोरी न करो', 'व्यभिचार न करो', 'मादक द्रव्य प्रयोग न करो'.. उसके निर्वाण के प्रति शब्द भी निषेधात्मक हैं। सावत्थी के पास एक बार बुद्ध ने भिक्षुओं से कहा था- "भिक्षुओं वहां पृथिवी, जल, वायु, तेज, अनन्त आकाश नहीं है, न वहां अनन्त चेतना है, न शून्य है, न प्रत्यक्ष, न अप्रत्यक्ष का लोक है, वहां न लोक है, न परलोक है, न सूर्य है, न चन्द्र है.. भिक्षुओं उस अवस्था को मैं आना, जाना, खड़ा होना, गिरना, उठना नहीं कहता.. न उसमें स्थिरता, न चंचलता है, न कोई उसका आधार है.. वह अवस्था दुःख के अन्त का अन्त है।" यह उसकी निर्वाण धारणा है। गौतम बुद्ध के अन्तिम शब्द भी निषेधात्मक थे -"सावधान रहो"।

सद्गति असम्भव प्रत्यय नहीं है.. प्राप्तव्य प्रत्यय है.. कई मृत्युएं इसका साक्षात् प्रमाण हैं। **रामप्रसाद बिस्मिल** अपने माता-पिता के आर्य सिद्धान्तों से प्रभावित 'सादा जीवन उच्च विचार' से प्रभावित उनके नियमों का अक्षरशः पालन करते नियमित पूजा अर्चना करना, तख्त पर सोना, सात्विक भोजन करना, सत्यार्थ प्रकाश का नियमित स्वाध्याय करना जीवन में उतार चुके थे। "उपजत उपजत अनत अनत छविलय हो" वत उन पर अनत प्रभाव था। 'काकोरी काण्ड' के पश्चात् न्यायाधीश के निर्णयानुसार जब १६ दिसंबर १६२७ को गोरखपुर जेल से जेलर ने 'फांसी का फरमान' निकाला और पढ़ा 'प्राण निकल जाने तक गले में फन्दा ड़ालकर लटका दिया जाए' तब यह वाक्य सुनकर पंडित रामप्रसाद बिस्मिल ने एक ठहका लगाया। हंसी के स्वर फांसी का फन्दा गले में डाला और कहा.....

"मालिक तेरी रज़ा रहे,
ओर तू ही तू रहे।
बाकी न मैं रहूं,
न मेरी आरजू रहे।
जब तक कि तन में जान,
जिगर में लहू रहे।
तेरा ही जिक्र रहे,
तेरी ही जुस्तजू रहे।"

इसके साथ ही उद्घोष- "मैं ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूं।" और फिर 'भारत माता की जय' तथा 'वन्दे मातरम्' कहते वे फांसी के तख्ते से झूल गए। उस समय उनके मुखपर अद्भुत तेज तथा ओज था। जिया जीवन तथा जीवन प्रणाली से मृत्यु अछूती नहीं रहती है। मृत्यु जीवन प्रणाली का सशक्त चिह्न दर्शाती है। जीवन मोह में पड़े हुए व्यक्ति को मृत्यु की जबरदस्ती झेलनी पड़ती है। जीवनमुक्त व्यक्ति की मृत्यु एक सहज मृत्यु होती है।

"परिवर्तन में अपरिवर्तन का सातत्य"

मृत्यु की अवस्था का **गीता चिन्तन** वैज्ञानिक है। इस चिन्तन की आत्मा है "सातत्य" शब्द.. परिवर्तन में अपरिवर्तन का सातत्य.. इस सातत्य का आधार वेद और कठोपनिषद है।

जन्म हुआ अभी अभी प्राण लिए, दिन रात जाने, मातृवत्सल हो दुग्धपान किया, युवा हुआ, बुढ़ापा आया, बटोही अविषादित हुआ।" (ऋग्वेद १०/३२/८) यही भावना वेद में एक और स्थल है। "तू ही शिशु, तू ही कुमार, तू ही युवा, तू ही प्रौढ, तू ही लाठी टेकता वृद्ध है।" यह एक सशक्त सातत्य तर्क है। इस ज्ञान का तथा कठोपनिषद् के १/१८-१६ का समन्वय कृष्ण गीता में दिए मृत्यु दर्शन में करते हैं। यह मृत्यु पर सशक्त चित्रण है। अजन्म, अमरण, अकार्य, अकारण, अज, नित्य, शाश्वत, पुराण शरीर में अहत है। मरने मारनेवाले नहीं जानते मरने मारने से परे को। (कठोपनिषद् १/१८/१-६)

कृष्ण के चिन्तन की बानगी इस प्रकार है। कौमार्य, यौवन, जरा देही एक है। धीर अशोक है। (२/१३) जीर्ण वस्त्र परिवर्तन तनवत शरीर वस्त्र परिवर्तन आत्मा है। (२/१३) जन्मज का मरण तय है, मरणज का जन्म तय है.. जन्म मरण जन्म चक्र अपरिहार्य है.. अशोक रहो। (२/२७) आदि व्यक्त, निधन व्यक्त, मध्य व्यक्त.. क्या शोक? (२/२८) कृष्ण के अनुसार मृत्यु तो कोई घटना ही नहीं है।

जीर्ण वस्त्र परिवर्तन उपमा वैज्ञानिक आधार है। जिस प्रकार पहनते पहनते वस्त्र घिसता-घिसता फटने की अवस्था में त्याग दिया जाता है, ठीक उसी प्रकार यह तन वस्त्र पहनते-पहनते घिसता-घिसता इस स्थिति आ पहुंचता है कि ओषजन तन खपत में

कोषिकाओं के कमजोर पड़ जाने से तरंग आवृत्ति के समकरण शक्ति के क्षीण होने के कारण, चैतन्यता के स्वनियन्त्रण का स्व अनियन्त्रण में परिवर्तन के कारण यह जीर्ण-शीर्ण अवस्था में आ पहुंचता है। और इसके परिवर्तन की आवश्यकता आ पड़ती है। कृष्ण के वासांसि जीर्णानि उपमा का यह वैज्ञानिक आधार है।

"देह देही चिन्तन"

मृत्यु एक महासत्य है, सर्वसत्य है। मानव मृत्यु की संकीर्ण अवस्था तथा परिचित मृत्यु की ओर संकीर्ण अवस्था तथा रिश्ते अवस्था की संकीर्णतम स्थिति इस सत्य को विकृततर करती दुःखदाई स्थिति का निर्माण करती है। मृत्यु तो इतना सा सच है कि देही देह छोड़ देता है.. देही की मृत्यु नहीं होती, न हो ही सकती है.. होती तो जगत् प्रवाह रुक जाता.. वेद, आरण्यक, ब्राह्मण, उपनिषद्, दर्शन, गीता, श्रुति, स्मृति, पुराण, बौद्ध, ईसा, हजरत आदि काल से गुजरता जगत प्रवाह सतत है कि मानव प्रवाह सतत है.. प्राणी प्रवाह सतत है कि देही सतत है.. देह देही विलगाव ही मृत्यु है.. देह देही युजन ही जन्म है.. मानव तन के साथ ही वायरस जीवाणु जीवित व्यवस्थाएं भी देह देही सम्बन्ध जी रही हैं। वायरस जैसे सूक्ष्म प्राणी से लेकर कीड़े, मकोड़े, टिड्डि, दीमक, चींटी, हाथी, घोडा, गाय, भैंसादि हर प्राणी देही से देह का विलगाव मृत्यु है। इतनी मृत्युएं हरपल हो रही हैं इस स्थिति भी मृत्युशोक कोई मूर्ख ही, अज्ञानी ही, अविवेकी ही करेगा।

यह देही सदा सब में अवध्य है, अतः सारे प्राणीयों में यह सत्य लागू है.. फिर कैसा मृत्युशोक? (गीता २/३०)

देह देही चिन्तन को गौतम बुद्ध तथागत क्षण तक खींच कर ले जाता है और क्षणिकवाद, क्षण-क्षण मृत्युवाद को जन्म देता है। क्षण-क्षण मृत्युवाद चिन्तन का आधार सत्य, तू ही शिशु, कुमार, युवा, प्रौढ़, लाठी टेकता वृद्ध है। शब्द बदलने से अर्थ नहीं बदलता। इसे ही "एक नदी में मानव दो बार नहा नहीं सकता" कहा गया है। इस आधार पर चिन्तन करने में मृत्यु सत्य और अधिक सरल हो जाता है।

'तथागत' बुद्ध ने स्वयं को अपना नाम दिया था.. 'तथागत' का अर्थ है "तथ+आगत" "वैसे आया" या "वैसे गया" या "जैसे आया वैसे गया" देह देही के सम्बन्ध का विश्लेषण है। इससे थोड़ा ऊंचा शब्द है "यथागत" जिसका अर्थ है आज हूं, मात्र हूं।

गौतम बुद्ध के विपरीत चिन्तन है "कायर सौ बार मरता है"। गौतम बुद्ध का मानव "हर पल मरता है"। दृष्टिकोण बदल जाने से यहां सच अलग-अलग लगते हैं। "कायर सौ बार मरता है" कायरों से यह दुनियां भरी पड़ी है। एक दुर्घटना हुई जिसका स्वरूप इस प्रकार का था। एक बड़े गहरे गड्ढे में एक दीवार में कांक्रीटिंग के लिए पहुंच पथ जो आठ मीटर उपर था पर चार रेजाएं जा रही थीं.. किनारे पांच फुट चौड़ा सव्वा फुट ऊंचा गीला कांक्रीट पड़ा है.. एक डम्पर उलटा चलता इस कांक्रीट को रौदता, पहुंचपथ तोड़ता, गड्ढे में जा गिरा.. चारों रेजाएं नीचे गिरीं.. तीन की मृत्यु हुई, एक को चोट लगी। इसके बाद मरण खरीद-फरोख्त, झूठ मूठ का भयानक घिनौना सिलसिला चल निकला- डयूटि पर रहते इन्जीनियरों ने छुट्टी पर होने की घोषणा की.. इस कार्यस्थल के इन्जीनियरों सुपरवाइजरों ने दूसरे कार्यस्थल होने की शरण ली.. ठेकेदारों द्वारा महाप्रबंधक सुरक्षा तक के आदमी, फैक्टरी इन्स्पेक्टर, पोस्टमार्टम डॉक्टर, गवाह, पोलिसादि खरीदे गए जैसे लगे.. सारे गवाहों ने आधे सच्चे आधे झूठे बयान दिए।..सारे कुछ में सच का और आदमी का कचूमर निकल गया... उफ् मौत दुर्घटना! मौत कितना भयानक सच है?

धन कायर, यश कायर, सम्पत्ति कायर, मृत्यु कायरों से अत्यधिक बड़े-बड़े कायर हैं। क्यों कायर हैं ये देह के लिए? क्योंकि इन्हें देही का अता-पता भी नहीं है।

"और भी उजली कीन्ही चादरिया"

तथागत तथा यथागत **'मृत्यु अभय'** व्यक्ति का नाम है। गौतम बुद्ध कहते हैं जिस दिन तथागत को पूर्ण बोध होता है, उस दिन से देह के अन्तिम अन्त के दिन तक तथागत जो कुछ कहता है वह निश्चय ही सच होता है, सत्य के विपरीत नहीं होता। इसीलिए वह तथागत कहलाता है।

तथागत का नाम है ज्यों की त्यों धर दीनी चादरिया। **कबीर** का कहना है-

झीनी झीनी रे बीनी चादरिया

कैसा ताना कैसी भरनी, कौन तार से बीनी चादरिया
इंगला पिंगला ताना भरना, सुषुम्णा तार से बीनी चादरिया
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी, ओढ़ के मैली कीन्ही चादरिया
दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी चादरिया

तथागत हो गया था कबीर। यथागत इसी भजन को इस प्रकार कहेगा

झीनी झीनी रे बीनी चादरिया

कैसा ताना कैसी भरनी, कौन तार से बीनी चादरिया
ज्ञान का ताना कर्म का बाना, आनन्द तार से बीनी चादरिया
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी, ओढ़ के खूब ये जीनी चादरिया
दास यथागत जतन से जीनी, और भी उजली कीन्ही चादरिया

यथागत ब्रह्मित, ऋत्विज, पुरोहित मानव का नाम है.. ब्रह्मित को ब्रह्म से चादर उजली करना आता है.. देही से दैदीप्यमान हो जाए देह यह यथागत स्थिति है... और देही दैदीप्यमान हो जाए ब्रह्म से यह **'देवाय हविषा विधेम'** अवस्था है.. देवाय हविषा विधेम स्वाहा! मृत्यु शब्द यहां लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई, गहराई रहित रह जाता है।

देही को जानते ही आदमी वीर हो जाता है.. धन, पद, यश कायरताएं छोड़ देता है.. वह मरण छोड़ देता है.. जैसा उसका कर्म होता है, वैसा ही वह कहता है तथा जैसा उसका कथन होता है वैसा वह कर्म करता है.. वह यथावत कहता, देखता, करता है।

"ज्ञान का ताना, कर्म का बाना"

"जीवन सच बड़ा ही सरल तत्व है यदि देही ज्ञात है। एक कृष्ण दिवस, एक श्वेत दिवस.. दोनों जानने योग्य चक्रीय हैं। अधिपति जन्मते ही, प्रकटते ही आत्म ज्योति से काले दिन छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। न यह मैं ताना जानता हूं, न मैं बाना जानता हूं.. संसार संग्राम है.. यथावत जीवन बाना बुनता है, आदमी नहीं जानता? कौन पुत्र पिता को दे सकता है उपदेश? देही ताने को जानता है, देही बाने को जानता है.. वह ऋतु सन्धियों के ऋत का ज्ञाता (ऋत्विज्) है.. संरक्षक देही ही 'पर' 'अपर' देखता भालता सब जानता है.. यह आत्म (देही) श्रेष्ठ 'होता' है.. इसे देखो, मरणधर्मा में यह अमृत है.. अमृत देही तन में जन्मता स्थित है और तनमय यह महिमामण्डित है। ज्ञान अनुभव के लिए ध्रुव ज्योति मन भी तन निहित है, सर्वाधिक गतिशील है.. इन्द्रिय मनयुक्त होकर, सज्ञान होकर महासंकल्प को गतित करता है।" (ऋग्वेद ६/६/१-५) यह यथागत है, और भी उजली कीन्ही चादरिया है। ज्ञान का ताना, कर्म का बाना है इसमें.. यथागत देह को भी ऊंचाइयों की ओर खींच ले जाता है। यह अति आत्मिक योग है, योग की सबसे ऊर्ध्व भूमि है।

'मृत्युभय' और 'मृत्यु का उपसर्ग'

"मृत्युभय" सबसे बड़ा भय है। हिन्दुस्थान टाइम्स अंग्रेजी पेपर में १५/२/१९८१ के मेलाइस (Malice) स्तम्भ में खुशवन्तसिंह ने **"मृत्युभय"** पर अपनी व्यापक राय प्रस्तुत की थी और लिखा था "सारे लोगों के लिए मृत्यु एक दुःखद, भयंकर, कष्टकर होती है।" उन्होने मृत्युभय के कई उदाहरण देते लिखा था कि "ये उदाहरण केवल यह सिद्ध करते हैं कि लोगों के जीवन पर पूर्ण विराम लगने के तरीके अलग-अलग हैं और इसे लोगों के ज्ञान तथा धर्म से कुछ भी लेना देना नहीं है।"

मैंने खुशवंत सिंह की राय का पूर्ण खण्डन किया था.. खुशवंत सिंह ने वह खण्डन अक्षरशः छापा भी था.. उस पर कुछ राय प्रतिराय भी चली थी। यह आलेख लिखते समय अचानक मुझे उस पत्र की एक प्रति मिल गई.. मैं उसके कुछ अंश यहां दे रहा हूं- (पत्र अंग्रेजी में था)

महोदय,

हिन्दुस्थान टाइम्स के मेलाइस स्तम्भ में खुशवंत सिंह जन्म एवं मृत्यु के विषय में घटिया ज्ञान का प्रदर्शन करते हैं। ऐसा लगता है कि उन्होंने १९४४ में रूसी वैज्ञानिक व्ही.एस.गिरिशेचेको द्वारा 'बायो प्लाज्मा' की खोज के बारे में नहीं पढ़ा है. .. बायो प्लाज्मा की अवधारणा भारतीय दर्शन के कारण शरीर के निकट है। अमेरिका के डॉ. इवान स्टीवेन्सन भी इस राय के हैं कि मानव का पुनर्जन्म होता है। 'प्रोटो प्लाज्मा' के बदन में होने का वर्तमान सिद्धान्त तथा इसका मृत्यु पर प्रकृति के माध यम से विस्तरण या पुनर्वितरण भी पुनर्जन्म की स्थापना करता है.. चाहे यह सिद्धान्त गीता के विचार के समान नहीं है।

मैं आगे भी खुशवंत सिंह की राय से कि "ये उदाहरण सिर्फ यह बताते हैं कि लोगों की पूर्णविराम तक पहुंच अलग अलग है.. तथा इसे लोगों के धर्म और ज्ञान से कुछ लेना देना नहीं है" से असहमत हूं। ९० प्रतिशत से अधिक ज्ञान तथा धर्ममय व्यक्ति मृत्युभय से आज़ाद रहे। मैं कुछ के उदाहरण दे रहा हूं- (१) दयानन्द सरस्वती (१८२२-१८८३) को सत्रह बार जहर दिया गया. . सत्रहवीं बार फफोलेमय बदन होने पर भी "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" कह समाधि अवस्था में उन्होंने प्राण त्याग दिए। (२) **दीनबन्धु मित्र** के पूरे शरीर पर फोड़े बड़े बड़े हो गए थे.. उनसे मृत्युशय्या पर पूछा गया "आप कैसा अनुभव करते हैं?" उन्होंने कहा "मृत्यु मेरे चरणों पर झुककर मेरे जीवन की भीख मांग रही है.. एक भिखारी को खाली हाथ कैसे लौटाया जा सकता है?" (३) **नरसिंह चिन्तामणि** अपने अन्तिम शब्द "मैं शत-प्रतिशत तैयार हूं तुम्हारी गोदी के लिए" कह चिर निद्रा में सो गए। (४) **अरविन्द घोष** अपनी समाधि मृत्यु के विषय में प्रसिद्ध हैं। दूसरी ओर मैं सहमत हूं दस प्रतिशत आम लोग भी मृत्युभय से अलग के समान हैं। पर इससे यह सिद्ध नहीं होता कि सारे समान हैं।

सधन्यवाद

त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय

यह तब की बात है जब मैं १६ साल छोटा था अब (१६६८) से। मृत्यु आदमी को बड़ा करती है.. मृत्यु का चिन्तन भी आदमी को बड़ा करता है.. मृत्यु से बड़ा होना मृत के आगे उपसर्ग लगाना है.. उपसर्ग का अर्थ है जो अर्थ को उलट-पुलट कर रख दे.. उथल-पुथल कर दे पूरे के पूरे अर्थ को.. मृत के आगे अ लगा देने से बन गया अमृत, हो गया अर्थ उथल पुथल। मृत्यु का उपसर्ग जीवन में लग जाने से जीवन में उथल पुथल हो जाती है।

"स्व-स्वास्थ्य संस्थान"

"हाय मैं मरा", "हाय मैं मर गया"... कोई भी व्यक्ति इस संसार में ऐसा जीवित नहीं होगा जिसने अपने जीवन में ये शब्द नहीं कहे होंगे। स्पष्ट है हर व्यक्ति को मृत्यु के करीब का अनुभव है.. यह अनुभव होता क्यों है? मानव कई-कई प्रणालियों के समवाय का नाम है- पाचन संस्थान, श्वसन संस्थान, ओषजन ग्रहण संस्थान, कोषिका संस्थान, इन्द्रिय संस्थान, चालन संस्थानादि और इन सबसे जुड़ा 'स्व-स्वास्थ्य संस्थान'। "स्व-स्वास्थ्य संस्थान" स्वस्थता का आधारभूत आधार है। 'स्वस्थ' शब्द इसे सशक्त रूप में अभिव्यक्त करता है। 'स्व-स्थ' स्वयं में स्थित 'स्व-स्वास्थ्य संस्थान' ही 'स्वस्थ' कार्य करता है। कहीं पर यह स्वतः सहजतः कार्य करता है, तो कहीं यह ऐच्छिक कार्य करता है। पलक का किसी वस्तु के गिरने से स्वतः झपक जाना स्वैच्छिक स्व-स्वास्थ्य संस्थान का कार्य है। "हाय मैं मरा" अवस्था वह अवस्था है जिसमें कुछ पल के लिए मानव स्व-स्वास्थ्य संस्थान का भी अतिक्रमण हो जाता है और उभरता है एक भयानक चीख स्वर। चीख निकलती ही तभी है जब मानव स्व-स्वास्थ्य संस्थान का अतिक्रमण हो जाता है।

मृत्यु का भौतिक सच भी यही है कि तन में 'न मम' 'मम' पर हावी हो जाता है। 'न मम' निष्कासन या विजय स्व-स्वास्थ्य प्रणाली का काम है। हमें 'न मम' कांटा चुभा.. त्वचा की कई कोषिकाएं आहत हुईं.. समवाय व्यवस्था होने के कारण स्व स्थ विचलित हुआ.. उसने ढ़ेर सी रक्त कोषिका फौज कांटा चुभने के स्थान पर भेज दीं... एक महासंघर्ष आरम्भ हुआ। कांटा चुभने के स्थान पर मेरे पैर पर एक भारी सामान जोर से गिरा.. बहुत बड़े परिमाण में कोषिकाएं आहत हुईं.. 'स्व-स्थ' (आत्म) के पास तन एक सीमित साधन है.. स्व-स्वास्थ्य संस्थान सहसा के प्रबल के कारण युद्धक भेजने में बुरी तरह पिछड़ गया.. समवाय तथा स्व-स्थ का सम्बन्ध कुछ पल टूट गया.. मेरे मुख से चीख निकली 'हाय मैं मरा'। और यही हादसा बहुत बड़ा हो गया.. कुछ अधिक दीर्घकाल तक रहा, एक चीख... और हरि ओऽम् तत्सत्! इसके मध्य एक अवस्था और है.. उसे हम 'टूट' कह सकते हैं। यह टूट अन्त्य अभिरक्षण व्यवस्था है.. आहत कोषिकाएं तथा स्वस्थ के मध्य के सम्पर्क का टूट जाना ताकि 'स्व-स्थ' को समय मिल जाए और 'स्व-स्वास्थ्य' व्यवस्था कार्यशील हो.. यह टूट बेहोशी के नाम से या अचेत के नाम से जानी जाती है.. यह मृत्यु के निकटतम की भैतिक अवस्था है.. यह अवस्था मैंने भी जीवन में कई कई बार भोगी है।

"जीवन-मृत्यु दहलीज"

"दहलीज पर सत्य मिलता है" यह पाणिनी का नियम है। दहलीज पर बुद्धि कार्य करती है.. दहलीज बिना बुद्धि निरर्थ है.. सारी सांसारिकता का आधार है दहलीज.. मानव के चलने, स्कूटर सायकल चलाने की दहलीज है धरा-पग, धरा-टायर स्पर्श स्थल.. यह स्पर्श तल सार है गति का.. दहलीज का सूक्ष्म धरातल है जीव प्रकृति मध्य तल तथा जीव ब्रह्म मध्य तल.. जीवन-मृत्यु दहलीज "हाय मैं मर गया/गई" चीख स्वर है। मेरे जीवन में घटी विभिन्न कमाधिक जीवन-मृत्यु दहलीज घटनाएं मैं दे रहा हूं.. कुछ 'पर' हैं, कुछ 'स्व' हैं।

वर्षों लगातार सपनों में देखा वह चेहरा.. वह जीवन-मृत्यु दहलीज अस्तित्व आज भी मेरे सामने है- सागर मकरोनियां स्टेशन के मध्य अचानक रेलगाड़ी रुक गई... तब मैं आज (१६६८) से करीब छत्तीस साल छोटा था, मैं भीड़ के साथ उतरा.. . रेलगाड़ी के डिब्बों को पार करता पीछे की तरफ चला.. डिब्बों के पहियों पर कहीं कटी हुई ऊंगलियां कहीं पैर चिपके थे, जो श्वेतवत हो गए थे। आगे बढ़ते-बढ़ते पांत के निकट पिसे ताजे मानव मांस के टुकड़े छितरे मिले.. आखिरी डिब्बे से पीछे करीब सौ मीटर दूर दोनों पांतों के मध्य बाईं मेरी ओर वाली पांत के पास एक आदमी पड़ा था.. जिसका सीने से नीचे का भाग रेलगाड़ी के साथ लिथड़-चिथड़ गया था.. मैं खून नहीं देख सकता लेकिन वहां खून नहीं मौत जीवन की दहलीज थी.. उस आदमी का हृदय झिल्ली सहित धड़क रहा था, दिख रहा था.. पूरा छाती से नीचे का मांस भाग कटा चीथड़ा हो गया था.. चेहरा पियरा गया था.. आंखे अपलक पथरा गई थीं.. वह जिन्दा था, पर उसके पूरे अस्तित्व मृत्यु का आधिपत्य था.. चेहरे की पीत उभरी हड्डीयां पीत गाल जीवन की अन्तिम आभा लिए हुए थे.. ओंठ शुष्क नील हो रहे थे.. चीख के बाद बेहोशी के बाद की अवस्था में वह आदमी जिन्दा था.. मैं सिहर-सिहर गया... वह जीवन के पार मृत्यु सीमा चला गया.. वर्षों वह मेरे सपनों में आता रहा। पर एक दिन तो मुझे बड़ा होना ही था.. पर पूरा बड़ा मैं आज भी नहीं हो पाया हूं.. वह आदमी फिर मेरे सामने आ गया है.. मैं सिहर-सिहर

उठा हूं.. दहलीज पर आ पहुंचा हूं।

मानव हो या प्राणी कोई फर्क नहीं पड़ता, जीवन-मृत्यु दहलीज समान है। मैं तेइस वर्ष का था.. राजहरा आफिस से पानौरे के साथ आ रहा था.. उसके घर जा रहा था.. दिन का समय था.. चार कुत्तों ने एक मेमने का पीछा किया.. उसे चारों टांगों पकड़ा गिरा नोचने लगे ही थे, कि मैं साइकिल उतरा.. उन्हें पत्थर उठा भगाया। जख्मी मेमना हांफ रहा था, कांप रहा था.. मैंने उसे नाली से उठाया.. मेरे हाथों ने उसके तन कम्पन महसूस किए.. स्व-स्वास्थ्य संस्थान कार्यरत था.. उसे मैं किनारे छांह में ले गया.. बगल से पानोरे पानी ले आया, शायद कुछ दवा भी लाया.. उस मेमने के हमनें घाव धोए, दवा लगाई.. मेमने ने मुझे देखा. . एक बड़ी कंपकपी..., एक छोटी तड़फ... एक अन्तिम मौन चीख.. और उसनें मेरे हाथों ही दम तोड़ दिया। उसकी वे आखें, उसका अन्तिम ठहराव, आज भी मैं उससे बड़ा नहीं हो सका हूं।

मैं बाथरूम में यूरोपियन टायलेट पर बैठा हूं.. सामने मकड़ी का जाला है.. उसमें एक मकड़ी है.. मैं लकड़ी से वह जाला तोड़ता हूं.. लकड़ी मकड़ी को लगती है.. वह गिरती है.. मैं लकड़ी से उसे मारता हूं.. मकड़ी को अर्ध चोट लगती है... वह लड़खड़ाती है, तड़पती है, घिसटती है और दम तोड़ देती है.. मैं उसकी अन्तिम तड़प से, पश्चाताप तड़प से तड़प उठता हूं।

नागपुर धरमपेठ एक प्रायवेट अस्पताल.. मरीज से मेरा कोई रिश्ता, कोई नाता नहीं.. मैं उनकी दुकान गया था.. मुझे पता चला कोई गम्भीर बीमार है.. मैं देखने चला गया.. उसकी पत्नी वहीं बैठी है.. मरीज की उम्र होगी करीब छप्पन वर्ष। मैं उसकी नब्ज़ देखता हूं, वह डूब-डूब रही थी.. आखें देखता हूं, उनका तेज बुझ रहा था.. तापक्रम बदन का घट रहा था.. मैं डॉक्टर के पास दौड़ जाता हूं.. डॉक्टर आता है.. कृत्रिम श्वसन देता है.. हृदय स्थल थपथपाता है.. मुंह से मुंह लगा कृत्रिम श्वसन देता है, पर पंछी नहीं लौटता। मैं और डॉक्टर बाहर आते हैं.. वह महिला शत-प्रतिशत पागलवत उस लाश के ओठ चूमती है, उससे लिपटती है.. उसे प्यार करती है.. एक तरफा उद्दाम प्यार करती है। लाश क्या उत्तर देती? लाश अन्तिम ऊष्मा भी खो देती है. . महिला का स्व मानस स्वास्थ्य संस्थान जवाब दे जाता है.. वह चीख पड़ती है, फफक पड़ती है.. बेहोश हो जाती है।

"न मम ब्रह्म शाश्वतम्"

बड़ा थोथा अनुभव भी मृत्यु का मैंने झेला है.. रिश्तेदार, रुदाल और रुदालियों को मात्र मुंह ही मुंह रोते देखा है.. देखा ही नहीं पकड़ा है। लाश के सिरहाने पत्नी, मां, जीजा, बहनों, ससुर को धनयज्ञ रचाते भी देखा है.. धन गणित चलाते झूठ
ूर्तता का पुलिन्दा बनते भी देखा है.. विचित्रतम जीव है आदमी- 'न मम' के 'मम' से आहत ना समझ घटिया दयनीय.. धन की अन्धी दौड़ दौड़ा दिया गया! मेरा भतीजा 'न मम' के 'मम' से आहत ढह गया और मृत्यु को सत्ताइस वर्ष की उम्र में प्राप्त हुआ और मैं गवाह; खुदा गवाह! उसकी मां, पत्नी, जीजा, बहनें सारे के सारे पुनः उसकी लाश के ही किनारे भैय्या और पिताजी छोड़ी सम्पत्ती और भतीजे छोड़े धन के पीछे दौड़ने लगे।

'न मम' का 'मम' भी क्या खूब है,
त्रि अक्षर मृत्यु पूर्ण अडूब है।
ओ३म् तू भी क्या खूब है
त्रि अक्षर अमृत पूर्ण अडूब है।"

"द्वय अक्षरम मृत्यु भवति त्रय अक्षरम ब्रह्म शश्वतम्। ममेति च मृत्यु भवति न मम ब्रह्म शाश्वतम्" न मम को न मम समझ किसी ने ब्रह्म शाश्वत पा लिया, झूठन छोड़ दी और उस जूठन को मम कर कोई जीवित मृत्यु पथ भटकने लगा।

आदमी मृत्यु तेरी सबसे बड़ी रीत है।
धन तो जड़ है तू चैतन्य सर्वथा अजीब है।।
मैं मौत से वापस आया हुआ हूं।
यह मैं तो मौत से वापस आया जीव हूं,
जीवन मौत मेरा भविष्य, जीवन मौत मेरा अतीत है।।

बिलासपुर की बात शायद मैं कक्षा पांचवीं पढ़ता था.. लायब्रेरी से वापस आ रहा था.. धरम अस्पताल तब छोटा सा था पर धरम अस्पताल था.. आज बहुत बड़ा हो गया है, अधरम अस्पताल हो गया है। धरम अस्पताल के गोड़पारा मुहल्ले के किनारे की पान दुकान के पास मेरे बड़े भैय्या कृष्ण बलदेव ने कहा- "कहां से आ रहा है काका?" मैंने बस्ता दिखाते कहां- "स्कूल से!" "ले पान खा ले!"- भैय्या ने मुझे पान दिया.. पान बड़े ही प्रायः खाते हैं इसलिए वह बच्चों को अमृत लगता है। मैंने पान लपक लिया.. भैय्या लायब्रेरी तरफ चले गए - मैं पान चबाता घर तरफ चला। यह बात तब की है जब हमारे घर सब कुछ शत् प्रतिशत सात्विक था - मैं मख्खन की तंदुरी रोटी से मोटी तह लगी रोटी खाता था.. लस्सी दूध के सिवाय किसी पेय का घर में प्रवेश न था.. पूरा खाना शुद्ध घी का ही बनता था.. घर आर्य सत् विचारों से ओतप्रोत था.. यह मैं सत् का बना था। मैं पान चबाता

घर की ओर चला... लार क्या गटकी लार ने मुझे ही गटक लिया.. मेरे पैर अनियन्त्रित हो गए.. मेरा मानस अनियन्त्रित हो गया. . किनारे थोड़ा ढाल था, मैं उधर लुड़कता पुड़कता नाली में गिर दुनियां से टूट गया।

घर में मैं वापस आया.. मेरे मुंह पानी के छींटे दिए जा रहे थे.. भापाजी और माताजी का चेहरा पसीने से भीगा था. . भापाजी, "काका ऽ काका ऽ !" कह मेरे गाल थपथपा रहे थे.. मां से कह रहे थे मैं भूल गया था कि पान में तम्बाखू है।

तम्बाखू के 'न मम' तम से मेरा स्व-स्वास्थ्य संस्थान सत् बना लड़ने में अशक्त था, अतः मैं जीवन से ही टूट गया था।

न मम नशा भी है, क्या खूब।
सत् आदमी को लेता है लूट।।

न मम नशा धीरे-धीरे आदमी को न मम करता जाता है और आदमी के लिए बढ़ता जाता है.. एक दिवस स्व-स्वास्थ्य संस्थान पर इतना प्रबल हो जाता है कि स्व स्वास्थ्य संस्थान न मम निष्कासित नहीं कर पाता, मानव कैंसरित हो जाता है। मेरे लिए बचपन का एक अनुभव ही काफी है।

"मृत्यु झूला"

जीवन-मृत्यु मध्य झूला झूलना भी याद है मुझे- मैं विधि महाविद्यालय पढ़ता था.. विद्यालय का सर्वश्रेष्ठ छात्र घोषित था. . कार्य तो करना था.. रायपुर से स्नेह सम्मेलन के कार्ड छपवाकर ला रहा था.. पावर हाउस से टेम्पो में बैठा.. टेम्पो वाले से कहा-"भिलाई विद्यालय सेक्टर-२ पर रोक देना" भिलाई विद्यालय आया.. मैंने कहा-"रोक दो भाई" टेम्पो धीमा हुआ.. मैंने दाहिने हाथ में निमन्त्रण पत्र वाला पुट्ठे का डिब्बा उठाया.. बाएं हाथ से बाहरी भाग डंडा पकड़ा.. एक पैर नीचे रखा कि जाने क्या सोच टेम्पो वाले ने गति बढ़ा दी.. मैं अधर में एक हाथ सहारे लटक गया.. पीछे भागती काली सड़क पर अर्द्ध घिसटते मेरे पांव, जिन्हें मैं टेम्पो के पिछले घूमते पहिए से सप्रयास बचा रहा था, डब्बे के साथ साथ झूलता लटका मैं और उसी समय एक बस पीछे से करीब-करीब मुझे छूती निकल गई.. एक मिनट के करीब मैंने मौत का झूला झूला.. अगले मोड़ टेम्पो रुका। सारी सवारियां टेम्पो वाले पर बरस पड़ीं.. मैंने उसे पैसे दिए।

यह दारे सलाम है.. दारे सलाम हवाई अड्डा-मैं विमान में बैठा हूं २२ सीटर विमान है यह; सारा भरा हुआ.. उड़ान से पहले भूमि पर विमान तीन-चार अचानक रुकावट झटके देता है फिर उड़ता है.. "पेटी खोलिए!" हम पेटियां खोलते हैं.. सब सोंगेया जा रहे हैं.. विमान स्थिर होता है। श्यामला सुसिज्जत केशा एयर होस्टेस नाश्ता रख गईं हैं.. हम नाश्ता कर रहे हैं.. वह कॉफी भी रख गई है कि विमान तीस-पैंतीस के कोण तिरछ गया.. नाश्ते की प्लेट तथा कॉफी कप प्लेट सर् ऽ से दूसरी ओर जा छिटके। "पेटी बांधिए!" आसमान बिलकुल साफ था हमें कुछ समझ न आया.. पेटी बांधी वस्तुतः विमान बिलकुल बस जैसा घूम गया.. हमें छब्बीस जनवरी की विमान कलाबजियां याद आने लगीं और विमान ने ठहरे ही ठहरे ऊपर उठना शुरु कर दिया... यात्री भयभीत चेहरे शीतग्रस्त होने लगे.. आसमान अधर लटके करतब सारे यात्री कह उठे- "मंगू सईदियां! गॉड हेल्प!! या अल्लाह!!!" हम अकेले हिन्दू थे, जो परिस्थिति को एन्ज्वाय कर रहे थे। एन्ज्वाय का प्रयोग अकारण नहीं है यहां.. यहां आनन्द कतई नहीं था.. एन्ज्वायमेंट था और विमान हवा में मुक्त; नियन्त्रण मुक्त गिरने लगा.. नीचे जंजीबार द्वीप था.. सम्हला, झटके से चला, फिर ऊंचा उठा.. हिण्डोला हिचकोले तो सतत् क्रमबद्ध दिल ऊपर-नीचे करते हैं.. यह विमान तो अनियमित हिचकोले दे रहा था। आदमी हैं हम, एक पल हमें ख्याल आया तंजानियन धरती, अपरिचित देश, मृत्यु... याद आए सुदेशजी, शुचि, निचित, भैया-भाभी आदि पर हमने वेद मंत्र शरण ली- **तरत समन्दी धावती धारा सुतस्य अंधसः तरत समन्दी धावतिऽ** और दौड़ चले.. क्या अनुभव है! सारे लोग पसीना-पसीना, हाय-हाय, फक्क चेहरे और हम देख रहे हैं कि विमान मुक्त गिर रहा है। समुद्र पर नीचे एक बड़ा जहाज है.. अति सुन्दर चिड़िया टापू जैसे सुन्दर दारे सलाम जहाज अड्डे पर नील लहराता समुद्र आसपास छोटे-छोटे जहाज किनारे वृत्ताकार हरितमा, नीचे जहाज मस्तूल लोग, केबिन सब साफ दिख रहे हैं। सब सुव्यवस्थित और हमारा विमान नीचे... नीचे.. . नीचे.... बिलकुल बंधन रहित आकाश में मुक्त गिर रहा है। एक महान अनुभव था वह.. अचानक विमान रुका.. एक झटका और घूमा.. दारे सलाम के मकान जंगल के ऊपर से होता तेजी से तिरछता दारे सलाम हवाई अड्डे पर झटके के साथ धड़ाम आ उतरा.. सारे लोगों ने उल्टियां कर दी.. यहां हम भी शरीर मजबूर थे, सबके साथ थे।

हम विस्तृत कक्ष (लॉज) में जा बैठे लोग संतोष की सांस ले रहे हैं.. उद्घोषणा- तकनीकी खराबी की और मंद खुस-फुस और हम सब.. तब आपस में खबर पहुंची कि दो पायलट आपस में लड़ गए थे। हम हंसे- "धन्यवाद अज्ञात पायलेटों! मृत्यु झूला झूलाने के लिए"

"सहज बचाव व्यवस्था"

हम पहली बार टूर पर भिलाई जा रहे हैं.. नया नया हमने टी.ए. का पद ज्वाईन किया है.. मात्र दो माह बच्चे हैं नौकरी के क्षेत्र में। मोटे अख्खड़, मस्त सांवले (नाम भूल गया) ड्रायवर के पीछे की सीट पर हम बैठे हैं.. ड्रायवर के किनारे दूसरे सीट

पर हैं जोनल इंजीनियर श्री एस.बी. घोष उनके पीछे हैं-श्री श्रीराम शास्त्री एस्टीमेटर.. जीप ८० की गति से भाग रही है.. दांयी ओर जंगल है.. बायी ओर खेत तथा कुछ झाड़।

जीप राजहरा से करीब १५ किलोमीटर दूर है.. एक लम्बा मोड आता है.. अचानक जीप बायीं ओर मुड़ जाती है.. सड़क किनारा छूट जाता है.. कच्ची नाली फांदती है और सरपट ८० की गति से आगे बढ़ती है। मैं देखता हूं-ठीक ड्राइवर के सामने है एक सागौन का बड़ा दो फुट व्यास का पेड़.. पेड़ मुझसे तीन या चार फुट दूर रह गया है.. पेड़ नहीं वह मौत है.. जीप की टक्कर और ड्रायवर और मैं! मैंने सोचा... पर वहीं एक बड़ा पत्थर पड़ा था.. जीप उससे टकरा बाएं मुड़ जाती है। ड्रायवर को होश आता है.. जीप कीचड़ भरे गड्ढे में रुक जाती है.. एक मिनट निस्तब्ध मौन रहता है.. उसके बाद श्री घोष पूछते है "व्हाट हैस हैप्पन?" ड्रायवर कहता है- "टाई रॉड का पिन शायद टूट गया है।"

स्व स्वास्थ्य संस्थान के साथ स्व बचाव संस्थान नाम की एक तत्कालिक व्यवस्था शरीर में कार्यरत होती है, जिसे सहज बचाव व्यवस्था कह सकते हैं.. यह व्यवस्था विद्युत के पलांश में भी कार्य करती है.. इससे कभी स्वयं कभी दूसरे का बचाव होता हैं.. कभी-कभी यह बचाव मृत्यु दहलीज पर होता है। निचित तब शायद तीन चार माह का था.. हम राजिम गए थे.. तथा मंदिर जो नदी मध्य है से वापस लौट रहे थे.. धाराओं में नदी कलकल बह रही है.. रेत-नदी, रेत-नदी क्रम है.. सुशीत वातावरण है.. मैं आगे-आगे चल रहा हूं.. निचित को मैंने दोनों हाथों से छाती के पास लिया हुआ है.. पानी घुटने से ऊपर आधी जांघों तक है.. पानी की धारा हरहराती बह रही है.. अचानक रेत से मैं पथरीली चट्टान पर पैर रखता हूं.. पिछला पैर उठाता हूं.. वह चट्टान हल्की परत काई तेल जल परतवत चिकनी थी। मैं फिसल जाता हूं... सुदेशजी, पारिख भाभी पीछे कुछ दूर हैं.. मानो चीखती हैं.. ब्रह्म गवाह है, मैं पीठ के बल पानी में छपाक से गिरता गिरता आपनी सशक्त यौगिक बचाव व्यवस्था द्वारा सहज अप्रयास बिना जाने गिरकर उठ जाता हूं.. आज कोई मुझे कहे कि फिसलकर वैसे उठो तो मैं सप्रयास भी नहीं उठ सकता।

हम हरिद्वार में हैं.. शाम का समय है.. मैं, सुदेशजी, निचित, नमित, शुचि बतियाते-बतियाते टहल रहे हैं.. यह हरिद्वार की मुख्य सड़क है जिसका ढलान गंगा की ओर है.. हम एक लकड़ी, केन, टोकरी सामान की दुकान जाते हैं.. सामान देख रहे हैं.. दुकान का चबूतरा जो सामने है अत्यन्त छोटा है.. नमित साढ़े चार साल का है.. वह मेरे और सुदेशजी के मध्य मेरे दाहिने ओर है.. हम तालों की चाबी लगाने वाली लकड़ी पट्टिका देख रहे हैं.. अचानक सुदेशजी चीखती हैं- "ओह लड़का तो गया" मैं विद्युत चमकमवत झुकता हूं गिरते-गिरते लड़के को ऊपर खींच लेता हूं। हुआ यह कि चबूतरे के ठीक नीचे हरिद्वार की खुली नाला नुमा हरहराती गहरी तीव्र गति बहती सीवर लाइन थी और चबूतरे से कुछ छोटा नमित आगे बढ़ता-बढ़ता खड़ा उसमें गिरा। नाले के किनारे तरफ आधी से ऊपर गहराई के करीब डेढ़ इंच ईटा पट्टिका पर नमित के पैर या कापैर पल भर टकराया.. वह रुका और उसी पल मुझमें सहज बचाव व्यवस्था ने विद्युतवत कार्य किया.. मैंने उसे हाथ से पकड़ उठा लिया... वह किनारे की गन्दगी से सन चुका था। नीचे जो मैंने नाला हरहराता पुनः देखा तो मैं कांप कांप उठा.. वह नाला गंगा ले जाती सीधी मौत था.. तीव्र ढलान में बदबू समुन्दर बह रहा था.. "बाल-बाल बचना" कहावत सार्थक हुई।

सहज बचाव व्यवस्था बच्चों में भी होती है.. बच्चों में अधिक होती है.. उम्र के साथ मानव यदि योगासनों द्वारा इसे चैतन्य नहीं रखता है तो वह खोती जाती है। निचित तब छः सात साल का था.. संतोष सात आठ साल का था। दोनों एक आठ फुट गहरे पानी के टांके के किनारे बतिया रहे थे.. एक लकड़ी पानी में बह रही थी... निचित उसे आधा होकर खड़ा निकालने लगा और टांके में खड़ा फिसल गया.. वह नीचे डूबा और पहली बार ऊपर उतराया.. निचित बताता है कि उसने उतराते हाथ ऊपर किया और संतोष ने उसे हाथ से पकड़ तत्काल बाहर निकाल लिया। सामंजस्य मय बचाव व्यवस्था आदमी से कुछ पल बड़ी होती है.. ये पल बड़े ही महत्वपूर्ण होते हैं कि आदमी इन्हीं पलों मृत्यु विजय प्राप्त करता है।

दो श्रमिक एक बाबूलाल और एक अनोखेलाल जमीन से करीब चालीस फुट ऊंचाई पर स्लॅगग्रेनुलेशन प्लांट के गहरे कुंए के किनारे एक बीम जो क्रेन के द्वारा स्लिंग से मध्य में बन्धी तथा किनारे एक एक बोल्ट लगी जुड़ी है, पर बैठे बोल्ट लगा रहे हैं.. नीचे के एक ओर के बोल्ट के छेद जम नहीं रहे हैं.. ऊपर का बोल्ट थोड़ा ढीला कर बाबूलाल हाथ से इशारा करता है क्रेन ऑपरेटर को कि "बीम को थोड़ा ऊपर उठाओ!" क्रेन ऑपरेटर की जगह हैल्पर क्रेन चलाता है- थोड़ा ऊपर बहुत ऊपर हो जाता है... "चींऽ तड़ाक्..." बीम झटके से उखड़ जाती है.. बाबूलाल छिटक दूर जा गिरता है.. स्लॅगग्रेनुलेशन प्लांट के साठ मीटर गहरे कुंए में और तत्काल मृत्यु को प्राप्त होता है.. पर अनोखेलाल; अनोखी थी उसकी बचाव व्यवस्था की तात्कालिक प्रक्रिया.. उसका बीम कोना उखड़ता है और वह उस तेजी से झूलती बीम को हाथों से इतनी जोर से पकड़ लेता है कि झूलते-झूलते करीब पचास-साठ फीट ऊपर बीम के साथ खड़ा लटका रहता है और तब तक लटका रहता है जब तक कि बीम धीरे-धीरे नीचे नहीं उतारी जाती.. उसका बाल भी बांका नहीं होता है। अनोखेलाल की स्व-बचाव व्यवस्था अनोखी थी।

स्व बचाव व्यवस्था मानव तन में **'तदेजति तन्नैजति'** वत कार्य करती है अचलित यह चलित को चलाती है.. अचालित

इसका स्वरूप ढूंढने का सारा चिकित्सा जगत प्रयास कर रहा है.. इतना तो स्पष्ट है कि इसका सीधा सम्बन्ध सात्विक भोजन एवं योगासनों से जुड़ा हुआ है.. योगासन तन को सहज लचीला स्वतः स्फूर्त बनाते हैं। स्व स्वास्थ्य संस्थान पर चिकित्सा विज्ञान में बहुत कार्य हुआ है, हो रहा है.. वर्तमान चिकित्सा व्यवस्था की अत्यन्त निकट भविष्य में यह आत्मा गिना जाने लगेगा.. पर स्व-बचाव संस्थान पर अपेक्षाकृत काफी कम काम हुआ है। रूस में खेल जगत में इस पर कुछ प्रयोग किए गए और चिन्तन किया गया है कि वे कौन से कारण हैं जिनके कारण शेर के पीछे भागते समय आदमी विश्व के सर्वश्रेष्ठ धावक से भी तेज दौड़ लगा सकता है? भय पलायन, सावयववाद का उत्कृष्ट उदाहरण है.. क्रोध में खून में काब्रोहाईड्रेट घुलते हैं और मानव शक्ति उत्सर्जन की आवेगकर स्थिति में जा पहुंचता है। उत्साह उत्साह में भी तन में सावयववादिता तथा शक्ति संचयन होता है पर इसकी स्वरूप खोज होना बाकी है। (वर्तमान में इस क्षेत्र में भी खोज हो चुकी है। इसके लिए आप 'एकी चिकित्सा' पुस्तक देखें।)

"कुछ अनुभव तन से अलग के"

तन से अलग कुछ पल के अनुभव भी मेरे जीवन में हैं.. मैं स्कूटर पर जी.ई. सड़क से आ रहा हूं.. नृत्य का रंगारंग कार्यक्रम मैंने थोड़ी देर पहले देखा था। रात्रि के करीब सवा दस बजे हैं.. मैं सुपेला मोड़ मुड़ रहा हूं कि सड़क पर एक ईंट स्कूटर का पहला पहिया पार करता है.. वह ईंट साइकिल पंप वाले ने पंप टिकाने आधी खड़ी रखी थी.. पिछला पहिया भी उसी ईंट चढ़ता है और स्कूटर आवश्यकता से अधिक झुक जाता है.. मेरे पैरों के फैलने की बचाव सीमा से बाहर हो जाता है... स्कूटर मुझ पर हावी होते मुझे एक ओर गिराता है, स्वयं दूसरी ओर गिरता है .. मैं धड़ाम से गिट्टी दीखती सड़क पूरा वजन गिरता हूं. . मेरे फेफड़े बंद हो जाते हैं.. दिल रुक जाता है.. मैं तन बाहर खुद का निश्चेष्ट तन देखता हूं कोई एक आदमी मेरी बाहें उठाता है मुझे हटाने के लिए... मेरे फेफड़े प्रथम जन्मवत पुनः खुल जाते हैं.. मैं तन लौट जाता हूं.. उस आदमी को मना कर देता हूं उठाने के लिए.. तन से एक हुआ लेटा रहता हूं.. लम्बी सांस लेता हूं.. लम्बी लम्बी सांसे लेता हूं.. फेफड़ों को पुनः पूरा चालू करता हूं.. तीन चार मिनट बाद उठता हूं.. एक सज्जन स्कूटर चालू कर देते हैं.. मै घर आ जाता हूं दो घण्टे अपनी मलहम पट्टी दवा दारु करता हूं.. साढ़े बारह बजे दर्द की शैय्या पर सो जाता हूं।

मैं स्कूटर से ऑफिस जा रहा हूं.. सड़क-दो, सेक्टर-दो करीब तीन चौथाई पार कर चुका हूं.. एक बड़ा कुत्ता दाहिनी ओर बैठा है.. कोई बाईं ओर से उसे बुलाता है.. वह दौड़ता हुआ सामने आ जाता है.. स्कूटर उससे टकराता है.. मैं गिरता हूं.. कैसे गिरता हूं नहीं जानता.. मैं पूर्णतः दुनियां से गुम जाता हूं पर स्व-स्वास्थ्य संस्थान कार्य करता रहता है.. मैं स्व-स्वास्थ्य संस्थान, बचाव संस्थान से भी टूटा रहता हूं.. अभान अवस्था है यह। बड़ा ही धीरे-धीरे वापस आता हूं, गया सहसा था.. स्व-स्वास्थ्य संस्थान क्रमशः मुझे (तन को) ठीक करता रहा.. मुझे लगा कुछ पैर हाथों पर स्पर्श अर्ध उठा हुआ हूं मैं, मैं सारे चेहरे आसपास देखता हूं.. धुंधलाते वे एकदम अधिक स्पष्ट लगते हैं.. सुदेशजी का चेहरा चिंता चमचमाया दिखता है.. मैं एम्बुलेंस में उठाया जा रहा हूं.. यह अनुभव बड़ा अस्पष्ट सा है।

मैं आफिस जा रहा हूं स्कूटर से.. फॉरेस्ट अवेन्यू के बोरिया गेट के पास एक गाड़ी स्टेशन वैगन तेजी से दाहिनी ओर से आती है.. मैं ब्रेक लगाता हूं.. गाड़ी बाईं मुड़ती है.. मेरा स्कूटर जोर से उसके पीछे टकराता है जो बचाव में बांए मुड़ने की अवस्था में था। यहां से सारा का सारा मुझे स्लो मोशन में दिखाई देने लगता है.. मेरा स्कूटर लहरता है, बायां जाता है, दाहिने जाता है.. मेरे पैर फैलते हैं.. मैं देखता हूं कि स्कूटर दाईं ओर मेरे पैर पर ही गिर रहा है.. मैं उसे बांए पैर से धक्का दे देता हूं और हवा में तैरता स्कूटर दूसरी ओर गिरता है.. मैं हवा में तैरता दाहिनी ओर गिरता हूं.. मेरा सिर बड़े जोर से कोलतार के पत्थर टुकड़ों से टकराता है..हां! हेलमेट है, मुझे यह अहसास होता है.. यहां स्लो-मोशन समाप्त हो जाता है। भीड़ ने मुझे घेर लिया है.. सारे चेहरे उभरे उभरे मिश्र से नजर आते हैं.. मैं उन्हें उठाने मना करता हूं.. लम्बी-लम्बी सांस लेता हूं, उठता हूं. . बदन के दर्दों सहित स्कूटर चला ऑफिस पहुचता हूं। दर्द बढ़ता जाता है.. जीप से मैं मेडिकल पोस्ट जाता हूं.. वहां से सेक्टर नौ अस्पताल जाता हूं.. साल से अधिक बीत गया आज भी छाती में हल्का दर्द बाकी है।

"श्वास गति और मृत्यु"

सृष्टि जगत में मृत्यु का सम्बन्ध सांस की गति से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। कहावत है कि सांसे गिनती की रहती हैं। जीवन में जिसने जल्दी-जल्दी ले लीं जल्दी से चल दिया, जिसने धीमी-धीमी लीं वह देर से चल दिया। और जिसने न ली वह सदायी अमर पत्थर हो गया या मोक्षित हो गया। पत्थर होना या मोक्षित होना एक ही नहीं है, ये तो अन्त्य छोर हैं। सांस की गति सम्बन्ध ा मे गिनती की सांसे आदि सब मान्यताएं हैं जो अर्ध सत्य हैं। प्राणियों की सांस की गति से उनकी उम्र का बेशक एक सम्बन्ध ा है। तीव्र गति से सांस लेने वाले प्राणी कम उम्र होते हैं। धीमी गति से सांस लेनेवाले अधिक उम्र होते हैं। सांस लेने का सम्बन्ध ा आकार प्रकार से नहीं है। मृत्यु का सम्बन्ध भी आकार प्रकार से नहीं है।

प्राण से मृत्यु का सीधा सम्बन्ध है। हृदय मृत्यु के पश्चात् भी मष्तिष्क अवशेष प्राण वायु के कारण दो मिनट तक जीवित

रहता है। इस दौरान अगर हृदय जीवित किया जाए तो प्राण पुनः चलने लगता है। मेरे पिताजी कैंसर से पीड़ित थे.. डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था.. मैंने छुट्टी ले रखी थी तथा बिलासपुर में उनकी सेवा में रत था.. उस दिन दशहरे का दिन था। भाभी ने अनुरोध ा किया "जा घूम आ इतने दिन से लगातार सेवा कर रहा है" मैं चला गया.. कौशल भाभी आदि से मिला.. वहां सोनपानादि देने की रस्म निभाई.. वापस आया तो पिताजी के कमरे में भाभी को हतप्रभ खड़े पाया.. पिताजी की धड़कन रुक चुकी थी.. प्राण आयाम गायब थे..चिकित्सक था मैं.. चिकित्सक वह होता है जो अन्तिम पलों तक मृत्यु से लड़ता है .. फौरन पिताजी के ऊपर बैठ हाथों से उन्हें कृत्रिम स्वसन सत्रह अठारह बार के क्रम से दिया.. उनके दिल को थपकिया दीं और मेरे प्रयास भाभी के देखते-देखते पिताजी के प्राण लौट आए.. मुझे उनके आशीर्वादों की छाया डेढ़ माह तक और मिली।

प्राण में आयाम का मृत्यु से सीधा सम्बन्ध है जीवन शक्ति से सीधा सम्बन्ध है। श्वास प्रश्वास गति संयमन प्राण चिकित्सा की महान विधा है। सामान्य प्राणायाम श्वास, ठहराव, प्रश्वास ठहराव नियन्त्रण का नाम है। मंथर श्वास गति दीर्घायु का रहस्य है। मंथर श्वास गति, प्राणायाम से सहजतः प्राप्त की जा सकती है। 'अजपाजप' साधना सिद्धि में श्वास गति सर्वाधिक सहज स्थिर सम होती है। यह सर्वाधिक कम शक्ति क्षय अवस्था है। यह सर्वाधिक चैतन्यता जागृति अवस्था है जो मानव मात्र प्राप्त कर सकता है। पशु श्वास-प्रश्वास प्राकृतिक होती है। प्राणायाम साधना उनके लिए अर्थ नहीं रखती है पर प्राणायाम प्राकृतिक के हिसाब से उनकी उम्र तथा श्वसन गति में एक सम्बन्ध है।

चार श्वास प्रति मिनट जीने वाला मंथर कछुआ जिन्दगी की दौड़ में डेढ़ सौ वर्ष जीकर अड़तीस सांस प्रति मिनट जीने वाले खरगोश की आठ वर्षीय उम्र को पिछाड़ देता है। ग्यारह सांस प्रति मिनट वाला हाथी सौ वर्ष, सत्रह अठारह सांस प्रति मिनट वाला मनुष्य साठ सत्तर वर्ष, उन्नीस सांस वाला घोड़ा पचास वर्ष जीता है। आठ सांस प्रति मिनट लेता सांप मनुष्य से दुगना एक सौ बीस वर्ष जीता है। इनमें मनुष्य समर्थ है श्वसन गति के नियन्त्रण में और प्राणायाम का आदतन प्रयोग उसकी श्वास गति में स्थाई परिवर्तन ला सकता है। अगर आप ज्यादा जीना चाहते हैं, मृत्यु को परे ढकेलना चाहते है तो धीमी लम्बी सांसे लीजिए, ध ीमी लंबी सांसे छोड़िए।

उम्र तथा श्वसन गति का ग्राफ इस प्रकार का है।

"जीवन खेल"

आर एन ए हाइड्रोकार्बन के मेले का सारा खेल लगता है जीवन है। रूस के वैज्ञानिकों ने वायरस में जब इन दोनों को अलग-अलग कर दिया तो वायरस का जीवन ही रुक गया और जब पुनः उन्हें जोड़ दिया तो जीवन की गति, द्विगुणित होना आदि पहचान वायरस में पुनः अभिव्यक्त होने लगी।

"प्रतिरूपता व सावयवी तथ्य"

प्रतिरूपता (क्लोनिंग) मानव की जीवन के क्षेत्र में महान सफलता है। भेड़ के जीन में जीवन अभिसिंचन कर भेड़ का प्रतिरूप भेड़ तैयार करना या भ्रूण से जीन ले प्रतिरूप तैय्यार करना विज्ञान की आधुनिकतम खोज है। जिस पर हाय तौबा मची हुई है तथा इसमें आगे खोज हो या न हो का प्रश्न चिन्ह नैतिकता पैतृकता आदि की मान्यताओं के कारण लगाया जा रहा है। ये सारी हाय तौबा तथा नैतिकता पैतृकता की मान्यताएं उतारने है- "प्रतिरूपता विज्ञान" भी कल उतारन हो जाएगा जब इन्हें पता चलेगा की ये प्रतिरूप पर जो कुछ सोच रहे हैं वह भ्रामक है। मानव या प्राणी तथा मानव तथा प्राणी प्रतिरूप की एका की कल्पना इतिहास में हमेशा कल्पना ही रहेगी। जीन से मानव विकसित कर लेना एक खोज है बेशक। बचपनी अवस्था में मैं बचकाने प्रयोग करता था। हड्डियों को दस बर्तनों में गोबर, पत्तों आदि के साथ पानी डाल अभिसिंचन कर उनसे प्राणी विकसित करने का प्रयास करता था। वैज्ञानिक इस प्रयास में सफल हुए हैं मानव सावयवी है। सावयवी विकास मानव में होता है। यह विकास अनन्त आयामी है। हजारों अणु-परमाणुओं की सम्मिलित उठन, पतन, चलन, बनन, गलन, बढ़न, घटन, पढ़न, मनन, त्यागन, ग्रहण, मम, न मम आदि-आदि व्यवस्था का नाम है मनुष्य। सहज सरल सत्य है। इसका प्रतिरूप असम्भव है। विकृत या सुकृत रूप सम्भव है। प्रतिरूपता पर यह सावयवता का तथ्य भूल जाने के कारण इतनी हाय तौबा मची है, जो निरर्थक है।

"प्रत्येक आत्मा में अव्यक्त ब्रह्म है।" प्रतिरूपता का महान लागू सिद्धान्त है जो अध्यात्मिक है यह सर्व लागू है। क्लोनिंग या प्रतिरूपता विश्व सत्य है।

अव्वल अल्ला नूर उपाया
कुदरत दे सब बन्दे
एक नूर ते सब जग उपजया
कौन भले कौन मन्दे।

आधुनिक विज्ञान कहता है अंदाजन सौ हजार एंजाइम व्यवस्था का नाम है मानव। वेद से अलग भाषा नहीं है बहु खोजी

इस आधुनिक उच्चतम वैज्ञानिक की **अयुतोऽहमयुतो म आत्मायुतं मे चक्षुरयुतं मे श्रोत्रमयुतो मे प्राणोऽयुतो मे पानोऽयुतो मे व्यानो ऽ युतो ऽ हं सर्वः।।** (अथर्व. १६/५१/१) सहस्त्रों सहस्त्र हूं यह मैं सम्पूर्ण, दस सहस्त्र है आत्मा, दस सहस्त्र है नेत्र, दस सहस्त्र है श्रोत्र, दस सहस्त्र है प्राण, दस सहस्त्र है अपान, दस सहस्त्र है व्यान, यह सम्पूर्ण मैं दस सहस्त्रों व्यवस्था हूं।

योगा योग समन्वय विमन्वय नियम जो जानता है वह इस सावयवी सम्पूर्ण व्यवस्था जिसका नाम पुरुष है को सटीक समझ सकता है। यह जटिल वेद द्वारा कितना सरल समझाया हुआ है। हजारों सम्मिश्र व्यवस्था को साधना या प्रतिरूप बनाना क्या कोई बच्चों का खेल है? और इस व्यवस्था की नियन्ता व्यवस्था, परमाणु व्यवस्था सौ हजार एंजाइमों पर एक-एक धातु-अधातु सूक्ष्म अणु-परमाणु बैठे हैं नियन्त्रण के लिए।

नव प्राणान्त्रवाभिः सं मिमीते दीर्घायुत्वाय शतशारदाय।
हरिते त्रीणि रजते त्रीण्ययसि त्रीणि तपसा विष्ठितानि। (अथर्ववेद ५/२८/१)

शत एवं शताधिक्य दीर्घ आयुष्य के लिए नौ तारों या नवतारों से नौ प्राणों या नवप्राणों को सं संस्कृत करना/सं मांजना है तीन तार हिरण्य तीन तार हरित, तीन तार अयस, त्रि सूत्रों में तप पूर्वक विशिष्टतः अविष्ठित है।

हिरण्य, रजत, अयस, धातुओं अधातुओं नव प्राणों, नव अवगुंठनों का खेल है जीवन। धातु-अधातु परमाणु शरीर की जैव अवस्था में जैव संयुक्त होकर जीवन सावयवी अवस्था के सिरमौर है। ये साधारण अवस्था में नहीं है, शरीर में जैव अवस्था में है, आयनीकृत अवस्था में है। धातु-अधातु की आयनीकृत विषम व्यवस्था जो असन्तुलित है जीवन व्यवस्था है- इस असन्तुलित (वास्तविक, जैव सन्तुलित- चेतना सन्तुलित) व्यवस्था को बाह्य बन्धना (अक्ष-र) इन्द्रियों का बाह्य रमण करना सन्तुलित (वास्तविक जैव असन्तुलित- चैतन्य असन्तुलित) करने का प्रयास करता है यह अध्यात्म गप या कपोल कल्पना नहीं है। यह भौतिक वैज्ञानिकों द्वारा खोजा यथार्थ सच है।

'अक्ष-र' अर्थात बाह्य रमण

प्राण और धातु में सीधा सम्बन्ध है। अक्षर अक्षों (इन्द्रियों के माध्यम से) बाह्य रमण अक्ष-र का सीधा सम्बन्ध आणविक अवस्था की अधातु आणविक व्यवस्था से है। संवेदन नाड़ी की कोशिका की संरचना में सोडियम तथा पौटेशियम की आणविक व्यवस्था का असन्तुलित रूप कार्य करता है। यह असन्तुलित रूप वास्तव में जैव सन्तुलित रूप है। नाड़ी या नस (Nerve) कोशिका की झिल्ली से सोडियम या पौटेशियम (यदि हम इनका अध्ययन मात्र करें) दोनों सहजः आर-पार हो जाते हैं पर झिल्ली के अन्दर पौटेशियम आयन तथा सोडियम आयनों का अनुपात ४०:१ है पर बाहर का अनुपात १:७ है। झिल्ली को यह विषम अनुपात रखने में शक्ति खर्च करनी पड़ती होगी। कोशिका मृत्यु में यह असन्तुलन समाप्त हो जाता है कोषिकाएं मम □ मम + (मम+) □ द्वि मम अनुपात १:१ हो जाता है। इसमें शक नहीं सोडियम तथा पौटेशियम आयनों (धनात्मक) के साथ बराबर फॉस्फेट तथा क्लोराइड के ऋणात्मक आयन भी होते हैं। यह सम्पूर्ण वैद्युतिकीय अवस्था सन्तुलन में होती है पर अधातु रूप में असन्तुलन अवस्था में होती है तथा आंशिक वैद्युतिकीय अवस्था भी असंतुलन रूप में होती है।

यह अदभुत सत्य है कि **जब नाड़ी में उद्दीपन होता है (अक्ष+र) स्थिति होती है।** इन्द्रियां बाह्य रमण करती हैं तो नाड़ी में नाड़ी कोशिका स्तर पर रासायनिक क्रिया होती है। (इस क्रिया को ढूंढने वाला नोबल पुरस्कार का हकदार हो सकता है) इस क्रिया से असन्तुलन तीव्रता से समाप्त होता है। बाहर से पौटेशियम आयन तीव्रता से अन्दर गमन करते हैं तथा बाहर से सोडियम आयन अन्दर की ओर आते हैं तभी वह नाड़ी या झिल्ली पुनः असन्तुलन प्रयास करती है तथा असन्तुलन प्राप्त कर लेती है। पर तब तक यह सन्तुलन (का असन्तुलन) दूसरी कोशिका तक पहुंच जाता है। कोशिका-कोशिका यह सफर मरण-जन्म का मस्तिष्क तक बाह्य को पहुंचाता है।

'अ-क्षर' अर्थात आत्म गमन

यह एक अद्भूत मम-न मम सत्य है। **"द्वय अक्षरम् मृत्यु भवति त्रय अक्षरम् ब्रह्म शाश्वतम्"** मानव का हर बाह्य से युजन मृत्यु की ओर गमन है। तथा कोशिका के झिल्ली स्तर पर जीवन शक्ति असन्तुलन करने वाले मम का प्रतिरोध करती है। क्योंकि हर बाह्य मम झिल्ली द्वारा बनाए जीवित रहने वाले असंतुलन को संतुलन (मृत्यु) की ओर ले जाता है। 'न मम' अवस्था में यह अवस्था आत्मा में आत्मा देखता है। (गीता स्थिति प्रज्ञ पुरुष) के कारण चैतन्य असन्तुलित रहती है।

है इन्द्रियों की शक्तियां बाहर की ओर
बाहर से इनको तू भीतर की ओर मोड़ दे
भीतर है सखा तेरा जरा मन टिका के देख

उपरोक्त भजन भौतिक स्थूल रूप में नाड़ी के भौतिक स्तर पर अद्भुत रूप से सत्य होता है। अध्यात्म सत्य इस भौतिक सत्य से कहीं-कहीं सूक्ष्म है। भौतिक झिल्ली के गठन उसके असन्तुलन बनाए रखने की भूमिका उसमें बाह्य द्वारा सन्तुलन पर होने

वाली प्रक्रिया आदि वे खोज के क्षेत्र है। जिनके द्वारा कोई भी डॉक्टर नोबल पुरस्कार प्राप्त कर विश्व प्रसिद्ध हो सकता है। चैतन्यता का कार्य स्थल इससे भी गहन है।

चिकित्सा क्षेत्र की पौटेशियम सोडियम आयनों का झिल्ली के अंदर बाहर असंतुलन अवस्था में रहना इस अवस्था की ओर भी इंगित करता है कि क्या अति असंतुलन १:४० तथा १:७ से अधिक किसी विधि के द्वारा संभव है। वेद मंत्र के ''तपसा विष्ठितानि'' की इस संदर्भ में क्या कोई सार्थकता है ? मेरे विचार से १:४० तथा १:७ से अधिक सन्तुलन संभव है और यह उच्च ''न मम'' अवस्था है जो तप साधना के द्वारा संभव है, सहज संभव है। हम तनिक केन उपनिषद पर तथा उससे उद्भूत साधनाओं की व्यवस्थाओं पर इस संदर्भ में विचार करें।

केनोपनिषद सार- "वह नहीं बदलता"

चक्षु नाड़ी, श्रोत्र नाड़ी, नासिका नाड़ी, रसना नाड़ी, स्पर्शन नाड़ी, के बाह्य एवं आंतरिक दो-दो भाग है। आंतरिक भाग की भौतिक अंशात्मक अवस्था जिसका ऊपर चित्रण है क्या वह आंख की आंख, कान का कान, नासिका की नासिका, रसना की रसना, त्वचा की त्वचा की ओर इंगन नहीं है ? केन उपनिषद इसी संबंधित अध्यात्म तथ्यों का नाम है। ये तथ्य तप (साधनाओं), दम- मन बुद्धि प्राण इन्द्रिय नियन्त्रण, तथा कर्म- कर्त्तव्य पालन द्वारा जो वेद प्रतिष्ठित है सत्य आयतन के अंग प्रत्यंग प्राप्ति से होते है। (४/८)

"अ से क्ष तक परिपूर्णता से मेरे अंग, वाक, प्राण, चक्षु श्रोत्र, समस्त इन्द्रियां तथा बल आप्लावित हों।" आरम्भ अंग बाह्य से नाड़ी से कोशिका संरचना से कोशिका द्रव्य से झिल्ली तक तथा बल झिल्ली द्वारा पौटेशियम सोडियम आयन असंतुलन रखना रूप में संदर्भित हो सकते है। झिल्ली, प्लाज्माद्रव्य, जीन, आणविक आयन आवेश अवस्था, मानव अस्तित्व को संपूर्ण रूप में देखना अध्यात्म दृष्टि से आवश्यक है।

वैज्ञानिक व्याख्या भौतिकता स्वरूप में बाह्य माध्यम से इन्द्रिय सन्निकर्ष से नाड़ी कोशिका समूह संरचना से नाड़ी कोशिका से केन्द्रक द्रव्य, उपकेन्द्रक, झिल्ली, पौटेशियम आयन, सोडियम आयन, फास्फो आयन, क्लोराइड आयन इनका असंतुलन स्तर पारप्रवहणित झिल्ली के आर-पार तथा बाह्य प्रभाव से संतुलन-असंतुलन लहर क्रम से संवेदन प्रवहण तक की बात करती है। यह सब बाह्य आंख, कान नाक, श्रोत्र, इन्द्रिय आदि के स्वरूप का ही विवरण है। इस सारी व्यवस्था के लिए यदि देखना प्रक्रिया है तो मात्र आंख कहना ही पर्याप्त है। इनमें एक तत्व है मन।

केन उपनिषद मन से शुरु करता है किससे सत्ता स्फूर्ति प्राप्त कर प्रेरित संचालित मन सम्पर्कित होता है? किससे युक्त प्रथम प्राण चलता है? किससे उर्जित वाणी बोलती है? कौन है वह देव जो युक्त करता है आंख कान को? उपनिषद यह कह रहा है कि कोशिका व्यवस्था जड़ है साधन है यह साधन शक्ति प्रवृत्त है वह शक्ति कौन है? आधुनिक विज्ञान ने इसे भली भांति सिद्ध किया है तभी तो एक तन की जड़ कोशिका व्यवस्था दूसरे तन प्रत्यारोपित होने पर उस देव संचालित हो उठती है। प्रत्यारोपण सिद्धांत की उत्पत्ति हुई। केन के प्रश्न से ही उत्तर स्पष्ट है। **मन का मन, वाक् का वाक्, कान का कान, प्राण का प्राण, आंख की आंख, एक ही है।** उस एक को जानते ही पता चलता है कि आंख नहीं देखती, देखता वह है। आंख बदल जाती है, दिल बदल जाता है वह नहीं बदलता।

"बुद्धि की बुद्धि आत्मा"

कोशिका झिल्ली पार उससे परे यह असंतुलन कायम रखने का प्रयास करता इस असंतुलन प्रभावित होता संतुलन का प्रयोगकर्ता कौन है? इस प्रयोगकर्ता के मध्य विज्ञान के लिए पहाड़वत बाधाएं है कि विज्ञान बुद्धि औजार का प्रयोग नहीं करता जो सूक्ष्मतम औजार है और यह उस औजार का क्षेत्र है इलेक्ट्रानिक माइक्रोस्कोप तथा अल्ट्रा माइक्रोस्कोपिक तकनीक (अल्ट्रा वायलेट किरण उपयोग युक्त) जहां तक विज्ञान पहुंचा है बुद्धि के अध्यात्म सूक्ष्मतम औजार से उसें औजार बड़े मोटे औजार हैं।

मैं जानता हूं कि विज्ञान जब झिल्ली की भित्ती या आयन आवेश के आवेश का विश्लेषण करेगा तो उसे क्या मिलेगा? उसकी अंतिम स्थूल सीमा क्या है? तभी तो मैं कहता हूं वेद अद्भूत विज्ञान ग्रंथ है। विज्ञान सार ग्रंथ है। इनमें बुद्धि के औजार के सर्वोत्तम व्यवहारिक प्रयोग एवं निष्कर्ष साथ-साथ है। संसार आत्म की सीमा रेखा का तत्व है बुद्धि। इससे परे का तत्व है बुद्धि की बुद्धि आत्मा। ब्रह्म ज्ञान को प्रणाम। मेरे सम्पूर्ण प्रणाम।

"मृत्यु से अमरता की ओर"

मैं पथ भौतिक से अध्यात्म पथ दर्शा रहा हूं मन के मन, कान के कान, आंख की आंख, रसना की रसना, प्राण के प्राण, तक पहुंचने की सफलता असफलता केन के शान्ति पाठ स्वरूप में उपलब्धि आधार पर होगी। यह साधना मृत्यु से अमरता की ओर गति के रूप में है। यहां कान के कान की साधन का रूप दिया जा रहा है।

इस साधना के चरण हैः- (१) स्थिर सुखम आसनम्, (२) स्व-स्थिति आकलन, (३) स्वर-श्रवण, (४) स्वर पृथकीकरण,

(५) एक स्वर संयमन, (६) मौन श्रवण, (७) अन्तर्मौन, (८) अन्तर्सोऽम्, (९) अन्तर्-ओऽम्, (१०) अन्तर्सोऽम् (११) अन्तर्मौन (१२) मौनं श्रवण (१३) स्व-स्थिति आंकलन।

सात्विकी को एक डेढ़ वर्ष में साधना सिद्धि होती है। सिद्धि अवस्था समाधिवत है।

'न मम' साधनाएं

हर इन्द्रिय की इन्द्रिय की साधनाओं के चरण ये ही है क्षेत्र अलग है। सिद्धि समय यही है। शब्द, रूप, गन्ध, स्पर्श, रस, मन, बुद्धि तक की इन साधनाओं को साधने में औसतः ग्यारह से पन्द्रह वर्ष प्रति दिवस प्रातः एवं सायं डेढ़-डेढ़ घंटे अभ्यास करने पर लगते हैं जब ये साधनाएं सिद्ध हो जाती हैं तब प्रथमतः दशावतार तथा बाद में षोडसावतार साधना की जाती है जो सधते-सधते जीवन समृद्ध करती जाती है।

ये सारी आरम्भ साधनाएं "त्रय अक्षरम् ब्रह्म शाश्वतम्" उर्फ 'न मम' साधनाएं हैं। इनका शरीर पर भौतिकी प्रभाव जीवन शक्ति में सबल होने के रूप में है। "मम" रूपी बाह्य स्थिर सुखं आसनम् द्वारा एक स्थल ठहर जाता है। स्वस्थिति आकलन में मस्तिष्क को ऋ या लृ द्वारा नादित किया जाता है। स्वर श्रवण अवस्था में बाह्य स्वर कोशिका स्तर पर असंतुलन तितिर तितिर जाना संतुलित होता है। स्वर पृथकीकरण अवस्था में असंतुलन की संतुलनता (मृत्यु) के खांचे बनते हैं। मौंन श्रवण में ये खांचे मिटते हैं। अन्तर्मौंन अवस्था में असन्तुलन स्थिति स्थैर्यता प्राप्त करती है। अन्तर्सोऽम् अवस्था में असंतुलन, असंतुलन से संलग्न व्यापकम् सम होता है। कोशिका, कोशिका एक भाव होता है। अन्तर्-ओऽम् असन्तुलन अवस्था में असन्तुलन एक विशिष्ट उच्च पर स्थिर थम जाता है। यह न मम की सर्वोच्चावस्था है। इसमें बाह्य मम रहता है पर अर्न्तमुख इन्द्रिय अस्तित्व को उसका भान भी नहीं होता है। काश कोई वैज्ञानिक इस अवस्था में क्रमशः साधना से परिवर्तित उच्च साधनों की अवस्था में कोशिकाओं की झिल्ली के आर- पार सोडियम पोटेशियम तथा क्लोरिन फास्फेट आयनों के असंतुलन के विभिन्न रूपों का पता लगा सकें तो झिल्ली तह में मूल असंतुलन जो कि शरीर में कहीं (अनाहत चक्र हृतप्रदेश) स्थित आत्म की तरंग के करोड़ों में एक प्रभाव उत्पन्न है कि और इंगन कर सके।

"अजपाजप साधना"

प्राण साधना की एक छोटी सी सिद्धि है अजपाजप साधना यह अजपाजप श्वास प्रश्वास सधते सधते सिद्ध होते हैं। इनके सिद्ध होने पर ये नाड़ी कोशिकाओं के असंतुलन को छूते भी नहीं हैं। साधना की क्या बात है यह परमाणुओं आयनों को बिना छुए प्रवाहित हो जाती है। यह वह न मम बाह्य अवस्था है जो अद्वितीय है। मम मृत्यु से बचने का सशक्ततम तरीका है साधना।

"शत एवं शताधिक उम्रविज्ञान"

प्राण और हरित, रजत अयस आवेष्टित नव रचना शत एवं शताधिक उम्र के लिए सशक्त होनी चाहिए। हाइड्रोजन, ओषजन, कार्बन, नाइट्रोजन, सल्फर, क्लोरिनादि प्राण अवश्य है। लौह कोबाल्ट, ताम्र, रजत, स्वर्ण सोडियम सल्फर, कैल्शियम, फास्फोरस, जस्ता मैग्नीशियम आदि हरित, रजस, अयस अवयव है। इन अवययों का खेल है शरीर। ये अवयव मिला दिए जाए तो कोई अर्थ नहीं रखते पर शरीर अर्थ रखता है जो इन अवययों से मिलकर बना है। खून में इन अवययों जो भोजन (ग्रहणीय वायु भी) से प्राप्त होते है। की मात्रा जो आयन रूप में मात्र दस ग्राम प्रति लीटर है। ये आयनिक रूप है। सर्वाधिक मात्रा सोडियम तथा क्लोरीन (धन तथा ऋण आवेशित) की है। पर यह सर्वाधिक मात्रा भी पर्याप्त कम है इस शरीर खेल को बनाए रखने में। वेद इस व्यवस्था को नव इसलिए कहता है कि यह व्यवस्था सतत चल व्यवस्था है ठहरी व्यवस्था नहीं है। खून में नमक की मात्रा कम ज्यादा होने का संतुलन वृक्क व्यवस्था करती है। नमक की मात्रा कम हो जाने पर वृक्क से मूत्र के जरिए नमक की निष्कासन व्यवस्था दस मिलीग्राम प्रति दिवस अधिकतम सीमा पर ठहर जाती है। पर पोटेशियम की प्रति दिवस निष्कासन मात्रा हर स्थिति २४० मिलीग्राम ही रहती है क्योंकि इसकी कमी शरीर में होती ही नहीं है खाद्य पदार्थों में यह प्रचुर है। नमक पसीने में भी बह जाता है अतिरिक्त नमक खाने का यही उपयोग है।

एक रक्तिम धातु जो कोशिका में नहीं मिलती पर शरीर की सख्त जरूरत है तथा जिसके बिना शरीर की लाल रक्त कोशिकाएं आकार में बड़ी पर मात्रा में कम हो जाती हैं ये कोशिकाएं सामान्य अर्धजीवन १२५ दिन की तुलना में मात्र चालीस दिन जीती है और मर जाती हैं। उस धातु का नाम है कोबाल्ट। इसके अभाव में जो बीमारी होती है उसका नाम है "पर्नीसियस रक्ताल्पता" जिसमें दवा न लेने पर मृत्यु तय है। यह विटामिन बी १२ में पाया जाता है। शरीर को यह मात्र १२ मिलीग्राम जरूरत है। १२ मिलीग्राम अत्याधिक कम मात्रा होते हुए भी $१०^{२०}$ परमाणु है जबकि शरीर की सारी कोशिकाएं $१०^{१३}$ के करीब है। यह कोबाल्ट अयस वर्ग धातु शरीर में ओषजन ले जाने वाली कोशिकाओं का आकार-प्रकार तथा संख्या नियंत्रण करता है मृत्यु बचाता है। यह शरीर में साइनोकोबाल्वेमाइन $C_{63}H_{88}O_{14}N_{14}$ रूप में रहता है। शरीर अद्भुत रासायनिक कारखाना है। यहां आणविक स्तर पर परिवर्तन मद्विम ताप भट्ठी में होते है। शरीर की साइनोकोबाल्वेमाइन की प्रतिदिवसीय खपत मात्र एक या दो माइक्रोग्राम

के मध्य की है। आंतों के बैक्टीरिया साधारण पदार्थों से साइनोकोबाल्वमाइन का निर्माण करते हैं कुछ शरीरों में इस सूक्ष्म व्यवस्था का संतुलन बिगड़ जाने से यह आंतों में शोषित नहीं होता है परिणामतः पर्नीसियस एनीमिया होता है।

"देव-काव्य और नोबल पुरस्कारों की मूर्खता"

शरीर देवस्य काव्य है इसमें नोबल पुरस्कारों की मूर्खतापूर्ण भरमार है। यह शब्द सोच समझकर लिख रहा हूँ कारण सारे शरीर नोबल पुरस्कार टुकड़ा-टुकड़ा सच हैं जो पूरे सच नहीं होते है। सर्व से अंश नियम का इन पुरस्कारों में पालन नहीं होता है। आत्मायुक्त शरीर सचैतन्य शरीर एक अत्यन्त जटिल संपूर्ण अन्तर्सम्बन्धित व्यवस्था है। इतनी जटिल कि आंख अणुगुणित तैंतीस (विज्ञान की खोज ११ हजार तक) रंग संमिश्र, जीभ अनुगुणित तैंतीस (विज्ञान की खोज १० हजार तक) स्वाद संमिश्र, नासिका भी अनुगुणित तैंतीस (विज्ञान की खोज १७ हजार तक) गंध संमिश्र पहचान सकते हैं, कर्ण अनुगुणित तैंतीस संमिश्र तथा स्पर्ष अनुगुणित तैंतीस संवेदन संमिश्र पहचान सकते हैं और ये सारे संमिश्र अक्ष-र हैं तथा इतने प्रकार के कोशिका में असंतुलन से संतुलन (अंश मृत्यु अहसास) है। इन अहसासों से परे है मन बुद्धि अर्थ महत् के इनसे संयुक्त व्यापार तथा इसके पार शरीर में सूक्ष्मतर आत्मा एजति-एजति। तथा इसका हर अध्ययन संपूर्णता को ध्यान में रखते ही होना चाहिए। कल किसी वैज्ञानिक को ताम्र शरीर में दुर्लभ तत्व द्वारा रक्त नियन्ता व्यवस्था द्वारा ओषजनादि सन्तुलन पता चल जाए या रजत या स्वर्ण पहनने से आणविक स्तर पर तन द्वारा इन धातुओं के ग्रहण परिवर्तन (आणविक स्तर के) तथा इनके द्वारा प्राण व्यवस्था के सशक्तीकरण का तथ्य पता चल जाए या पाचन रस (जिसमें तीव्र उदकाम्ल हाइड्रोक्लोरिक एसिड) में "अन्तः सार तत्व" जिसके कारण हरित, रजत, अयस धातुओं के नवरूपों का परिवर्तन ग्रहण होता है और इस पर सबको नोबल पुरस्कार मिल जाए.. जो मिल ही जाएगा तो इससे शरीर के संपूर्ण तथ्य संपूर्ण जीवन शक्तिमय स्वरूप जो इससे कहीं सूक्ष्म कहीं प्रभावशाली कहीं विद्युतीय है के संबंध में क्या ज्ञान वृद्धि होगी? बेशक इन खोजों को भौतिकता के क्षेत्र में बड़े-बड़े सूर्य (नवीयोपदम् अक्रमुः रुचे जनन्त सूर्यम्) कहा जा सकता है.. इन सूर्यों का आह्लाद वैज्ञानिकों को मिलता है.. पर वह आह्लाद क्या कांच में कैद मछलियों को देखने के शिशु आह्लाद से बड़ा है? आणविक इलेक्ट्रॉन सूक्ष्मदर्शी से इलेक्ट्रानों की गति-प्रगति-अवगति-उनगति का अवलोकन दर्शन वैज्ञानिक को यदि आह्लाद को मापा जा सकता है तो वही आह्लाद देता है जो शिशु को कांच से बक्से में कैद मछलियों के नूतन अवगति-उनगति से प्रथम बार मिलता है.. दोनों ''अक्ष-र'' अक्ष= इन्द्रियों के बाह्य रमण के आह्लाद हैं। इस आह्लाद का ''अ-क्षर'' अपरिवर्तनशील का क्षर में अवलोकनाह्लाद क्रम में उन्नयन होना 'मानव-आह्लाद', 'ऋषि आल्हाद', 'आप्त आह्लाद' है।

"अध्यात्म-आह्लाद"

शारीरिक भौतिकी तथ्य आह्लादों का उद्देश्य अंश-अंश मृत्यु को ठोकर लगाना है। **मृत्यु है ही नहीं से अध्यात्माह्लाद का आरंभ होता है।** शारीरिक भौतिक तथ्यों का आधारभूत तथ्य मैं यहां लिख रहा हूं जो बुद्धि औजार प्रणीत है- हम इलेक्ट्रॉन से प्रारंभ करें.. न्यूट्रॉन प्रोटान एन्ट्री प्रोटान, एन्टी न्यूट्रॉन पोजान आदि इलेक्ट्रॉन के तुलना में बड़ी स्थूल इकाइयां है.. इन इकाइयों में विज्ञान अभी धलेक्टॉन तक नहीं पहुंचा है। धलेक्ट्रॉन वह केन्द्रक सार है जिस पर ''धन विद्युत आयन'' विद्यमान है.. इलेक्ट्रॉन पर ऋण विद्युत अयन विद्यमान है.. कसौटी की कसौटी क्या होगी? इलेक्ट्रान यन्त्र से तो सूक्ष्मतम नापा जाता है, इससे लघु है फोटान, वर्तमान विज्ञान इससे भी सूक्ष्म अवधारणा तक पहुंच गया है वह है इलेक्ट्रॉन प्रोटान तथा न्यूट्रॉन मात्र विद्युत तरंगे हैं। इलेक्ट्रॉन ऋण आवेशित, प्रोटान धन आवेशित (मूल तत्व) न्यूट्रॉन अनावेशित। अनावेशित द्वि आवेशित है यह हर पदार्थ का त्रि सत्याधार है।

"गतित गतिदाता"

इस त्रि सत्याधार का सत्याधार क्या है? लट्टू या फिरकनी या डोलती फिरकनी या उलटता लट्टू (एक विशेष खिलौना जो चलते-चलते उलटा चलने लगता है) बस इसी तरह का कुछ जिसे कहते हैं क्वार्क। क्वार्क भी छः प्रकार के सोचे गए हैं.. इसमें प्रकम्पन है आधे, शून्य, एक दो चक्र के प्रकम्पन। मानना है कि अर्ध प्रकम्पनों की अनिश्चिता से यह विश्व पदार्थ बना है तथा शून्य से एक दो चक्र प्रकम्पन से सन्तुलन असन्तुलन व्यवस्था बनी है.. यह भौतिक विज्ञानी खोज है। इलेक्ट्रॉन के साथ एक और तत्व है एनीइलेक्ट्रॉन तथा इलेक्ट्रॉन आधा चक्र प्रकम्पित है। यहां तक वैज्ञानिकों की पहुंच है। चिकित्सा विज्ञान को अभी यह खोजना है कि आधा स्पिन में त्रुटि हो जाने पर शून्य स्पिन में त्रुटि हो जाने पर तथा एक दो स्पिन में त्रुटि हो जाने पर क्या शारीरिक विकृतियां होती हैं? चिकित्सा विज्ञान को अभी कई-कई और नोबल पुरस्कार मिलने हैं? इन क्वार्क से भी सूक्ष्म तथ्य है शक्ति जो ये क्वार्क वहन करते हैं और इस शक्ति की प्रतिक्रिया जिससे फोटान निकलते है और फोटान प्रक्रिया जो माण्डूक्य प्लुत कूद-कूद कर चलती है और इस सबसे रहस्यपूर्ण है उस फोटान की कूद के मध्य का अज्ञेय अन्तराल.. जहां हर कूद का पुर्नजन्म होता है। चिकित्सा के क्षेत्र में इस क्षेत्र का बौद्धिक औजार प्रणीत सत्य है सरल या वैदिक शब्द **एजति-एजति-** "गतित गतिदाता" यह गतियों की गति है.. शरीर में यह विश्व की भौतिकीय गतियों में तीव्रतम गति है। यही 'गतित' मोक्ष में अव्याहत गति प्राप्त होता

है। एजति-एजति का गतित है आत्मा जो समस्त बीमारियों कैंसर से लेकर स्थूल फोड़े तक की जड़ है। कैंसर से फोड़े तक तो मात्र लक्षण हैं छोटे-बड़े जो आत्म विकृति से आरंभ होते हैं पंच कोष स्वरूप हैं।

जीन तो बड़ी स्थूल अवस्था है। क्लोन प्रतिरूप तो बड़ी बकवास सी बात है। सम्पूर्ण दृष्टि का इनमें अभाव है। सारी भौतिक खोजें तो छोटे-छोटे से कंकड़ हैं छोटी-छोटी सी लहरें है - एजति-एजति की। और एजति-एजति है सत्य "तदेजति तन्नेजति" (यजुर्वेद) का जो सत्य है जीवन मृत्यु का।

"अगतित सर्वगतिदाता"

सहस्रशीर्ष, सहस्राक्ष, सहास्रपात इस विज्ञान को पुरुष सम्मत पुरुष सम्पूर्ण आधारित होना करना होगा। सहस्रशीर्ष सहस्राक्ष, सहस्रपात बाह्य अक्ष-र न मम दृष्टि से सहस्रशीर्ष सहस्राक्ष, सहस्रपात- अ-क्षर मम दृष्टि से विचारना होगा तब मृत्यु रहस्य कि मृत्यु है ही नहीं सुलझ जाएगा।

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

स भूमिꣳ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।। (यजु. ३१/१)

"सहस्रों शिरों के शिरयुक्त.. सहस्रों चक्षुओं (इन्द्रियों) के चक्षु युक्त.. सहस्रों पगों के पग युक्त... ऐसा इन्हें घेरता सब ओर से पांच स्थूल भूत, पांच सूक्ष्मभूत अवयवी पुरुष.. इन सबसे पृथक स्थित (एजति-एजति) कम्पनशील कम्पन दाता है।" यह जीवात्मा के सन्दर्भ का तथ्य है जो वेद में कहा गया है। सहस्रों व्यवस्थाओं की सावयवी एक व्यवस्था है शिर, सहस्रों आंखों की सावययी एक व्यवस्था है आंख (उसी प्रकार कान, नाक, वाक्, त्वक्).. सहस्रों चालन सन्तुलन व्यवस्थाओं की एक सावयवी व्यवस्था है पग (हाथों समेत), इन व्यवस्थाओं की पांच स्थूल भूत पांच सूक्ष्म भूतमयी एक सावयवी व्यवस्था है.. जिससे हटकर सार तत्व है यह चैतन्य।

पुरुषऽएवेदꣳ सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम्।

उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनाति रोहति।। (यजु. ३१/२)

जो उत्पन्न, उत्पत्ति योग्य, उत्पन्न होने वाला, मम ग्रहण व्यवस्था से अति वृद्धि प्राप्त करता उस तथा इस प्रत्यक्ष परोक्ष रूप जगत को अमृत का कारण, सर्व सहज नियन्ता पुरुष ही रचता है। "एजति-एजति" सार है फोटान से भी सूक्ष्म से फोटान से शक्ति से क्वार्क से अणु-परमाणु से, जीन से कोशिका से विभिन्न प्रणालियों से बंधे इस सावयव का जो एक है। वह मृत्यु नहीं मरता।

"आग्रतः जातं यज्ञं पुरुषः" को **बर्हिषि प्रऔक्षन तेन अयजन्ततम्** करते हैं तथा अन्तऋर्षि प्रऔक्षन तेन अयजन्ततम करते हैं। पूर्व उत्पन्न सम्यक ज्ञातव्य पुरुष को विद्वान, साध्या ऋषि अन्तर् में प्र-औक्षन सूक्ष्मतम सूक्ष्मतम स्वरूप एजति एजति तदेजति तन्नैजति सींचते है- अयजन्ततम करते हैं तथा बर्हिषि भी (बाह्य साधनों से) सूक्ष्मतम स्वरूप सींचते है अयजन्तम करते हैं।

अन्तर्प्रऔक्षन- एजति एजति- तदेजति तन्नेजति सूत्रस्य सूत्र यह ज्ञान साध्या (साधना निष्णान्त-आत्म के आत्म पहुंचे) समझ सकते हैं। तथा बहिः प्रऔक्षन श्रम तप ऋत से एकाग्र वैज्ञानिक ज्ञान- अज्ञान अज्ञान-ज्ञान क्रम बढ़ते निश्चय अनिश्चय के समुंदर में डूबते बढ़ते रहते हैं इसी सत्य की ओर। साध्य साधन से छोटा नहीं होता वैज्ञानिक भूलते हैं तथा साधन से साध्य ढूंढते हैं इस ढूंढ में नोबल पुरस्कारों की लंबी श्रृंखला है पर सच्चा काम वे कर गये है जिनें नोबल पुरस्कार मिल ही नहीं सकता है।

"खोज लो! नोबल पुरस्कार पा लो"

जीवन मृत्यु रहस्य की विज्ञान श्रृंखला हम संक्षेप में कुछ नोबल पुरस्कार प्राप्त श्रृंखला में देखें। **पर्नीसियस रक्ताल्पता** का इलाज कोबाल्ट मिश्र विटामिन बी-१२ लीवर सार रूप में देना है की खोज ने पर्नीसियस रक्ताल्प मरीजों को मृत्यु पर विजय प्राप्त कराई.. और १६३४ में इसके लिए मिनोट (Minot) मर्फी (Murphy) तथा व्हिप्पल (Whipple) को चिकित्सा नोबल पुरस्कार मिला। निःस्वाद बहुमूत्र (Diabetes insipidies) का इलाज पीयूषिका ग्रंथि से स्रावित हारमोन वासोप्रोस्सिन है.. पीयूषिका त्रुटि के कारण वासोप्रोस्सिन (Vasopression) की कमी वृक्क मूत्र नियन्त्रण समाप्त कर देती है अतः शारीरिक जल संयमन व्यवस्था लड़खड़ा जाती है। वासोप्रेस्सिन आठ अमीनों एसिडों (खून के हेमोग्लोबिन में छै सौ एमीनो एसिड हैं) से बने के संश्लेषणकर्ता विन्सेंट डु विग्नेऔड को १६५५ में नोबल पुरस्कार मिला। पर वासोप्रेस्सिन किस पद्धति से कार्य करता है वृक्क में इससे क्या होता है पता नहीं है.. आप खोज लो! नोबल पुरस्कार शायद मिल जाए। वासोप्रेस्सिन पहला प्रोटीन हारमोन था.. सारे हारमोन प्रोटीन के नहीं होते हैं.. अन्तः स्रावी ग्रंथियों (योग जिन्हें शक्तिकृत स्वस्थ करता है) खून में अन्तःस्राव (हारमोन) स्रवित करती है।

मितस बहुमूत्र (Diabetes Melpitus) जिसका पता भारत में पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व से है.. जिसे मधुमेह कहा जाता है. . यह पक्काशय (Pencreas) अंतस्रावी ग्रन्थि से निसृत इन्सुलीन की कमी बहुमूत्र का कारण होती है.. पक्काशय में पाचन एंजाइम भी पैदा होते हैं जो इसे विच्छेदित कर देते हैं- समस्या इन्सुलिन को पाने की थी। एफ.जी.(Diabetes insipidies) बेंटिग तथा

सी.एच.बेस्ट इसे बिना एंजाइमों द्वारा नष्ट हुए अलग करने में सफल हुए और मानवता हित मानव को मधुमेह से अस्थाई मुक्ति दिलाने सफल हुई.. परिणामतः वे नोबल पुरस्कार के अधिकारी सन १९२३ में बने।

"मृत्यु को ठोकर"

चय अपचय वह रासायनिक तथ्य है जो लाखों करोड़ों अरबों रासायनिक कोशिका कारखाने सतत कर रहे हैं.. सारी मूल त्रुटियों जो मानव को मृत्यु की ओर ले जाती हैं.. चय अपचय (मम न मम सातत्य) अव्यवस्था से होती है। और यह अव्यवस्था मोटे तौर पर श्रम, तप, ज्ञान, ऋत सत्य, यश (अथर्ववेद १२/५/१,२) जो सुरचना तत्व है के लंघन अतिलंघन से होती है। कृषि करते वेद गाने का प्रावधान महान स्वास्थ्य नियम है जिससे मृत्यु को ठोकर लगती है। संसार में दीर्घायुओं का विश्लेषण दर्शाता है कि श्रम तप लोकगीत युक्त ही दीर्घायु हुए हैं। श्रम, तप, ज्ञान, ऋत, सत्य, यशमय जीवन जीने वाले को कभी मधुमेह नहीं होता. . अन्य बीमारियां भी नहीं होती हैं। इसमें साथ सात्विक खान-पान से रहन-सहन हो तो संपूर्ण एंझाइम, आणविक, हारमोन, विटामिनादि व्यवस्थाएं भी ठीक रहती हैं। ऐसे व्यक्ति को नोबल पुरस्कार खोजें बेकार हैं।

"व्यक्त अव्यक्त गति"

जीवन मृत्यु रहस्य अति सूक्ष्म अवस्था के असन्तुलन से सम्बन्धित है। विश्व पांच तत्वों का खेल है। चार इसमें शक्तियां हैं इन चार शक्तियों पर पांचवी शक्ति सबल हैं पांच तत्व भौतिकी हैं। चुम्बकीय शक्ति, प्रकाश शक्ति, विद्युत शक्ति, गुरुत्व शक्ति, एवं समय। समय अविच्छिन्न एक दिश अग्र गतित है। चुम्बकीय शक्ति की गति का आधार चुम्बकान है.. चुम्बकान लघुकण तरंग है। प्रकाश शक्ति लघुकण **प्रकाशान** (फोटान) है जो लघुकण तरंग रूपी है विद्युत शक्ति कण **विद्युतान** (इलेक्ट्रॉन) है और गुरुत्वाकर्षण शक्ति कण **गुरुत्वान** (ग्रेवीटान) है। शक्ति लघु तरंग रूप है जो मांडूक्य प्लुत गति गतित है.. यह गति व्यक्त अव्यक्त प्रतीत होती है।

मेंढ़क जीवन ही व्यक्त अव्यक्त है। अव्यक्त अवस्था स्वेच्छया मिट्टी घसन अति लघु श्वास-प्रश्वसन आधार अल्पतम शक्तिव्यय है। व्यक्त अवस्था उछलकूद है। शक्ति तरंगे भी व्यक्त अव्यक्त हैं। अन्तराल न्यूनता सातत्य भ्रम देती है। अव्यक्त अवस्था में क्या होता है? नोबल पुरस्कार प्रश्न है। इन चारों शक्तियों का साम्य कहां है? एकक क्षेत्र कहां है? कौन सा है वह पदार्थ जो सन्दर्भ सूक्ष्म आधार है? इन शक्तियों का शरीर में निसन्देह अस्तित्व है। शरीर में इलेक्ट्रॉन है। शरीर है ही इलेक्ट्रॉन व्यवस्था का शक्तिकृत रूप। शरीर में एन्टी इलेक्ट्रॉन है क्वार्क है, एन्टी क्वार्क है पर शरीर में जो सबसे अद्‌भुत चीज है वह है पांचवीं शक्ति जिसका नाम है **जैवशक्ति**। इस जैव शक्ति की तरंगे हैं जिन्हें चैतन्यान कण निर्मित कहा जा सकता है अणोरणीयान चैतन्यान का ग्रेवीटान से भी अत्यन्त सूक्ष्म होना चाहिए। यह चैतन्यान वितरण ही है जो सारे शरीर में वह असन्तुलन बनाए रखता है जो जीवन का लक्षण है। चैतन्यान चैतन्य उद्‌भूत है। चार शक्तियों का शरीर में असन्तुलन (विज्ञान को खोजना है) चैतन्य का प्रभाव है। इस प्रभाव से शरीर में आण्विक स्तर के कई-कई असन्तुलन हैं। इन असन्तुलनों का जो प्राकृतिक नहीं वरन कृत्रिम है तथा मात्र शरीर में प्रकृति विरुद्ध है अस्तित्व ही आत्मा की भौतिक सिद्धि का प्रमाण है। विज्ञान चिकित्सा के क्षेत्र में अभी बड़ा ही स्थूल है। इलेक्ट्रॉन तथा परमाणु असंतुलन (मस्तिष्क कोषिका झिल्ली में) या क्षारीय खून में अम्ल कार्बन द्वि ओषिद (HCO_3) रूपी न घुलकर ओषजन घुलने का जस्ते के परमाणु नियन्त्रण का असन्तुलन आदि आदि ही ढूंढ सका है। विज्ञान को इससे आगे ॲण्टि इलेक्ट्रॉन, फोटान, ग्रेविटान, चुम्बकान परमाणु के परमाणुओं के शारीरिक असन्तुलन का पता लगाना है। और यहीं नहीं ठहरना है, इससे आगे उसे और सूक्ष्म शक्ति स्तर पर (१०० गीगा इलेक्ट्रॉन वोल्ट विद्युत शक्ति) डब्ल्यु प्लस, डब्ल्यु माइनस, झेड प्लस, झेड माइनस के असन्तुलन के चैतन्य सत्यों का पता लगाना है। और इससे भी सूक्ष्म और कम स्तर के शक्ति स्तर पर डब्ल्यु प्लस, डब्ल्यु माइनस, झेड प्लस, झेड माइनस (अल्प सत्व ऋण धन महा सत्व धन ऋण) के और भारी और लघुतम शक्ति तरंगों के जैविक चैतन्य असन्तुलन (वर्तमान में संतुलन ज्ञात है) का पता लगाना है। यहां तक भौतिक रूप में (अल्प महा सत्व) अब्दुल सलाम तथा वेन वर्ग पहुंचे थे जिन्हें १९७९ नोबल पुरस्कार मिला था। इससे आगे फोटान में तीन भारी टुकड़ों सूक्ष्मतम तरंग दैर्घ्य युक्त का पता कार्लो रूबिया एवं साइमन वानडेर मीर ने लगाया। इससे आगे मशीनों की पहुंच अभी तक नहीं है। पर बुद्धि साधन से इससे भी आगे से आगे का सच शरीर में आत्मतरंग तथा तद् एजति एजति है, तथा अन्तिम सत्य तदेजति तन्नेजति है, जहां तक भारतीय ऋषि पहुंचे हुए हैं। काश पाश्चात्य वैज्ञानिक यह सत्य तदेजति तन्नेजति जानते तो इतने नोबल पुरस्कार न भटकते। वे भटक रहे हैं इसी सत्य तक पहुंचने के लिए। भटके रोगी को रोग ही सूझता है।

"चैतन्य ऋत असंतुलन तथा ऋत संतुलन"

परमात्म, आत्म, बुद्धि, मन, विषय, असंतुलन □ संतुलन □ अपदार्थ □ फोटान सूक्ष्म तरंग □ पदार्थ दुनियां- संसार का आखिर मृत्यु का क्या संबंध?

हम बता आए हैं कि 'ऋत' प्रकृति संतुलन का नाम है। वैज्ञानिक असंतुलन - संतुलन तरंगों में आज भी बढ़ रहे हैं।

एकक सिद्धान्त गुरुत्व को कमजोर मानते छोड देता है। अध्यात्म इसे कमजोर नहीं सूक्ष्म प्रकृति मानता है। सूक्ष्म धरातल कमजोर नहीं होता है। गुरुत्व सूक्ष्मतम (गुरुत्व से गुरुत्व) के असंतुलन में चैतन्य की पहचान है। ऋत प्रकृति संतुलन का नाम है। चैतन्य ऋत असंतुलन तथा ऋत संतुलन का नाम है। **ऋत शाश्वत प्राकृतिक नियमों का नाम है। शृत शाश्वत नैतिक नियमों का नाम है।** शरीर में एक चैतन्य असंतुलन है प्रकृति में एक जड़ संतुलन है। ब्रह्म एक चैतन्य संतुलन है। शरीर प्रकृति उद्भूत सुकृति है। आठ चक्र, नव द्वार, अजेय पुरी, सुखम् रथम् पुरोहितम् (हित ही हित देनेवाला पुर) आदि शरीर है। ऊर्ध्व अश्वत्थ भी इसका अपूर्व नाम है।

"सर्वनाश पथ"

वेद में एक मन्त्र है- "असूर्यलोक है अन्धकार आवृत आत्महना की गहन गति के लिए" वेद में निर्देश है- सुखं रथम् शरीर का आरोहण करो। आरोही है आत्मा, सारथी है बुद्धि, लगाम है मन, घोडे हैं इन्द्रियां, रथ है शरीर, विषय हैं पथ (कठोपनिषद)। गीता में एक विज्ञान है सर्वनाश पथ जाने का- ध्यान विषय का संगेच्छा संग काम क्रोध संमोह स्मृति भ्रंश बुद्धिनाश सर्वनाश। इसकी औसतः भौतिक व्याख्या संभव है। (परिशिष्ट- 'एकी चिकित्सा' देखें)

सांस्कृतिक भारतीय मृत्यु अमृत विज्ञान सप्त ऋषि, पांच कोष, सांख्य सत्रह तत्व, त्रि गुण, गीता विवेचन- सर्वनाश क्रम, कठोपनिषद- आत्मा रथी, बुद्धि सारथी, मन लगाम, इन्द्रिय घोडे, शरीर रथ, विषय पथ, (गीता का विवेचन सर्वनाश क्रम या वेद का आत्महना क्रम), कर्मफल, चार पुरुषार्थ, सोलह संस्कार, चार आश्रमादि आधारित सुव्यवस्थित पूर्ण है। यह नकारात्मक निराशावादितापूर्ण रुदन उत्पन्न नहीं है।

शरीर को तो भस्म होना ही है।

"भस्मान्तं शरीरम्"

भारतीय संस्कृति मृत्यु-जीवन चिंतन में सामान्य जीवन में मृत्यु का सहज स्वीकार है। मृत्यु संस्कार का प्रावधान है जो सुस्थापित है। "भस्मान्तं शरीरम्" सत्य है कि शरीर को तो भस्म होना ही है। मात्र यही तथ्य भारतीय संस्कृति को विज्ञान से महान सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है। इसकी सावयवी तथा सर्व से अंश एक महान संकल्पना है जो विज्ञान के टुकड़े टुकड़े सत्यों से कहीं परे है। विज्ञान की खस्ता हालत (प्रकृति सत्य सन्दर्भ में जड़ सन्दर्भ में) इस तथ्य से भी सिद्ध है कि वह 'जीन' को जीवनाधार मानता है। यदि जीन मानव बीज है और हर कोषिका (रक्त, स्नायु, हड्डी, आदि) का आधार एक ही जीन है तो इन कोषिकाओं में विभिन्नता क्यों? स्पष्ट है जीन जीवन एकक जीवन बीज नहीं हो सकता है तथा हर जीव में जो रक्त, मस्तिष्क, हड्डी, मांसादि में है विभिन्न है। तथा जीन में ही इस विभिन्न विकास के बीज हैं। अतः हर जीन अलग है संरचना में। और मानव मूलाधार कहीं और है। कोषिका कोषिका जीन में विभिन्नता आधार तथा समाधार ढूंढना विज्ञान के वे क्षेत्र हैं जहां मानव को अभी पहुंचना है।

"विज्ञान-भ्रम"

दो व्यक्ति जा रहे थे- एक नें कहा "लगता है कार आ रही है।" दूसरे ने कहा "मालूम नहीं" पहला बोला "अभी एक कार आएगी" दूसरा- "नहीं आएगी" कार आकर रुकी। पहले ने कहा "देखो कार आ गई" दूसरे ने कहा- "दिखाओ" पहले ने दरवाजे पर हाथ रखकर कहा- "यह है" दूसरा बोला- "यह तो दरवाजा है कार नहीं" दूसरे ने कहा- "यह कार है" पहला बोला "अभी तुमने जहां हाथ रखा वो बोनट है कार नहीं" इस घटना से इतना तो सिद्ध है कि विज्ञान को भ्रम है पर धर्म को भ्रम नहीं है। विज्ञान जीवन को, मनुष्य को, मृत्यु को टुकड़े-टुकड़े देखता है पर धर्म एक सम्पूर्णता से देखता है।

"अहं देहास्मि"

रथ है शरीर, रथी है आत्मा। रथ पहिया है मानव, गलत है विज्ञान, रथ पहिए की बीमारी ठीक हो जाने से क्या बीमारी मानव को ठीक हो जाएगी? फ्ल्यू का दवा (न मम) इलाज कराने वाले को बार बार जल्दी-जल्दी फ्ल्यू होता है, फ्ल्यू का मम इलाज करने वाले को जल्दी-जल्दी फ्ल्यू नहीं होता। और फ्ल्यू का एकी इलाज करने वाले को फ्ल्यू कभी नहीं होता। रथ से रथी तक है मानव। "अहं देहास्मि", "अहं ब्रह्मास्मि" एक महत शरीर परिवर्तन सत्य है। इस सत्य के मध्य है कहीं पुनर्जन्म सत्य। "मै हूं देह में" "मैं हूं ब्रह्म में" मै हूं देह देह मध्य में, मैं हूं देह ब्रह्म मध्य में। पर इस सफर का नियन्ता मैं हूं, दूसरे की हाथ की नियमबद्ध डोर बंधा। दूसरे के हाथ की डोर है ऋत, शृत। नियन्ता है ब्रह्म।

व्यतिरेकस्तद्भावाभावित्वान्न तूपलब्धिवत् (वेदान्त-३/३/५४) देह तथा आत्मा में व्यतिरेक- अलगाव- भेद है। देह तथा आत्मा में तद्भाव (यही हूं मैं) का अभाव है। इन्द्रिय से ज्ञान उपलब्धि है। शरीर से आत्मभान है। पूरा शरीर आत्मा की जैव शक्ति के कारण जड़ संतुलन से उच्च जैव संतुलन है। जिसका लक्षण जड़ शक्ति असंतुलन है। उच्च जैव संतुलन में विचलन से जड़ शरीर शक्ति असंतुलन संतुलन की ओर बढ़ता है, यही मृत्यु की ओर बढ़ना है। एक अवस्था शरीर शक्ति असंतुलन सीमा से बाहर असंतुलित हो जाता है। तब जैव शक्ति संतुलन (सूक्ष्म शरीर) और जैव शक्ति सूक्ष्म शरीर ब्रह्म नियमानुरूप (वासांसि जीर्णानि) छोड

देती है और नव शरीर धारण करती है यह पुनर्जन्म है। तब 'मै' हकीकत राय हो जाता है, 'मैं' हरिश्चन्द्र हो जाता है। "अहं देहास्मि" होता है।

"अहं ब्रह्मास्मि"

अक्षर इसे सटीक दर्शाता है। 'अ' जैव शक्ति है, क्षर परिवर्तनशील (असंतुलन-संतुलन) अवस्था है। अक्ष- इससे संबंध ा साधन है। तथा र इसमें रमण है। यहां देकार्त, लाक दर्शन समन्वय हेगल संवाद है। मैं सोचता हूं- नहीं सोचता हूं- अर्थात मैं हूं - 'अ'। मन बदलते चित्रोंवाला आइना है- 'क्षर'। बाह्य चित्र इन्द्रिय माध्यम से बदलना है- (अक्ष)। बदलने में सम्पूर्ण अहसास है- 'र'। यह अहं देहास्मि क्रम है। अक्षर अहं ब्रह्मास्मि क्रम भी है। क्षर है परिवर्तनशील तन - अक्ष है इससे हट भीतर की ओर गमन। अक्षर है देवभाज- देव को समर्पित भाव- जैवशक्ति दैदिप्यमान तन सहित परिशुद्ध आत्म। और 'अ' है वह देव जिसे समर्पित है आत्म- और स्वीकार है अगर देव का तो है अहं ब्रह्मास्मि। यह है स्वस्ति-स्वस्ति। स्वस्ति- सु अस्ति।

"स्वयं का स्वयं में अस्तित्व"

स्वस्ति है स्व अस्ति या स्वयं का स्वयं में अस्तित्व। मानव है स्व स्वरूप और सु अस्ति है मानव की सु श्रेष्ठ में अस्ति अर्थात शुभ अस्ति या ब्रह्म अस्ति या अहं ब्रह्मास्मि। स्वस्ति का पूर्व चरण है स्वस्थ अर्थात स्व-स्थ। स्वयं की स्व में स्थिति। स्वस्थ मानव को 'तन' का भान ही नहीं होता है। वह सहज स्व आह्लादित होता है। इससे पूर्व अवस्था है अस्वस्थ। अर्थात स्व स्थिति नहीं अर्थात तनस्थ- शरीरस्थ अर्थात दर्दस्थ। और दर्दस्थ से अगली स्थिति है मृत्युस्थ या देहस्थ या देहास्मि। हर व्यक्ति को मृत्युस्थ की क्षणिक अनुभूति हो चुकी है। यह कोई काल्पनिक सत्य नहीं है। "हाय मैं मर गया" दर्दस्थ की अन्त्य अतिकम अवस्था है। दर्दस्थ की इसी अवस्था का अन्त्य में परिवर्तन होता है तथा मानव अहं देहास्मि हो जाता है। 'अहं देहास्मि' वैज्ञानिक मानते हैं कि डिम्बाणु और शुक्राणु के सह भिदन से एक कोषिका का निर्माण होता है। महिला के २४ जोड़े क्ष क्रोसमोस और मनुष्य के २४ जो क्ष - य क्रोसमोस में से द्वि जोड़ों के समूह से सह भिदन कोषिका का विकास प्रारम्भ होता है। एक द्वि चतुः विभाजन बढ़ता चला जाता है। इस एक कोष में अनुवांशिकता होती है। इसका आधार जीन होता है। विज्ञान मानता है कि जीन मानव का केन्द्रक है (परमाणु के केन्द्रकवत)। एक जीन का आयतन $१०^{-१७}$ धन से भी है। एक परमाणु का आयतन $१०^{-२३}$ है। जीव में दस लाख परमाणु हैं। हम कह आए हैं जीन बड़ी स्थूल चीज है। परमाणु भी स्थूल चीज है। शक्ति कण भी स्थूल है। क्वार्क, एण्टी इलेक्ट्रॉन भी स्थूल है। सूक्ष्मतम से सूक्ष्मतम है तदेजति एजति इससे सूक्ष्म है तन्नेजति तदेजति। धर्म विज्ञान से ज्यादा निश्चयात्मक बुद्धि रखता है। अहं देहास्मि अतिसूक्ष्म धारणा है।

"आत्मनिकटता"

गर्भ विकास का आधार डिम्बाणु शुक्राणु सहभिद कोषिका नहीं है। तभी तो अद्वितीय माता पिता आधारित नहीं है। ज्ञान प्राप्ति जीन आधारित नहीं होती है। पिट (इंग्लैण्ड के वक्ता) (१७०८ - ०१८८) की (१२) बुद्धि लब्धि १६०, वॉल्टेयर (१६९८ - १७७८) की १८०, कोलरीज- (१७७२ - १८३४) की १७५, बैथम और मैकॉले (१७४८ -१८३२, १८०० -१८५९) की १८० गेटे की (१७४९ - १८३२) -१८५ तथा जान स्टुअर्ट मिल की १९० थी। तुलना में शंकराचार्य, दयानन्द, शुकदेवादि की इनसे कहीं अधि ाक ठहरेगी। इसका कारण आत्मनिकटता है। यह आत्म निकटता प्रवहणशील है मृत्युपार भी।

"पुनर्जन्म"

पुनर्जन्म सिद्धान्त "अहं देहास्मि" की उपज है। मैं देह नहीं हूं, देह में हूं। तभी तो मेरा सातत्य है। विश्व के इतिहास प्रसिद्ध विद्वान इस तथ्य में विश्वास करते रहे हैं। पाइथागोरस छब्बीस सौ वर्ष पूर्व पांच कोषों को (Sheaths) को सूक्ष्म शरीर के रूप में (अरविन्द की व्याख्या इसी के समान थी) मानता था। वह तत्व विवेचना में सांख्य तुल्य था। प्लेटो फीडो में दो तत्व मानता है- एक नष्ट दूसरा अनष्ट। अनष्ट तत्व यात्री है। अवतार परंपरा में सारे विश्व का विश्वास है- यह पुनर्जन्म धारण ही तो है। संत ऑगस्टाइन आत्म स्वीकृति में कहता है- "क्या माता गर्भ पूर्व मैं अन्य शरीर में न था?" ब्रूनो, शॅपेनहॉवर, वर्डस्वर्थ, टैवोसन, ब्रॉडनिंग सभी की पुनर्जन्म में आस्था रही। भारत में तो वेदों से लेकर भक्त कवियों तक में आत्मा की अमरता की अविरल धारा प्रवाहित रही है। आम धारण है कि जन्म तथा मृत्यु कर्मफल परिणाम है।

"कर्मगति गहनतम है"

कर्म निष्फल नहीं होता कर्मफल तत्काल भी नहीं मिलता। इसमें समय अन्तराल होता ही है। हर कर्म तथा फल में अलग-अलग अन्तराल होता है। कर्म से संस्कार होता है। संस्कार में विपाक (जाति आयु भोग) होता है। हर कर्म का जाति आयु भोग प्रभाव होता है। जाति से तात्पर्य है- मानव पशु पक्षी कीटादि। आयु समय अन्तराल का नाम है तथा भोग से अर्थ खान पान रहन सहन ये तीनों मूल परिस्थिति रूप प्राप्त होते हैं। इन मूल परिस्थिति रूप में जीव कर्म करने के लिए शतप्रतिशत स्वतन्त्र होता है। इन मूल परिस्थिति रूप का अतिक्रमण करने में भी स्वतन्त्र होता है। कर्मफल के अन्तराल के अनुसार अतितीव्र, तीव्र, सामान्य,

भेद अतिभेद रूप में विभाजित किए जा सकते हैं। कर्मफल परिपक्व, अपरिपक्व होता है। मृत्यु के समय परिपक्व कर्मफल जाति आयु भोग संश्लेषणानुसार, लब्धावस्थानुसार नया जन्म होता है। दो कर्मफलों की दिशा परिमाण के मिश्र रूप को लब्ध कर्मफल कहते हैं। लब्ध कर्मफल संस्लिष्ट निकालना सर्वाधिक जटिल प्रक्रिया है जो मानव सीमा के बाहर है। इस क्षेत्र मानव सर्वाधिक अल्पज्ञ है। इसमें श्रृत के जटिलतम नियम कार्य करते हैं। मनुस्मृति इसका बचकाना सा रूप देती है।

तीव्रतम कर्म विश्लेषण भी अत्यन्त कठिन कार्य है। तीव्रतम भोग का एक सच्चा उदाहरण इस प्रकार का है- एक विक्षिप्त महिला ने गर्भ धारण किया। गर्भ परिपक्वावस्था में एक सड़क के धूलभरे तिराहे पर एक बच्चे को जन्म दिया। नाखूनों से नाल कटी गंदी गुदडी बच्चे को अवैध मानते उनके आसपास टपरियों दुकानों का तिरस्कार दुत्कार रहा। बिना पर्याप्त देखभाल, बिना पर्याप्त आहार ही नहीं, वर्षों तिथि समाप्त कुआहार में छै दिनों में ही बच्चे ने तीव्रतम भोग भोग लिए, कर्म संस्कार का क्षय हुआ, बच्चा मरणासन्न अवस्था में पहुच गया। इस स्थिति दो ही संभावनाएं थी एक उसका पुनर्जन्म होता, दो उसका पूर्ण स्थिति परिवर्तन हो उसे नव परिस्थितिकी मिले। इसमें से दूसरा विकल्प हुआ- वह बालक नव परिस्थितिकी में चला गया और आज सम्भ्रान्त अंग है। यह पुनर्जन्म के निकटतम की सत्य घटना है। वह बालक सांस भी नहीं ले पा रहा था। बुझी बुझी आंखों, ठहरी ठहरी आंखों देखता था। उसके रोने का पता उसके मुंह के खोलने से चलता था। डॉक्टरों का कहना था कि वह लुंज पुंज मस्तिष्क हो गया है उन परिस्थितियों में, पर उस बालक का नव परिस्थितिकी में पुनर्जन्म हुआ और वह क्रमशः उन्नत हुआ। ऐसी कई-कई घटनाएं हैं। कर्म ही नहीं भोग भी निष्फल नहीं होता। भोग के द्वारा कर्मफल संस्कार नष्ट परिवर्तित होते हैं। कर्मगति गहनतम है, पुनर्जन्म अद्‌भुत तथ्य है।

वैज्ञानिक मानव नें प्रतिरूप (क्लोन) गढ़े हैं। डाली भेड़ और दो बंदर- इनका कर्मफल क्या होगा? क्या इन पर भी कर्मफल नियम लागू होगा? बेशक लागू होगा इनमें कोई विशिष्टता नहीं है। भ्रूण विकास की परिस्थितियां बाह्य में पैदा कर देने से भ्रूण विकास सत्य नहीं बदलता है। जैवसत्य धर्मफल सत्य वही रहता है। मानव कल एक ऐसा भ्रूण भी विकसित कर सकता है जिसमें अर्ध मानव अर्ध पशु हो। यह पशु हाथी, घोडा, शेर, गेंडा भी हो सकता है। यह सत्य श्रवण में भयानक लगता है। मानव पशु एक भयानक जीव होगा और सृष्टि को ही नष्ट कर देगा। ऐसी ऐसी भयानक कल्पनाएं की गई है। पर वे सारी कल्पनाएं बकवास हैं, निरर्थ हैं। एक धन आधा बटे दो कभी भी एक धन एक बटे दो से ज्यादा नहीं हो सकता है। वह पशुमानव हर स्थिति मानव से कम ही रहेगा। भारतीय पौराणिक कल्पनाओं में दशानन, भस्मासुर, रक्तबीज, भैसासुर तारकासुर आदि संकल्पनाएं विद्यमान हैं। सारे असुर कम रहे हैं मानव तथा देवमानव से। कर्मफल सत्य यहां भी लागू होता है। मानव के पापकर्म जिस गति से बढ़ रहे हैं उससे यही सिद्ध होता है कि मानव को नई निकृष्ट योनियों आवश्यकता है जहां वह और भयानक भोग और भयानक होकर जी सके। इस वाक्य में एक अध्यात्म आशय है जो थोडा सा धार्मिक व्यक्ति भी समझ सकता है।

"न मम निष्कासन"

विज्ञान का 'जीवन-जाति' सत्य कम अद्‌भुत नहीं है। यह बीस अक्षर सत्य है ऐसा विज्ञान मानता है। बीस अमीनो एसीड आधारित बीज हैं जो प्रोटीन बनाते हैं तरह तरह के पशु के, मनुष्य के, प्राणी के। ये प्रोटीन भी विकसित होते हैं कोषिका केन्द्रक के जीन ढांचे के अनुसार। इनका संश्लेषण बाह्य खाद्य पदार्थों से होता है। कचरा निष्कासन मल, मूत्र, पसीने, प्रश्वास से होता है। केवल यह कचरा निष्कासन नहीं वरन अन्य न मम निष्कासन भी। हमारी व्यवस्था एक सुभरणित (उत्तम भराव युक्त) जो स्वतः पठत है.. यह न मम पढ़ती है और उसे निष्कासित, विच्छेदित, नष्ट करती है। पर इसकी एक सीमा है। और उस सीमा से बाहर का न मम हो तो? या धोखेबाज न मम हो तो जो धूमादि के साथ या अत्यन्त सूक्ष्म भिदन शक्तिमय हो तो? तो वह व्यवस्था को तत्काल या धीरे धीरे तोड़ डालता है। अग्राह्य खून चढ़ा देने पर तत्काल मृत्यु हो जाती है। धूम में निकोटिन पीते रहने पर कैंसर हो जाता है। विजातीय घुसपैठियों से सावधान लोग ज्यादा जीते हैं।

"बिग बैंग"

वैज्ञानिक सोचते हैं कि संभव है कहीं ऐसा विश्व भी हो ऐसे प्राणी भी हों जो अमीनो एसीड या जीनों की इन ईंटों से न बने हों और लकीनो एसीड या कीनों (काल्पनिक नाम) की ईंटों से बने हों और अन्तरिक्ष यात्राओं में हमारी व्यवस्था उस न मम को ग्रहण कर ले और मर जाए। अन्तरिक्ष चिकित्सा विज्ञान की खोज जारी है। मानव "न पदार्थ" बनाया है और उसका मानना है कि 'न पदार्थ' की एक दुनियां है कहीं ब्रह्माण्ड में। अगर 'न पदार्थ दुनियां' और 'पदार्थ दुनियां' मिल जाए 'बिग बैंग' या प्रलय हो जाए।

"विज्ञान भटकन और आध्यात्म"

विश्व विज्ञान इतिहास गवाह है विज्ञान स्थिर नही रहता है। **विज्ञान मानवाधारित कम है उपकरण (बाह्य) आधारित अधिक है। धर्म मानवाधारित अधिक है उपकरण बाह्य आधारित कम है।** वर्तमान में चिज्ञान पदार्थ से पुनः तरंग अवध

ाारणा पर उतर रहा है तथा गति समय को भ्रम निरुपित करने की ओर बढ़ रहा है। विज्ञान की सारी भटकनें किस लिए हैं? सूक्ष्मतम कण खोज, आपेक्षिकता सिद्धान्त, क्वांटम सिद्धान्त, एकक क्षेत्र, प्रभाव पदार्थ (जिसका प्रभाव मालूम है अस्तित्व नहीं = विज्ञान का धर्म के शरणागत होता तथ्य) निरपेक्षता सिद्धान्त, अनिश्चित्ता सिद्धान्त, जीन खोज आदि-आदि का अन्त्य लक्ष्य क्या है? विज्ञान स्वयं इसका उत्तर नहीं दे सकता है। कारण विज्ञान के पास संपूर्ण दृष्टि नहीं है। क्या धर्म के द्वारा- वेद के द्वारा- "वह प्रकट होते ही अनन्त विस्तारित है, एकत्वमनु पश्यति, तदेजति-तन्नेजति, परिभूः, अनेजत् एकम्, तद् दूरे तद्वन्तिके" स्पष्ट साफ निश्चयात्मक कह देना विज्ञान की भटकनों को बचाने के लिए लक्ष्य दर्शाने के लिए सत्य बताने के लिए पर्याप्त नहीं है? निश्चिततः पर्याप्त है। इन तथा ऐसे अनेकानेक वैदिक शब्दों में अथाह वैज्ञानिक तुष्टि है। जो वैज्ञानिक खोजों से कहीं गहन है। यह सब वह गहन मम विज्ञान तथ्य है जो मानव में संयुक्त होकर मानव को मृत्यु से परे कर देते हैं। इन सत्यों से ज्योतित अस्तित्व की ही सिद्धि होती है। ओऽम् नारायणः, ओऽम् खं ब्रह्म, तत्त्वमसि, अयमात्मा ब्रह्म तथा न जायते म्रियते वा कदाचन .... न हन्यते हन्यमाने शरीरे।

"एकी चिकित्सा प्रणाली आदमी आधारित है"

शरीर के मरने से आत्मा नहीं मरती यह आध्यात्मिक नही शारीरिक भौतिक सत्य भी है। भौतिकतः शरीर का सार तत्व रक्त है। रक्त जल हवा मिश्र पदार्थ है। मूलतः रक्त छः तत्वों से बना है। जीन पांच तत्वों से निर्मित है। कार्बन, नाइट्रोजन, फॉस्फरस, ऑक्सिजन, हाइड्रोजन। संपूर्ण खून में अस्सी प्रतिशत पानी है। यह बदन के वजन का छः से आठ प्रतिशत मात्र है। औसत आदमी में करीब ५.४ लीटर खून होता है। यह मानव शरीर में एक परिभ्रमणित सागर है। इस सागर में करीब ४.३ लीटर पानी है। प्रति किलोग्राम के अनुसार महिलाओं में खून की मात्रा कम होती है। पुरुषों में यह मात्रा ७७ मिलीलीटर होती है तो नारियों में ६६ मिलीलीटर। रक्त कोषिका की निर्माण तथा मृत्यु परम्परा अद्‌भुत है। इसमें लाल सफेद तथा जमन कोषिकाएं होती हैं। लाल कोषिकाएं मूलतः लाल नहीं होतीं। इनमें केन्द्रक भी नहीं होता। अन्य कोषिकाओं में केन्द्रक द्वारा कोषिकाएं द्विगुणित चतुःगुणित होती हैं। कार्यरत लाल कोषिका (केन्द्रक रहित) कार्यपूर्ति पश्चात मर जाती है, अपना वंशज नहीं छोडती और नष्ट हो जाती है। लाल रक्त कोषिका सामान्यतः कोषिका केन्द्रक से भी छोटी होती है। इसका व्यास साडेसात माइक्रान होता हैं मोटाई २ माइक्रान, यह लघु द्वि नतोदर सिक्केवत हैं यह मस्तिष्क हड्डी, फेफड़ों की हड्डियों रीढ़ के हड्डी के भीतरी फुसफुसे भाग (मारो) में, बच्चों में भुजाओं पैरों की लम्बी हड्डियों के अन्त के फुसफुसे भाग (मारो) में भी बनते हैं। इनका निर्माण सकेन्द्रक होता है, तथा ये लाल नहीं होते हैं। इसे महतक्त (मेगालोब्लास्ट) कहते हैं। इसे लाल रंग मिलता है तथा इसे रक्तामत (इरथोब्लास्ट) कहते हैं। इसका केन्द्रक विभाजित होता है। यह लघु होता है तो इसे सामान्यात्क (नॉमोसाइट) कहते हैं। इसके पश्चात इसका केन्द्रक नष्ट होता है तथा इसे लालात्क (रेक्टिकुलोसाइट) कहते हैं। ये खून में उत्सर्जित होते हैं तथा कुछ घंटों में रक्त कोषिका बन जाते हैं। खून में दो सौ में एक लालात्क अवस्था की कोषिका रहती है। मूलतः रक्त कोषिका पीतभूराभ होती है पर यह अनेकानेक होने पर चटक रक्ताभ दिखती है। यह कोषिका समूह प्राणवायु संवाहक है। पुरुष शरीर में प्रतिघन मिलीमीटर खून में चालीस लाख रक्त कोषिकाएं तथा नारी में अडतालीस लाख रक्त कोषिकाएं होती हैं। औसत मनुष्य में २५० खरब रक्त कोषिकाएं होती हैं। जीवन सत्व ये रक्त कोषिकाएं क्या अमर हैं? नहीं ये मनुष्य जीवन जितनी भी अमर नहीं हैं। मनुष्य इनसे कहीं अधिक अमर है। तिल्ली (Spleen) में करीब पचास खरब रक्त कोषिकाओं का भंडारण रहता है तथा तिल्ली आकस्मिकता में खून धमनियों में छोडती है। कसरत अवस्था में यह आम बात है। खून के मरने से आदमी नहीं मरता पर आदमी के मरने से खून मर जाता है। आदमी आत्मा है खून की। एकी चिकित्सा प्रणाली आदमी आधारित है खून आधारित नहीं। एकी चिकित्सा प्रणाली सोलह संस्काराधारित मानव भूषणभूत सम्यकीकरण है।

"हर पल मृत्यु जन्म"

लाल रक्त कोषिका की उम्र एकसौ पचास दिन मात्र है। दो खरब लाल रक्त कोषिकाएं प्रति दिवस मरती हैं जन्मती हैं। प्रति सेकंड मानव में तेईस लाख लाल रक्त कोषिकाएं मरती हैं जन्मती हैं। इससे कुछ कम ज्यादा स्थिति अन्य कोषिकाओं की भी है। आदमा सतत नवीनीकरण है। सतत मृत्यु जन्म है। इस हर पल मृत्यु जन्म शरीर का सच है आत्मा जो अध्यात्म सच है और भैतिकतः सिद्ध है। इस मरण में अमृत है।

सतत मृत्यु जन्म की भाषा मनुष्य में अधिक है पौधों की अपेक्षा। पौधे अपना भोजन स्वयं बनाते हैं प्रकाश, हवा, पानी की मदद से। इसमे सार तत्व क्लोरोफिल है जो हरा दिखता है। क्लोरोफिल भूमि प्रकाश का लाल और पीला प्रकाश मुख्यतः अवशोषित कर लेता है और हरा तथा नीला भाग मुख्यतः विसर्जित करता हैं इसीलिए हरा दिखता है। लाल तथा पीला प्रकाश मूल शक्ति है प्रकाश संस्लेषण की जिस प्रक्रिया से पौधों में कार्बनडाइआक्साइड तथा पानी मिलने से कार्बोहाइड्रेड (मानव खाद्य अन्न) बनते हैं तथा ओषजन वातायन में मुक्त होती है। इसके विपरीत प्राणी जगत हैं (कुछ अंश वनस्पतियां भी) जो तन की कम ताप शक्तिशाली आण्विक स्तर कार्यशील भट्टी में इन कार्बोहाइड्रेड को अन्नमय कोष में परिवर्तित कर चय अपचय में उपयोग कर

आक्सीजन ओषजन को प्राणमय कोष की मदद से शक्ति का उपयोग (मनोमय कोष अर्धांशादि) कर कार्बनद्विओषिद एवं जल वातायन में उत्सर्जित करता है। यह पूरी प्रक्रिया सृष्टि यज्ञ है, जो दहलीज सीमा ताप दाब पर होती है। मूलतः लाल पीले प्रकाश में निहित तरंग शक्ति किरण शक्ति एक व्यापक आधार है तभी तो सूर्योज्योति ज्योति सूर्यः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सार्थकता हैं औद्योगिक धुएं के बादलों से ढका (ज्योति आवरणित) सूर्य बड़े सूक्ष्म स्तर मानव मृत्यु का प्रारम्भ है जो कार्बोहाइड्रेड तथा ओषजन ध्वंस से सम्बन्धित है। यही द्यौः शांति भावना की सार्थकता है। जिसके साथ अन्तरिक्ष शान्ति, पृथ्वी शान्ति, आपः वनस्पति शान्ति आदि भावनाएं भी जुड़ी हुईं हैं। एक वर्ग मीटर अविरुद्ध हरितमा पांच ग्राम कार्बनद्विऔषिद शोषित करती हैं। आज हरितमा प्रदूषण परत से रुद्ध है, वातायन प्रदूषण से रुद्ध है, कार्बनद्विओषिद आधिक्य से रुद्ध है तथा क्षेत्र सीमितता से रुद्ध है विश्व में मात्र चौदह प्रतिशत वन हैं मानवजीवन शक्ति मूलतः ह्रासोन्मुख है।

"जीवन शक्ति रहस्य"

वनस्पति बीज संचित रसायनिक शक्ति (कार्बोहाइड्रेड) है। इस शक्ति से एक पौधा सूर्यशक्ति संचयन पूर्व अंकुरित होता है। जिससे क्लोरोफिल विकसित होता है। और पुनर्शक्ति संचयन होता है। यही बीज मानव शक्ति ग्रहण (अन्नमय कोष) आधार है। पौधे दौड़ते नहीं चलते नहीं बढ़ते नहीं हैं यही उन में अतिरिक्त शक्तिसंचय का रहस्य है। प्राणी दौड़ते हैं चलते हैं यह उनमें अतिरिक्त शक्ति व्यय का रहस्य है। बीज से उत्सर्जित तेल संश्लिष्ट शक्ति है। अन्नमय कोष इन दोनों पर आधारित है। कार्बोहाइड्रेड में औसतः कार्बन, ओषजन, उदजन अनुपात १:१:२ है, तेल में १०:१:२० है। कार्बोहाइड्रेड या तैलीय पदार्थ के ओषजनीकरण से शक्ति पैदा होती है। यह शक्ति जीवन मृत्यु रहस्य है। ओषजनीकरण हाइड्रोजन में होता है। ओषजन सांस से मिलती है। छः सौ ग्राम कार्बोहाइड्रेड ओषजीकृत होकर कार्बन द्वि ओषिद तथा पानी बनाएगा और २४०० एकक ताप देगा जो आम आदमी हेतु एक दिवस पर्याप्त है। छः सौ ग्राम तैलीय पदार्थ या घृत ओषजीकृत होकर ५४०० एकक ताप देगा जो आम आदमी के कार्यों के लिए सवा दो दिवस पर्याप्त है। द्वि ठोस शक्ति संमिश्र हमारा अन्नमय कोष है जो आधार है प्राणमय कोष का तथा जो आधारित है प्राणमय कोष पर अन्नमय कोष का धृत भाग हमें सुआकारित, तापरक्षित, शीतरक्षित भी करता है चमडी के नीचे आधारित तह के रूप में। स्त्री पुरुष धृत कार्बोहाइड्रेड अनुपात विभिन्न होता है। स्त्रियां सुआकारित होती हैं कि उनमें धृताधिक्य होता है।

"भूख दहलीज सीमा-स्वस्थ जीवन रहस्य"

मृत्यु संबंधित एक विज्ञान तथ्य भूख है.. भूख क्या है? प्रतिदिवसीय व्यय होने वाली ठोस शक्ति (कार्बोहाइड्रेड धृत ग्लूकानादि) में कमी हो जाना। इस कमी की पूर्ति भोजन द्वारा होती है। मूल में भूख का संबंध आण्विक स्तर पर असंतुलित आयन विद्युत अणु, संतुलित आयन विद्युत अणु, रंग मिश्र विद्युत आयन अणु से है। इसका पता भूख बढाते जाने से चलता है। भूख दहलीज सीमा स्वस्थ जीवन का रहस्य है। भारतीय उपवास व्यवस्था जो अद्वितीय है को भूख दहलीज सीमा की वैज्ञानिकता से संबंधित कर नया रूप देना समय की आवश्यकता है अस्तु...।

भूख सत्य बडे गहन कोषिका झिल्ली स्तर से जुडा है। झिल्ली स्तर पर सोडियम क्लोराइड तथा पोटॅशियम फास्फेट के अयन असंतुलन की जैविक शक्ति की चर्चा मृत्यु संदर्भ (संतुलन संदर्भ) में हम कर चुके हैं। यह झिल्ली सबसे महत्वपूर्ण अन्नमय कोष है। कोषिका अन्नमय कोष का न्यूनतम महानतम संयन्त्र है। यह आण्विक संयन्त्र है। ऐसे 10^{13} कारखानों के समूह द्वारा शक्ति संचयन, शक्ति व्यय का संयुक्त सावयवी स्वरूप है यह अन्नमय कोषीय आदमी। भूख या अतिभोजन का प्रभाव अनुपातिक रूप में सारे के सारे शरीर पर पडता है। वर्तमान जीवन समस्या का स्वरूप ही यह है कि भूख के दहलीज सीमा भटकाव सर्वाधिक है।

कार्बोहाइड्रेड प्रोटीन तथा स्निग्ध (घृत) त्रि पदार्थ हमारी भूख निवृत्ति का आधार है। कार्बोहाइड्रेड स्टार्च और रेशों से बने हैं। स्टार्च कार्बन की खुली चेन के ऑक्सीजन उदजन संयुक्त बड़े अणु हैं तनिक अम्लीय ऊष्म जल में ये विच्छेदित होते हैं इसे जल विच्छेद प्रक्रिया कहा जाता है। आंतो के लिए स्टार्च बृहत्तर अणु हैं अतः ये थूकाम (लाराम) लार के किण्व (एनजाइम) तथा पक्काम पक्वाशय के किण्वो द्वारा तीव्र की जल विच्छेद प्रक्रिया में गाम्टोज में बदलते हैं। छोटी आंत में आंताम (गाम्टोज) इस गाम्टोज को विच्छेदित कर दो ग्लूकोज में बदल जाता है। यह मिठास आन्त्र शोषित हो खून माध्यम से लीवर में संचित हो कोषिका वितरित होता है तथा कोषिका कारखाने में शक्ति में परिवर्तित होता है।

माल्टोज दो ग्लूकोस से बना है शक्कर एकरम फ्रुक्टोस तथा ग्लूकोज से बनी हैं। शक्कर को शक्कराम किण्व छोटी आंत में फ्रुक्टोज तथा ग्लूकोज में बदलता हैं दूध में भी दुग्ध मिठास होती है। इसमें दो मिठासे हैं एक ग्लूकोज अणु दूसरी लैक्टोज की। लैक्टोज अद्भुत मिठास हैं जो मिठास रहित है (सात्विक है) (इस सात्विक स्वाद से भूख के, स्वाद के सारे भटकाव आदमी भटकता हैं शिशु को यह अमर स्वाद है) शहद, फलों में ग्लूकोज फ्रुक्टोज होते हैं जो किण्वीकरण बिना ही तन उपयागिता होते हैं सुपाच्य होते हैं।

हेमोग्लोबिन प्रोटिन है जिसका अणुभार ६८००० है। प्रोटीन भोजन तत्व हैं इसमें करीब उन्नीस प्रकार के अमीनो एसिड

होते हैं.. इसमें नाइट्रोजन, सल्फर आदि अतिरिक्त तत्व होते हैं। इसका भी विच्छेदन कार्बोहाइड्रेट के समान होता है। किण्वीकरण द्वारा एमीनो एसिड की संरचना परिर्वतन अद्‌भुत तथ्य है एक प्रोटीन का अणु जिसमें उन्नीस अमीनो एसिड हों १२ x १०^{१६} तरह से आण्विक स्तर पर निर्मित हो सकता हैं। प्रोटीन पर पेट में पेप्सिन किण्व तथा छोटी आंत में प्रोटीजेंज, ट्राइप्सिन, चाइमो ट्राइप्सिन क्रिया कर तोड़ते हैं इनके साथ अम्ल भी कार्यरत रहता है। अन्ततः कैथेप्सिन नामी लघुत्तम किण्व इन्हें और छोटे रूपो में तोड़ते हैं तथा ये आंतो द्वारा शोषित कर लिए जाते हैं एन्जाइम (किण्व) भी प्रोटीन निर्मित हैं पर संरचना सूक्ष्म है। हम पहले लिख आए हैं कि किण्व परमाणु असन्तुलन शक्ति नियन्त्रित है तथा परमाणु असंतुलन शक्ति चतुः तरंग शक्ति असंतुलन शक्ति नियन्त्रित (होना चाहिए) तथा चतुः तरंग शक्ति असन्तुलन जैवशक्ति (चैतन्यता) नियन्त्रित है।

अमीनो एसिड भी ग्लूकोज वत रक्त वाहिनियों के रक्त में पहुंचते हैं। रक्त में भोजन पश्चात इनका स्तर दुगना हो जाता है। लीवर में इनका संचय होता है तथा ये पुनः संश्लेषित होते हैं जैसे ग्लूकोज ग्लूकान रूप मे बदलता है। यह संचयन ही त्रि समय भोजन तथा प्रति मिनट सोलह बार श्वसन के अन्न एवं प्राणवायु ग्रहण में संतुलन स्थापित करता हैं।

तीसरा पदार्थ हैं स्निग्ध (लिपिड) यह उपरोक्त दोनों से भी अद्‌भुत है। यह जल अघुलनशील तत्व है। ग्लूकोज जल में घुलनशील हैं स्निग्ध पदार्थ पर पित्त रस तथा लिपेज (किण्व) प्रक्रिया कर इसे दो भागों में विभाजित करते हैं। एक भाग में तीन भाग होते हैं जिसमें कार्बन, हाइड्रोजन, आक्सीजन कार्बाक्साइल समूह बनाते हैं तथा दूसरा भाग ग्लिसिराल है। पहले समूह को चर्बी अम्ल (फेंटी एसिड) भी कहते हैं। ये छोटी आंत में शोषित हो जाते हैं। इनका शौषण लघुतालिकाओं (केंपलरी) या कोशिकाओं द्वारा ग्लूकोज या एमीनो एसिडवत नहीं होता है। इनके शोषण के लिए लघुवर्तनिका (लिम्फेटिक वेसल) का प्रावधान है इस व्यवस्था से सरकते ये खून में शामिल होते हैं। खून में शामिल इन त्रि पदार्थों का भूख और मृत्यु से सीधा संबंध हैं।

भूख में लीवर से ग्लूकान खर्च होता हैं और लीवर का ग्लूकान सुरक्षित भंडार खर्च होने पर स्निग्धता खर्च होती हैं स्निग्धाता परिवर्तित रूप में खर्च होती है। परिवर्तित रूप ग्लूकोज होता है पर यह परिर्वतन अपूर्ण ही होता है तथा व्यवस्था बाधा होती है इस व्यवस्था बाधा में दो कार्बन अंश युग्म होकर एसिटोएसेटिक एसिड तथा पुनः दो उदजन परमाणु जुड़ बीटा हाइड्रोक्सीब्यूटरिक एसिड या कार्बन द्विओषिद छोड़ एसीटोन बनाते हैं ये क्रीटोन कहलाते हैं। हमें इस अवस्था कार्बोहाइड्रेट नहीं मिलता अतः क्रीटोन खून में जाते हैं और खून से छलक पेशाब में जाते हैं और अधिक भूख पर जब कार्बोहाइड्रेड शक्ति तथा स्निग्धाता शक्ति भंडार समाप्त हो जाते हैं तो भूख नामी तत्व (खोज की बात जैवशक्ति युजित) कोशिका प्रोटीन को शक्ति हेतु चाटना शुरू करता हैं और इसकी समाप्ति पर इसके चाटने के लिए एक अन्त्य पदार्थ बचता है जो इन शक्तियों से अधिक संश्लिष्ट शक्ति है स्फुरनिग्ध या फास्फोलिपिड।

"तन्तुं तन्वन्"

औसत आदमी में यह स्फुरनिग्ध मात्र छै सौ ग्राम होता हैं करीब एक प्रतिशत। कबीर की झीनी झीनी रे बीनी चादरिया की याद यह स्फुरनिग्ध कोशिका कोशिका फैला याद दिलाता है। यह वेद की भाषा में "तन्तुं तन्वन रजसो" ताना बाना (भौतिकतः) है। चय अपचय पदार्थ शक्ति, व्यय अपव्यय, मम-न मम का यह भौतिक आधार है। **रजसः तन्तुम् तन्वन भानुम् अनु इहि धिया कृतान ज्योतिष्मतः पथः रक्ष** (ऋग्वेद १०.५३.६) सीधा मानो स्फुर निग्ध ढांचे का विवरण दे रहा है। रजसः स्फुरनिग्ध के तन्तुओं को तानता हुआ तरंगपति तरंग अनुगमन कर बुद्धि कृत ज्यौर्तिमय पथ रक्षण है। कोषिका झिल्ली द्वि ध्रुव द्वि क्रिया युक्त स्फुरनिग्धा अणुओं द्वारा बुनी है। (रजसः तन्तुम् तन्वन) यहां निग्ध प्रोटीन अमन गमन (आना जाना) शक्ति परिवर्तित हो बुद्धि कृत जैवशक्ति अद्‌भुत असंतुलन का तरंगपति द्वारा तरंगायित नियंत्रण परमाणु स्तर पर होता है। अत्यंत भूख अवस्था में अति उपवास के अन्त्यचरण में स्फुरनिग्ध (जिसके लघुकण जीवद्रव झिल्ली के अंदर भी हैं) व्यवस्था चाटने का जीव द्रव्य स्तर तथा झिल्ली स्तर जैव शक्ति (जिसे भूख लगती है) प्रयास करती है यह प्रयास तन जीर्णकरण उस सीमा तक करता है कि यह चादर या वस्त्र आत्मा को बदलना पड़ता है। स्फुरनिग्ध आकार एवं कोलेस्ट्रॉल मात्रा संचयन के अनुसार क्ष (अल्फा) लघुआकार एवं य (बीटा) दीर्घाकार होते है।

सतत अति भोज्यावस्था भूख दहलीज की तृप्ति पारावस्था में विशिष्टतः पुरुषों में खून कोलेस्ट्राल की उल्टियां करता है। जो रक्तवाहिनियों में जमती हैं क्रमशः तथा उच्च रक्तचाप पैदा करती हैं अति उल्टी की दशा में रक्तवाहिनी अवरोध होता है जिसे स्थानानुसार हृदयघात या पक्षाघात कहते हैं जो कई बार मृत्यु द्वार ले जाता है। यह विशिष्टतः पुरुषों में होता है.. विशिष्टतः नारियों में क्यों नहीं होता? खोज लोगे संभवतः नोबल पुरस्कार प्राप्त कर लोगे! (वर्तमान २००० में यह खोज अंशतः हो चुकी है)

"आत्म सत्यों की सहज अभिव्यक्ति"

परमाणु स्तर पर कार्यरत हैं इन्द्रियां। आंख प्रकाश स्तर फोटान स्तर, उससे सूक्ष्म स्तर पर कार्यरत है। रंग पहचान करना बड़ी सूक्ष्म भौतिक अवस्था है। उस अवस्था से सूक्ष्म यंत्र है आंख और इस सूक्ष्म यंत्र से भी सूक्ष्म है आंख की आंख। स्वाद परिर्वतन

का सार आण्विक संरचना है और जीभ इस आण्विक स्तर के अंतर को पहचानने में समर्थ है। गंध भी आण्विक संरचना से सूक्ष्म अवस्था की उत्पत्ति है। हाइड्रोजन सल्फाइड की आंतरिक संरचना विशिष्ट गंध का कारण है और यह नासिका घ्राण शक्ति द्वारा पहचान किया जाता है। स्पष्ट है घ्राण शक्ति इस आण्विक संरचना से सूक्ष्म है और नाक की नाक? मुख में तैंतीस मूल शब्द स्थान है तैंतीस स्वाद स्थान भी हैं। क्या शब्द शक्ति भी सूक्ष्म है? निःसंदेह है। शब्द मापन बड़ा स्थूल है जो तरंग रूप है यह तो वैखरी से भी स्थूल है बाह्य वैखरी है बाह्य वैखरी शब्द नहीं शब्द प्रभाव है। वैखरी तैंतीस स्थानी मुख गुहर संघातों का नाम है जो मध्यमा से आए हैं और मध्यमा को संघात शक्ति ३३ स्थानीय पश्यन्ती से मिली है पश्यन्ती को यह शक्ति (सूक्ष्म क्वार्क से सूक्ष्म) परास्थल से मिली है। यह तैंतीस पांच केन्द्रित है पांच से तैंतीस लड़ी है और पांच एक केन्द्रित है यह एक शब्द है 'अ' और 'अ' जन्मदाता है 'आत्मा'। विज्ञान 'आत्मा' 'अ' पांच तैंतीस १ तैंतीस २ तैंतीस ३ स्तरों तक अभी नहीं पहुचा है। शब्द क्षेत्र में बड़े स्थूल पर रुक गया है। पर धर्म इस तक स्पष्टतः पहुंच गया है। उसके पास बुद्धि का औजार है। कान से कान की अवस्था है आंख की आंख का आण्विक स्तर स्वाद के स्वाद का आण्विक स्तर आदि एक ही तरह के आत्म सत्यों की सहज अभिव्यक्ति है।

"सतत एक है तरंगित तरंगदाता"

अद्भुत तथ्य प्रकृति नहीं है अद्भुत तथ्य परमात्मा भी नहीं है अद्भुत तथ्य है जीवात्मा। प्रकृति तथा परमात्मा जीवात्मावत् जन्म मरण प्राप्त नहीं करते, कर्म नहीं करते, कर्मफल नहीं पाते, स्वंतत्रता का उपयोग नहीं करते, सीमाएं नहीं बदलते। प्रकृति सत है ऋत आबद्ध है नियमबद्ध व्यक्त अव्यक्त होती है ब्रह्म श्रृत आबद्ध है नियमबद्ध है अव्यक्त है सर्वज्ञादि है सच्चिदानंद है। जीवात्मा सत् निर्मित एकदेशी चित है आनंद श्रृत ऋत कमोबेश होने में स्वतन्त्र है तथा होता है। अद्भुत है.. ऋत प्रकृति असंतुलन है जीवात्मा। श्रृत ब्रह्म असंतुलन है जीवात्मा। द्वि असंतुलन व्यवस्था है जीवात्मा। द्विज नाम इस अर्थ भी सार्थक है जीवात्मा का। द्विज द्वि से जन्म, द्विज दो बार जन्म, दो जन्म के कारण दो बार जन्म दो बार जन्म से बार बार जन्म, बार बार जन्म से बार बार मरण, बार बार मरण से बार बार नवीनीकरण क्षणिकवाद, द्वैतवाद, त्रैतवाद, अद्वैतवाद, चिन्तकों का आधार भूत सत्य यही है। इस बारम्बार में सतत एक है आत्मा। त्रि शरीरी संकल्प शरीर, सूक्ष्म शरीर, स्थूल शरीर। स्थूल विवरण आण्विक संरचना, किण्व संरचना, कोषिका संरचनादि से स्पष्ट है। सूक्ष्म शरीर "तदेजति एजति" स्वरूप है "तरंगित तरंगदाता" यह असंतुलन आधार है। गुरुत्व नियम विरुद्ध, प्रकाश नियम विरुद्ध, विद्युत नियम विरुद्ध, प्राकृतिक नियम विरुद्ध एक जैव असंतुलन व्यवस्था है लेकिन सातयवी पारदर्शी असंतुलन व्यवस्था है और उससे सूक्ष्म है तदेजति वह तरंगित अल्पज्ञता बाध्य, सर्वज्ञता की ओर गतित संकल्प शरीराधार तरंगित है न जन्म, न मृत्यु, अबाध्य होने को प्रयासरत। बाध्यता है कमेन्द्रियता (इन्द्रियों में कमी) या दुःख अबाध्यता की ओर गति है उत्तमेंन्द्रियता या सुख।

रूपैः सप्तभिरेव तु बध्नात्यात्मानमात्मना प्रकृतिः।
सैव च पुरुषार्थं प्रति विमोचयत्येक रूपेण।। (सांख्य)

प्रकृति से फिर पुरुषार्थ- पुरुष परम प्रयोजन = अव्याहत गति आह्लादमयी हेतु एकरूपेण विमुक्ति होती है।

"श्रेय-प्रेय पथ"

दो नेत्र, दो कर्ण, दो नासिका, एक रसना (विषय ध्यान साधन) ऋषि न होने पर बांधते हैं- मानव कर्मेन्द्रिय होते हैं। आण्विक असंतुलन निम्न परिवर्तन होता है। परिवर्तन दर संघात मात्रा बंधन मात्रा तथा क्रम विषय ध्यान संगेच्छा कामोत्पत्ति क्रोधोत्पत्ति संमोहोत्पत्ति स्मृति भ्रंशोत्पत्ति बुद्धि नाशोत्पत्ति सर्वनाशोत्पत्ति होता है। पुरुषार्थ हेतु सप्त के ऋषि होने पर कान के कान, आंख की आंख, नाक की नाक, रसना की रसना तथा त्वक की त्वक के एक से संयुक्ति (उत्तमेंन्द्रियता) पथ विमुक्ति होती है। बध्य पथ द्रुत पथ है प्रेय पथ एक पथ दीर्घ पथ है श्रेय पथ है। श्रेय पथ का उतक्रम इस प्रकार है।

ध्यायतो ब्रह्म पुंसां ब्रह्म का ध्यान संग की इच्छा योग की भावना भक्ति का उदय सानिध्य उपनिषद भाव ज्ञान बीजांकुरण सातत्य अमरत्व भाव ईक्षते शब्दम् = सर्वसार्थकता। विषय एवं ब्रह्म छोर एवं ओर हैं अवगति उद्गति के तथा प्रेय तथा श्रेय मार्ग के प्रारंभ के। प्रेय मार्ग मृत्यु मार्ग है श्रेय मार्ग अमृत मार्ग है।

प्रकृति असंतुलन जैव शक्ति की विषय संयुक्ति भावना के कारण ब्रह्म नियमानुरूप बाध्यता है इसी बाध्यता का परिणाम शरीर धारण उतारण क्रम है। जन्म-मृत्यु-मुक्ति का यह रहस्य है जो भौतिक आधार पर भी कार्यरत है अध्यात्मिक आधार भौतिक आधार का सूक्ष्म मूल है।

"वेद है शुभ ही शुभ"

प्रश्न उठता है कि क्या यह संभव है कि मानव रूप ऋषि हो जाए - हां बिलकुल संभव है आज के इस कलयुग प्रजातंत्र युग (घटियातम व्यवस्था) में संभव है। हां कलयुग घटियातम प्रजातंत्र युग में भी संभव है। कैसे शुभ ही शुभ द्वारा शुभ ही शुभ है कहां? वेद है शुभ ही शुभ तथा ब्राह्मण अरण्यक उपनिषद दर्शन हैं शुभ ही शुभ निकटतम। बाकी अन्य? बाकी अन्य कमाधिक

हैं विक्षेप एक व्यक्ति सहजतः सरलता पूर्वक विक्षेप ज्ञान को अपने जीवन से तिरोहित कर दे सकता है। ज्ञान कर्म का बीज है। ब्रह्म ग्रंथ ब्रह्म ज्ञान के बीज हैं इनसे ब्रह्म कार्य अंकुरण होगा ही। मोक्ष अमरत्व यही सुलभ है।

क्या बाकी ज्ञान नष्ट कर दिया जाए। बेशक प्राकृतिक ऋत तथ्यों को छोड़कर तथा नैतिक श्रृत तथ्यों को छोड़कर बाकी सारा अज्ञान जो वेद बीजाधारित नहीं है नष्ट कर देना चाहिए क्योंकि यह सारा अज्ञान ही पतन की जड़ है। तो क्या इससे सुव्यवस्था हो जाएगी? सुव्यवस्था तो नहीं होगी पर व्यवस्था का एक ऊंचा क्रम प्राप्त होगा और उस व्यवस्था में उन्नयन पथ होगा श्रेय पथ होगा जिस पर हर व्यक्ति चलेगा और जैविक असंतुलन में न्यूनतम विक्षेप होगा मानव अमरत्व सत्य समझ सकेगें।

"शारीर मृत्यु प्रतीति और जीवन सातत्य"

ऐसे व्यक्ति इतिहास में हुए हैं हमनें विवरण दिया है - मौत की सच्चाई सुकारत ने मरते समय सटीक दी है - सुकारत नें जहर पिया धीरे धीरे जहर का असर होने लगा उसने अपने शिष्यों से कहा देखो मेरे पैर मर गए हैं पर मैं नहीं मरा, अब मेरा धड़ मर गया है मैं नहीं मरा, मेरा हाथ मर गया है मैं नहीं मरा, मेरा पूरा शरीर मर जाएगा पर मैं नहीं मरूंगा और वह सो गया। उसका शरीर मर गया वह जिन्दा रहा। वह आज भी जिन्दा है। लेटींमर पादरी प्रोटेस्टॅट था। रोमन केथोलिक चर्च वालों नें उसे पकड़कर उसके हाथो में रुई लपेटकर जीते जी आग लगा दी। वह यह कहता हुआ मरा कि उसकी मृत्यु की मशाल सारी दुनियां के अज्ञानान्धकार को दूर करेगी। शरीर मृत्यु की यह प्रतीति जीवन सातत्य का प्रबलतम प्रमाण है। प्रमाण है शब्द "खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते है।"

"अध्यात्म की निश्चयात्मक बुद्धि"

हम लिख आए हैं विषय प्रेय है ब्रह्म श्रेय है। प्रेय श्रेय पथों का आरंभ "विषय" तथा "ब्रह्म" हैं जहां से पथक्रम अवगति उन्नति प्रारंभ होती है। यहीं मृत्यु सत्य का भी अहसास होता है। यह सत्य आध्यात्मिक ही नहीं भौतिक भी है इसका इंगन विषय ध्यान से पतन क्रम में दिया गया है। उन्नयन क्रम का मापन बड़ी स्थूल सीमा तक का है। क्योंकि तटस्थ अवलोकन असाध्य है। भौतिक शास्त्र या शरीर विज्ञान द्वारा खोजे सत्य चिकित्सा जगत के हैं। ये उपनिषद युग से आज तक चले आ रहे हैं। अध्यात्म की निश्चयात्मक बुद्धि है जब कि विज्ञान की अनिश्चयात्मक बुद्धि है। नचिकेता के प्रश्न यम के उत्तर सदियों में ज्यों के त्यों हैं। सारी विज्ञान खोजें विचिकित्सा रूपी यम के उत्तर की ओर गतित हैं।

पिता संतुष्टि तथा यज्ञाग्नि प्रश्नों के उत्तरों से तृप्त नचिकेता ने यम से तीसरा प्रश्न किया अनादि प्रश्न किया।

"येयं प्रेते वि चिकित्सा मनुष्ये ऽ स्तीत्येके नायमस्तीति चैके। एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयांह वराणामेष वरस्तृतीयः।"

(१/२०) मरण धर्मा शरीर में कहीं कोई एक है - कहीं कोई एक नहीं है यह विचिकित्सा (चिकित्सा जगत का विशिष्ट प्रश्न) है? इसका उत्तर नचिकेता पूछता है? इसका तथ्यात्मक उत्तर यमाचार्य देता है। उत्तर देने से पूर्व उसके सूक्ष्मता स्थूल विषयासक्ति पूर्ति लोभ दे जांचता है नचिकेता को विषय पतन पथ चयनकर्ता नहीं पा उसे उत्तर देता यम कहता है। "श्रेय तथा प्रेय दो मार्ग हैं पुरुष हेतु। श्रेय पथिक का कल्याण होता है तथा प्रेय पथिक अर्थ से हीन होता चला जाता है। (प्रेय पथिक गीता के संगेच्छा से सर्वनाश तक चलता है) यम उसे सृंकाय श्रृंखला कहता है। श्रेय मार्ग प्राप्तव्य एक का वर्णन इस प्रकार है

"तं दुर्दर्शं गूढम अनुप्रतिष्ठम् गुहाहितं गह्वरेष्ठं पुराणम्"

अतिकठिनता करीब करीब असंभवत दर्शनीय (तदेजति एजति स्वरूप) सूक्ष्मतर तन में अतिगति आभित गहन गुहा स्थितं गहनतमं दुष्प्राप्त अतिप्राचीन सातत्य वह एक है। अध्यात्म असंदिग्ध रूप में विज्ञान से गहन है। इस तद्एजति एजति से सूक्ष्म आरंभ "तद् एजति तन्नैजति" स्वरूप उत्कृष्ट रूप में नासदीय सूक्त में स्पष्ट है।

श्रेय मार्ग श्रृखंला इस प्रकार है -

विद्वान अध्यात्म योग अधिगमन (गहन तह गमन) से करीब करीब असंभव दर्शनीय जानकर हर्ष शोक त्याग कर धर्म से सिद्ध होने योग्य एक को सुनकर सम्पूर्णता से ओढकर जीकर बारम्बार पुनः पुनः जीकर सूक्ष्मतम को प्राप्त हो आह्लादिततम स्वरूप प्राप्त कर आह्लादित होता है। जन्तु जगत में यह गहन गुहा में निहित अणोर अणीयान महतो महीयान है। इसे धातु प्रसाद से (शत प्रतिशत मम अवस्था से) अक्रतु (जैवशक्ति सहज चैतन्यता असंतुलन व्यवस्था युक्त) वीतशोकः (असंतुलन कारण बीज रहित) देखता है।

"शरीर में अशरीरी"

शरीर में अशरीर है यह अनवस्थेषु (अवस्था आयु प्रभावित परिर्वतनों -कोषिका मरण-जन्म से) अवस्थितम (गहन स्थिर ही स्थिर) है यह कठोपनिषद स्वीकारता है कि यह प्रज्ञानेन आप्नुयात अर्थात बुद्धि के सूक्ष्मतम औजारों से प्राप्त होता है।

एष सर्वेषु भूतेषु गुढात्मा न प्रकाशते।
दृश्यते त्वग्रयया बुद्धया सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः।। (३/१२)

सब पदार्थों में यह सूक्ष्मतर आत्मा प्रकाशित नहीं होता है किन्तु अग्रयया बुद्धि (सूक्ष्मतम औजार बुद्धि) से सूक्ष्मदर्शियों से देखा जाता है। विज्ञान अभी तक इन्द्रिय क्षेत्र में संवहन की यात्रा कर रहा है सूक्ष्म इन्द्रिय व्यापार की ओर गति कर रहा है। अर्थ का क्षेत्र उसे अभी ज्ञात ही नहीं है अर्थ का क्षेत्र भावना कामना लालसादि के क्षेत्र हैं। अध्यात्म कहता है कि इन्द्रियों से सूक्ष्म अर्थ है, अर्थ से सूक्ष्म मन है, मन से परे बुद्धि है, बुद्धि से परे महत्तत्व है, महत्तत्व से परे अव्यक्त है, अव्यक्त से परे पुरुष है। बड़ा लम्बा सफर तय करना है विज्ञान को इसके औजार बड़े स्थूल हैं। अभी तो इसे तन विच्छिन्न अंगो का औजार रूपी प्रयोग करना है और उसके बाद शायद विज्ञान को बुद्धि मिले कि तन में जो औजार हैं वे स्थूल प्रतीत होते हुए भी सूक्ष्म हैं।

मृत्यु विजय सूत्र अशब्द, अस्पर्श, अरूप, अरस, अगंध, अवययम् (व्यय रहित) नित्य, अनादि, अनंत, महतः परम्, ध्रुवम् उसे चुन चुन सतत अभ्यास स्वयं मे भर लेने उसमें डूब जानें से मृत्यु मुख से मानव छूट जाता है।

"अस्तीत्येव"

जीवात्मा परमात्मा (तदेजति एजति तन्नैजति एजति) दोनों में तत्व भाव ऐसा ही है प्राप्तव्य है (यह सूक्ष्मतम बुद्धि प्रयोग तथ्य है) अस्ति इति एव- अस्तीत्येव है। ऐसा ही प्राप्त हुए का तत्व भाव गहनतम अणोरअणीयानं महतो महीयान है।

अध्यात्म तथा विज्ञान का अन्त्य मृत्यु पार जीवन की योग साधनाओं की श्रेष्ठतम गहनतम सूक्ष्मतम उपलब्धि का सत्य है.. भूतत्व है.. अध्यात्म तत्व है अस्तीत्येव.. मेरी जीवन डायरियों की गहन साधनाओं अध्यात्म कविताओं का सार है अस्ति इति एव अस्तीत्येव।

"अस्ति इति एव" विक्षेप से जीवन का प्रारंभ है। इस सूक्ष्म धारण धर्म का उदय अहसास होता है। इस स्थल धर्म उल्लंघन समस्त विक्षेपों का रहस्य समझ आता है। हकीकत राय, सुकरात, दयानंद, ब्रूनो, भगतसिंह बिस्मिल, कुमारिल भट्ट आदि इस स्थल के ज्ञान की उपज थे अभय थे।

"क्या करुं? कहां जाऊं कौन उद्धार करेगा वेदों का?" इस राजकुमारी के प्रश्न का उत्तर था कुमारिल भट्ट। इसका उत्तर बनने यथार्थ जीवित उत्तर बनने की धुन थे पूर्व मीमांसा निष्णांत **कुमारिल भट्ट।** इन्हीं की परम्परा की एक कड़ी हूं मैं धर्म ह्रास वेद अवनति से उन्हे मर्मान्तक पीड़ा होती थी। इस पीड़ा में उन्होनें वेद विरोधियों को नष्ट करने का बीड़ा उठाया। कृत संकल्पता ली। उस समय बौद्धमत सर्वाधिक प्रबल कारण था वेद मत के ह्रास का। बौद्धमत का सशक्तम खंडन बौद्ध मत जानकर ही किया जा सकता था। श्रमणालयों में शिक्षा उपलब्ध थी बौद्ध धर्म की। श्रमणालयो में प्रवेश सहज सरल नहीं था कुमारिल जैसे वेदज्ञ का। बौद्धमत का अर्ध ज्ञान बिना अवरोध सहन करना कुमारिल की दूसरी मर्मान्तक पीड़ा थी पर संकल्प धनी था कुमारिल।

छद्म नाम से कुमारिल श्रमणालय प्रविष्ट हुआ। अर्धज्ञान निष्णांत हुआ। बौद्ध गुरु से शिक्षा ग्रहण की। पर एक दिवस वह महान वेदज्ञ वेदो की निंदा गुरु मुख से सुन सुन कर फूट फूट कर रो पड़ा। उसका रहस्य खुल गया और अहिंसक बौद्ध श्रमण कुमारिल हेतु हिंसक हो उसके प्राणों के प्यासे हो गए। उन पर कृष्ण सूत्र क्रोधात् □ संमोह □ स्मृतिभ्रंश सार्थक हुआ आत्म हना श्रवण कुमारिल के प्राणों के प्यासे थे पर कुमारिल किसी तरह आंख गंवा बचा।

इसके पश्चात कुछ वर्ष कुमारिल ने बौद्ध धर्म का मूल ही ध्वंस करना आरंभ किया। वेदों की पुनर्प्रतिष्ठा स्थापित की। वेदों की ओर लोग लौटे। हर शास्त्रार्थ कुमारिल विजयी रहा पर स्व शास्त्रार्थ हार गया। "अस्तीत्येव" उल्लंघन का उसका छद्मवेश धारण करना बड़ा गहन दुःख था। प्रायश्चित्त विधा का सत्य ज्ञाता था कुमारिल। स्वेच्छया "अस्तीत्येव" उल्लंघन का दंड भोगना है प्रायश्चित्त। तपोवन में कुमारिल बैठ गया शांत दैदीप्यमान तपस्वी और अपने चारों और गर्दन तक उसने भुस का आगार भरवा लिया। भुस लकड़ी के बुरादे को कहते हैं। उस भुस की आग में धिरे धिरे तिल तिल ताप सहन शक्ति की साक्षात मूर्ति वह कुमारिल भट्ट तेजोमय मृत्यु को प्राप्त हुआ। कितना सूक्ष्म था कुमारिल भट्ट "अस्तीत्येव" विक्षेप का संस्कार तथा उसके क्षय विधि का ज्ञाता था। सच्चा वेदज्ञ था न! मृत्यु द्वारा मृत्यु द्वार जाने का रास्ता उसने चुना। आश्रम था वह।

"श्रम-परिश्रम-आश्रम"

आत्मा के श्रम का नाम है **आश्रम**। सम्यक् भूषण भूत कृतिकरण हो जहां वहां है आत्मा का श्रम अर्थात आश्रम। और बुद्धि का श्रम हो जहां वहां है **परिश्रम** या सूक्ष्म श्रम या उच्च श्रम। और शरीर का श्रम हो जहां वहां है **श्रम**।

अमरता मृत्यु हार जीत श्रम परिश्रम आश्रम का एक संपूर्ण उदाहरण व्यवहार धरातल का इस प्रकार है।

यह नमित है ग्यारह वर्षीय लड़का कक्षा छे में पढ़ता। कई दिनों से यह अकेला बैट बाल खेल रहा हैं। मैं समझता हूं निठल्ला अपना समय बिताता है। इसकी माता जी कहती हैं "मैं इसे दिन भर खेलता देखती हूं पता नहीं क्या खेलता रहता है" एक दिन मैं उससे पूछता हूं वह बताता है "मैं क्रिकेट खेलता हूं" और मै दंग रह जाता हूं।

एक बैट एक भारी स्पंज गेंद दस फुट लम्बा बारह फुट चौड़ा आंगन दिवारें आधी ऊंची.. आम का पेड़ कचरे की टोकरी.

. कुछ कपड़े धोने के बर्तन बाल्टिया ही सामान है और यहां विश्व कप क्रिकेट से भी रोमांचक मैच हो रहा है। इतना रोमांचक कि क्रिकेट बोर्ड हक्का बक्का रह जाए। सारे मैच नियमबद्ध हैं अंपायरिंग त्रुटि नहीं हो सकती। पक्षपात की संभावना नहीं है और विश्व स्तर की टीमें बाकायदा हार रही हैं जीत रही हैं, खिलाड़ी आऊट हो रहे हैं। सलीम मलिक, सचिन तेंदुलकर, प्रवीण, कुम्बले, राणतुंगा, डिसिल्वा.. मैं तो नाम भी नहीं जानता सारे न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रिका आदि के खिलाड़ियों का.. सब बाउलिंग करते हैं. . खेलते हैं.. रन बनाते हैं.. आउट होते हैं.. कैच होते हैं.. सिक्स मारते हैं.. चौका मारते हैं.. दो रन, तीन रन, एक रन बनाते हैं। टीमे जीतती हैं.. हारती हैं। इन सबका एक नियंता है अकेला नमित.. जिसने नियमबद्ध सारी रचना की है।

नियम है सामने की दीवार कमरे पर गेंद सीधी लगने पर छक्का, नीची जाकर लगने पर चौका, पास पेड़ पर लगने पर एक रन, बायीं दीवार पर लगने से आधी दूरी पर दो रन, उससे अधिक तीन रन, दायीं दीवार चार रन, आधी दूरी दो रन, बाहर लगने पर एक रन, टंकी में गिरना कैंच आउट, दीवार पार कैंच आउट, कचरा बर्तन गिरना आउट, पीछे कालम में लगना बोल्ड आउट, उसके सामने पैर पर लगना एल.बी.डब्लू, सामने दीवार टकराकर कालम पे लगना रन आउट, और रह गई बाउलिंग और बैटसमैन इसकी भी स्वतः व्यवस्था है। नमित बाल फेंकता है.. सामने की दीवार पर वह टकराकर ठीक कालम की ओर सामने ही टप्पा खाती है। बालर सारे विश्व विख्यात हैं और बेट्समेन भी विश्व विख्यात हैं.. ग्यारह वर्षीय नमित सब कुछ है खेल का। बालर रूप में प्रसाद, कुम्बले, एम्ब्रोस, डिसिल्वा आदि हैं। बेट्समैन रूप में सारे विश्व खिलाड़ी हैं.. बाकायदा बालर बदलते हैं.. गेंद बदलती है.. बैट्समैन बदलते हैं.. रन बढ़ते हैं.. खिलाड़ी बोल्ड होते हैं.. कैंच होते हैं.. रन आउट होते हैं.. टीमे आउट होती हैं.. नमित आउट नहीं होता। वह स्कोरर है.. एम्पायर है.. खिलाड़ी है.. टीम है.. बहुत कुछ है। खेल की आत्मा है नमित। जीव है खिलाड़ी, मृत्यु जन्म है आउट होना पुनः खेलना। श्रम व्यवस्था है बैटिंग बालिंग, परिश्रम व्यवस्था है नियम, आश्रम व्यवस्था है स्कोरिंग टीमों की हार जीत। शंकराचार्य की ब्रह्म और उसकी माया का सच्चा उदाहरण नमित और उसका क्रिकेट हो सकता है शंकराचार्य ताउम्र अद्वैत सिद्धांत मानकर भी अद्वैत पर अनेक शास्त्रार्थ जीतकर भी अद्वैत का एक सटीक उदाहरण नहीं दे पाया था। उसके सारे उदाहरण द्वैत के हैं रस्सी सांप भ्रम रस्सी सांप दो हैं फिर एक है। सीप चांदी, सूर्य बुलबुला, ब्रह्म जीव सभी दो से एक पर उतरना है। दो कहते ही एक की अद्वैत की हत्या हो जाती है। नमित एक ही एक है चैतन्य पूरे क्रिकेट में। शंकराचार्य के रस्सी सांप और भ्रमित तीन है.. अस्तु।

अर्थ इन्द्रियों से सूक्ष्म होते हैं यह भी नमित क्रिकेट के व्यवहारी उदाहरण से स्पष्ट है। नमित की इन्द्रियां अर्थ व्यवस्था बंधी विभिन्न खिलाड़ियो की इन्द्रियां हो जाती हैं। इन्द्रियों से परे यह सूक्ष्म है अर्थ। अर्थ से परे मन, मन से परे बुद्धि सूत्र यहां भी लागू है। क्या अर्थ, मन, बुद्धि आदि की भौतिक माप संभव है? महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि वर्तमान में विज्ञान की इतनी प्रगति के बावजूद क्या शरीर के सावयवयवाद तत्व की खोज स्थूल धरातल पर संभव है? मनुष्य सावयवयवाद तो अति जटिल है। क्या मधुमक्खी छत्ते की मधुमक्खियों के समूहवाद स्थूल का कारण तत्व मानव ढूंढ सकता है? सामाजिकता अर्थ का क्षेत्र है और इसका मृत्यु से संबंध है।

"अस्थायी है व्यक्ति स्थायी है समाज"

जगत्यां जगत - अस्थायी है व्यक्ति स्थायी है समाज। स्थायी से अटूट मानव जीवन है। स्थायी से टूट भावना आत्महना भावना है। मानव मधुमक्खी या दीपक व्यवस्था से श्रेष्ठ सावयवयवादी समाज स्वरूप ऋग्वेद का संगठन सूक्त है। इस सूक्त में मानव समाज पुरुष का अवयव है समाज तथा व्यक्ति का आदर्श संबंध है। यह आत्म चैतन्य स्वरूप है इसका दूसरा छोर सामाजिक व्यवस्था का आत्महत्या स्वरूप है इसके मध्य में अपराधों और बीमारियों का क्षेत्र है।

वृषन (शांति के अन्त्य आधार अंकपनीय शक्तिमय) अग्ने (ज्योतित) अर्यः (अधिपति) विश्वानि (विश्वीय सत तथा सत् चित्) संयुषे - (नियमबद्ध युजित करता है) इलस्पदे (भक्ति के उच्चतम समर्पण परिशुद्धावस्था समर्पण पदावस्था रूप में) समह्ये (समज्योतित रे) स नः वसूनि आभार (तू यह हमें सामंजस्यमय जीवंतता से आपूर दे)

संगच्छध्वं (दायां बायां चलते चलते सा रे ग म प ध नी साथ दौड़ो) संवदध्वं (उदात्त बोलते साथ दौड़ो छत्तीस गढ़ी नाचा उच्चतम स्वरूप) सं वो मनासि (मन स्तर सम समानता धारी) जानताम् (बुद्धिस्तर समान) यथा पूर्वे देवा भागम् (ब्रह्मयुजित वत तुम यथा पूर्व स्थापित वत सब आचरण करो) संजानाना उपासते (समस्त उस चैतन्य जैव शक्ति निकटतम सम रहें)

समानो मनः (मनन का आधार ज्ञान बीज समान हो) समितिः समानी (संगोष्ठी सम हो), समानं मनः (मन समान हो) सहचित्तमेषाम् (समान उद्देश्य युजित सह कार्य समन्वित सावयवयवाद वत् श्रम विभाजन युक्त हो चित) समान मंत्रमभि मंत्रये (समान विचार बीजित लक्ष्य अभिमंत्रित सब हों) समानेन तो हविषा जुहोमि (समान पवित्र यज्ञीय खान पान युक्त हो हम खान पान समझदारी युक्त हों)

समानी व आकूतिः (संकल्प शरीर स्तरीय समानता अहसासमय हो सब) समाना हृदयानि वः (हृदय समयुजित तरलवत

हो) समानमस्तु वो मनो (सबके मन विज्ञानवान हों इनमें चारों वेद पिरोए हों) यथा वः सह सु अस्ति (उपरोक्त समस्त द्वारा सब हिलमिल कर उत्तमतम रहें।

यह वह स्वस्थ समाज विवरण है, वह समूह है जिस स्वस्थ समूह युजित स्वस्थ मानव के मन में आत्महना भाव जन्म ही नहीं ले सकता हैं। इस स्तर समाज व्यवस्था आत्म चैतन्य व्यवस्था है समाज मनुष्य परस्पर संबंधित है। मधुमक्खी समाज संरचना प्राणीय है चिन्तन रहित है मधुमक्खी के संदर्भ से परे मानव संगठन समाज व्यवस्था जो उपरोक्त है सुचिन्तित है। इसमे श्रम, परिश्रम आश्रम समन्वय है।

इस व्यवस्था का व्यवहारिक रूप इतिहास में दशरथ राज्य में उपलब्ध है। हम अंश विवरण दे रहे हैं।

"देवानाम्-पुर्-अयोध्या"

दशरथ प्रजा वर्ग पालक, वेदों के विद्वान, समस्त उपयोगी वस्तुओ के संग्रह कर्ता, दूरदर्शी, महान तेजस्वी यज्ञ करने वाले, प्रजा प्रिय, धर्म परायण, जितेन्द्रिय, महर्षियों के समान दिव्यगुण राजर्षि, अतिरथी (दस हजार महारथियों से एकाकी युद्ध करने में समर्थ), सत्य प्रतिज्ञ, बलवान, शत्रु रहित, मित्रों से युक्त, इन्द्रिय विजयी थे? (आज के प्रजाननों- दशानन का विकृततम रूप प्रजामत चयनित व्यक्ति सर्वोच्च पदाधिकारी प्रजानन प्रधानमंत्री कमांडो वीरों घिरे चूहे, पदलोलूप, वेद विहीन, धूर्तराज, जोडू-तोडू, छली कपटी के सर्वथा विपरीत)

उस उत्तम नगरी अयोध्या सत्य सार्थक नामी जिसके दरवाजे और अर्गला (घेरा) सुदृढ़ थे जो विचित्र विविध ग्रहों से सुशोभित (सुअभिकल्पित) कल्याण पुरी थी.. उसमें निवास कर्ता मनुष्य प्रसन्न, धर्मात्मा, बहुश्रुत, निर्लोभ, सत्यवादी, स्व-संपत्ति संतुष्ट, धर्म, अर्थ, काम, सिद्ध प्राचुर्य युक्त थे। वहां के सभी स्त्री पुरुष धर्मशील संयमी, प्रफुल्ल, शील तथा सदाचार की दृष्टि से महार्षियों की भांति निर्मल थे। वे तन स्वच्छ, कुंडल मुकुट, पुष्पाहार, चन्दन अंगलेप प्राकृतिक सुगंध पूर्ण थे.. भोग प्रचुर थे। उस पुरी में वेद के अंगो के ज्ञाता, व्रतो, सहस्त्राधिक्य दानी, अदीन, एकाग्रचित, सुखी रहते थे। क्षत्रिय ब्राह्मणों से ज्ञान की अपेक्षा रखते उत्सुक थे, वैश्य क्षत्रिय अनुशासन बद्ध थे, शिल्पकार कर्तव्य निष्ठ थे। ब्राह्मण कर्म निरत, इन्द्रियजयी, दान एवं स्वाध्यायरत, अप्रतिग्रही थे। अग्निहोत्र, यज्ञ सम्पादन, वेद निष्ठा हर अयोध्यावासी में थी।

राज्य में आठ मंत्री थे। धृष्टि, जयन्त, विजय, सुराष्ट्र, राष्ट्रवर्धन, अकोप, धर्मपाल, सुमंत्र। ये शुद्ध आचार विचार युक्त, मंत्रों के तत्व ज्ञाता, लक्षणों से कार्यज्ञाता, राजकार्य में निरंतर संलग्न, यश पूर्ण, नृप प्रिय, नृप के माध्यम से जन हितैषु थे। इनके नीति रूप नेत्र थे। दंड प्रयोग बलाबल आधारित तीक्ष्ण मृत्यु था।

मंत्रियों के समानांतर ऋषि व्यवस्था उनसे ज्ञानोच्च थी। वशिष्ठ एवं वामदेव थे राजा के ऋत्विज (ऋतु ऋतु की शासन प्रशासन की संधियों के सटीक ज्ञाता तथा उन संधि व्यवहारों के व्याख्याता) इनके सिवाय सुयज्ञ, जाबालि, कश्यप, गौतम, दीर्घायु, मार्कण्डेय, कात्यायन राज ऋषि थे।

ये तथा मंत्री वेदज्ञता के कारण विनयशील, सलज्ज, कार्यकुशल, जितेन्द्रिय, श्री सम्पन्न, महात्मा, शस्त्र विद्याज्ञाता, सुदृढ़ पराक्रमी, यशस्वी, तेजस्वी, क्षमाशील, कीर्तिमान एवं सौम्य सहज व्यवहारी, वे सत्यवादी थे। काम, क्रोध तथा स्वार्थ के वशीभूत होकर झूठ नहीं बोलते थे। (आज के प्रजानन मंत्रीयों से तुलनीय) समस्त देश काल उनकी योग्यता सिद्ध रही, संधि और विग्रह के उपयोग और अवसर का उन्हें अच्छी तरह ज्ञान था। (वे दशरूपकम् ज्ञाता थे)

यह एक सुसंगत समाज व्यवस्था थी जिसमें व्यक्ति चैतन्यता के सुआधार प्रकंपनो का सहज तिरोधान होता था। यह वह अवस्था थी जिसमें व्यक्ति मृत्यु की सोचता भी न था। मृत्यु की सोचने का प्रश्न ही नहीं आता है। जैव शक्ति एक उच्च संतुलन है जो प्रकृति संलग्नावस्था में प्रकृति में असंतुलन पैदा करता है। यह उच्च संतुलन अति सूक्ष्म धरातल का है।

इस सूक्ष्म धरातल का संबंध सूत्र है- "जगत्यां जगत" व्यक्ति अस्थायी जगत स्थायी। अस्थायी व्यक्ति के स्थायी होने का साधन है जगत। समाज अस्थायी व्यक्ति का स्थायी आधार है यह मृत्यु पार जाने, बीमारियों से पार जाने का सूत्र है। सुसंगत नियमबद्ध समाज, ऋत तथा शृत नियमाधारित समाज व्यक्ति पर भी ऋत तथा शृत प्रभाव छोड़ेगा। असंगत तितिर बितर अनियमित समाज जो प्रजातंत्र की अवश्यंभावी उपज है व्यक्ति पर असंगतता तितिर बितिरता अनियमों की छाप छोड़ेगा और व्यक्ति की विचार धारा ही विकृत हो जाएगी तथा व्यक्ति मानसिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक रुग्ण हो जाएगा। इस रुग्णावस्था की अन्त्य परिणति मृत्यु में होती है।

"आत्महत्या"

प्रसिद्ध समाज शास्त्री दुर्खीम कहता है। "प्रत्येक व्यक्ति के लिए शक्ति की एक निश्चित मात्रा से परिपूर्ण एक सामूहिक दबाव होता है। जो व्यक्ति को आत्महत्या के लिए विवश करता है। यह दबाव वास्तव में समाज के स्थायित्व के तत्व के कारण होता है। उस स्थायित्व तत्व के कारण ही व्यक्ति की अमरता का एक रूप समाज युजित है। यह व्यवस्था मात्र मनुष्य में है.. प्राणीवर्ग में

नहीं। मधुमक्खी समूह की सामाजिकता इसलिए नहीं है कि मधुमक्खी को समूह अमरता का भाव है वरन इसलिए है कि श्रम विभाजन मधुमक्खी की आवश्यकता है। मधुमक्खी श्रम विभाजन व्यवस्था आदर्श व्यवस्था है। इसमें छत्ता निर्माणक मात्र निर्माणक है। रानी मधुमक्खी मात्र जनती है, सेवक मात्र सेवक है, संग्राहक मात्र संग्राहक है तथा सूचक मात्र सूचक है, रक्षक मात्र रक्षक है, पर व्यवस्था संगच्छध्वं सवदध्वं नहीं है.. न हो सकती है.. संगठन सूक्त व्यवस्था वह आदर्श व्यवस्था है जिसमे मानव पर आत्महना भाव आ ही नहीं सकता है इस व्यवस्था व्यक्ति में मोक्ष भाव होता है। आत्महना तथा मोक्ष भाव मृत्यु स्तर के ओर छोर हैं.. सारी मृत्युएं इनके मध्य विभिन्न श्रेणीयों में विभाजित की जा सकती हैं। मृत्यु व्यवस्था का सीधा संबंध समाज व्यवस्था का है प्रजातंत्र व्यवस्था में मोक्ष भाव मृत्यु सामाजिक दुःखदभाव के कारण अपवाद स्वरूप ही होता है। यशेषणा मृत्युओं, वित्तेषणा मृत्युओं (हाय धन हाय खेती) पुत्तेषणा मृत्युओं की इसमे भरमार है। औद्योगिक दुर्घटना मृत्यु, सड़क दुर्घटना मृत्यु, अपोषण मृत्यु, बीमारी मृत्यु, पक्षाघात, हृदयघात मृत्युओं की भरमार है। लोग औसत सारे संसार प्रजातंत्रो के मिलेजुले रूप देखने पर एड़ियां रगड़ रगड़ कर मरते हैं.. इसमें आत्महत्याओं में भी दिनो दिन अभिवृद्धि होती जाती है... वर्तमान में तो पारिवारिक तथा सामूहिक आत्महत्याएं भी इस व्यवस्था में होने लगी हैं.. प्रजातंत्र समाज व्यवस्था आतंकवाद माध्यम से भी मृत्यु का कारण बनती हैं। सर्वोच्च प्रजानन सर्वोच्च मृत्यु भय के साए में सर्वोच्च घटिया जीवन विसंगति जीवन जीता है। प्रजातंत्र घटियातम स्वस्थ समाज प्रभाव डालने वाली व्यवस्था है। आत्महत्या तथा मृत्यु व्यक्तिगत के साथ ही साथ सामाजिक तथ्य भी है।

"आत्महत्या करने वाले व्यक्ति की क्रिया द्वारा व्यक्ति के व्यक्तिगत झुकाव का अनुभव होता है परन्तु वास्तव में ये झुकाव सामाजिक दशा के पूरक और प्रसारक होते हैं जिन्हे वे बाह्य रूप में अभिव्यक्त करते हैं"- दुर्खीम।

आत्महत्या सामाजिक ढांचे व संगठन के विसंगति तत्वों से प्रभावित व्यक्तिगत तथ्य है तथा मोक्षभाव या अमरत्व भाव या अभय भाव सामाजिक ढांचे के सुसंगत तत्वों से प्रभावित व्यक्तिगत तथ्य है। पति पत्नी से प्रारंभ होकर परिवार, कुटुम्ब, मुहल्ला, स्कूल, कबीला, धर्म, देश, राजनीति ये सभी समाज रूप में समाजीकरण करते हैं। प्रजातंत्रीय व्यवस्था में इसका स्वरूप तितिर बितिर अस्त व्यस्त ऊलजलूल है। यदि समग्र दृष्टिकोण से देखा जाए तो.. यहां अव्यवस्था विसंगति नियत है अतः व्यक्ति व्यक्ति पर असामाजिक प्रभाव नियत है अतः पुरुष के माध्यम से अर्थ विसंगति, बुद्धि विसंगति, मन विसंगति, इन्द्रिय विसंगति, विषय विसंगति तय है। अतः बीमारियों से लेकर आत्महत्या बीमारी भी तय है।

मृत्यु का विभाजन प्रकारों में करना असंभव है। आत्महत्या मृत्युओं का विभाजन भी (सटीक) असंगत है पर मोटा मोटा विभाजन संभव है। आत्महत्या के निम्नलिखित प्रकार माने गए हैं :- १) अंहवादिता के कारण, २) असमान्यता के कारण, ३) परार्थ के कारण।

अंहवादी आत्महत्या में व्यक्ति समाज से टूट कर व्यक्तिनिष्ठ हो जाता है तथा सामाजिक पृथक्करण अवस्था में आत्महत्या करता है। अकेलेपन में उपेक्षित महसूस होना या निरुपाय महसूस कर सामाजिक विसंगति में तीव्र हताशा इस आत्महत्या के कारण है।

असमान्यता अर्थात अत्यधिक असाधारण परिस्थितियों में मानसिक संतुलन अत्यधिक हताशा या प्रसन्नतातिरेक में खो देना इस प्रकार की आत्महत्या के कारण है। परार्थ आत्महत्या सामूहित हितातिरेक में की जाती है। पाक-भारत युद्ध में सरगोधा राडार व्यवस्था ध्वस्त करने अपने बदन में बाम्ब बांधकर हवाई जहाज को सरोगोधा राडार की व्यवस्था पर सीधा गिराना इस प्रकार की आत्महत्या है।

आत्महत्या सामाजिक तथ्य प्रभावित व्यक्तिगत तथ्य है। प्रजातंत्र व्यवस्था की ऊलजलूलता में अतिवृद्धि इसे सामाजिक तथ्य में विकसित कर रही है। अमेरिका में एक समूह विशेष ने विशिष्ट उत्तेजक पान कर सामूहिक आत्महत्या की। यह आत्महत्या "समूह स्वार्थ" के कारण हुई। यह प्रकार दुर्खीम की कल्पना में नहीं था। विश्व में परिवार, हम उम्र हम समस्या ग्रस्तों द्वारा समस्वार्थ, समसमस्या समूह आत्महताएं मृत्युओं का वर्तमान में विकृततम मृत्यु उदाहरण है। क्या मृत्यु बचाव की कोई अवधारणा वर्तमान प्रजातंत्री विचारों के पास है? निश्चित नहीं है। इतनी सी बात सारे प्रजातंत्री चिंतकों, संविधानों, विचारों को थोथा सिद्ध कर देती है।

भारतीय संस्कृति में एक शब्द "ऋत्विज" इस संदर्भ में प्रजातंत्र संविधानों से बड़ा है। "आत्महत्या मृत्यु" विजय के बीज ऋत्विज शब्द में है। इस शब्द की व्याख्या से पूर्व आत्महत्या संबंधी कुछ महत्वपूर्ण तथ्य देखें।

१) आत्महत्या व्यक्तिगत तथ्य है व्यक्ति अति विक्षेप के उत्पन्न है।

२) सामाजिक विसंगति इसके तथ्य है।

३) ग्रीष्म ऋतु में अधिक लोग आत्महत्या करते हैं।

४) पुरुष स्त्रियों की तुलना में अधिक आत्महत्या करते है।

५) अधिक उम्र व्यक्ति अधिक आत्महत्याएं करते हैं।
६) शहरों में आत्महत्याओं की संख्या अधिक है।
७) सैनिकों में आत्महत्या दर अधिक होती है।
८) अविवाहित परित्यक्त लोग विवाहितों की तुलना में कम आत्महत्या करते हैं।
९) भारतीय माह परिवर्तन- पूर्णमासी, अमावस्या पर आत्महत्याएं अधिक होती हैं।
१०) वय संधियों पर आत्महत्याएं अधिक होती हैं।
११) परिवार संस्थान नियमोल्लंघन आत्महत्याओं का प्रमुख कारण है -

"ऋत्विज व्यवस्था"

आत्महत्याओं के कारण लिंग, आयु, प्रदेश, जलवायु, परिवार, समाजधारित है। इन समस्त कारणों का निराकरण "ऋत्विज व्यवस्था" है। ऋत्विज शब्द का अर्थ है ऋतु ऋतु की संधियों का ज्ञाता एवं उसके अनुसार संस्कारों तथा यज्ञों का नियामक। ऋतु संधियां मौसम संबंधी, ऋतु संधियां उम्र संबंधी होती हैं।

यज्ञ का अर्थ है दान, यथावत व्यवहार एवं संगतिकरण। संस्कार का अर्थ है भूषणभूत सम्यकीकरण पूजा संगतिकरण एवं दान का संदर्भ बड़ों से आदरणीय व्यवहार, समानो से सगंत हिलमिल व्यवहार तथा औरों के प्रति उदारता भी होता है। "ऋत्विज" जीवन व्यवस्था दाता का नाम है। सोलह संस्कार, पंचयज्ञ, त्रिसंध्या, चार पुरुषार्थ, निमेष से मोक्षकाल, पर्वयज्ञ, त्रि साधना (सूर्य, चन्द्र, सुषुम्णा, स्वरानुरूप कार्य) चार वर्ण, चार आश्रम ऋत्विजोत्पन्न व्यवस्था है जो लिंग, आयु, प्रदेश, जलवायु, परिवार, समाज समस्त का सुसंगतिकरण करती है - इस व्यवस्था के अनुपालन से किसी भी व्यक्ति में, युवक में, युवती में, पुरुष में, स्त्री में, बालक में आत्महत्या के भाव का प्रवेश भी नहीं हो सकता है। वर्तमान की अस्तित्व पहचान संकट का इलाज इस व्यवस्था को लागू करना है। इस व्यवस्था में स्वस्थतम (व्यवहार दृष्टि से भी) सामाजीकरण का प्रावधान है। प्रजातंत्र की मूर्ख धर्म निरपेक्ष मान्यता (जो पाश्चात्य के कम स्तरीय सम्प्रदायों के लिए भले ही ठीक हो) के कारण भारतीयों (प्रकाश में रत रहने वाले ज्योति पथ आनंद प्राप्त करने वालों) ने इस श्रेष्ठ विधा का त्याग कर दिया है और समाज, व्यक्ति को असंगत संबधों में अटका परिवार आत्महत्याओं के कगार पर खड़ा कर दिया है। हा भारत! आ अब लौट चलें! **तमसो मा ज्योर्तिगमय, असतो मा सद्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय!**

मृत्यु पर जितनी मान्यताएं हैं, अंध विश्वास हैं, विज्ञान तथ्य हैं उतने शायद जीवन पर नहीं हैं। सारे विज्ञानों का आधार वाक्य "मृर्त्योमा अमृतं गमय" है - यह चिकित्सा विज्ञान की आत्मा है। अन्न विज्ञान कृषि विज्ञान की आत्मा है। यंत्र विज्ञान की आत्मा है। निवास विज्ञान की आत्मा है। रोटी, कपड़ा, मकान की आत्मा है। श्रम की आत्मा है। आराम की आत्मा है। जीवन दो ही स्थितियों का नाम है मृत्यु भय, मृत्यु अभय।

"मृत्यु तिथि नियतता अज्ञान की उपज है"

इससे पूर्व की हम मृत्यु नियत है आधारित चिन्तन करें इस पर चिन्तन कि मृत्यु दिवस क्या नियत है। बीमारी पर, दुर्घटनाग्रस्त होने पर, फोड़ा घाव होने पर, सिर दर्द पर अस्पताल भागता इलाज कराता इन्जीनियर शारदादीन मुझे कहता है। मैं नहीं मानता कि मृत्यु दिवस नियत नही है। "मृत्यु दिवस नियत है इसे परमात्मा नियत करता है।" शारदादीन अनेकानेक इंजीनियरों व्यक्तियों का प्रतिनिधि है। जिन्हे जीवन जीने और धारणा के मध्य विरोधाभास नजर नहीं आता है। "उसकी लिखी थी मर गया"। "जब बुलावा आता है कोई नही रोक सकता" "होनी प्रबल है" "मृत्यु परमात्मा के हाथ है", "मौत पर किसी का वश नही", "कौन जानें कब वह डोर खींच ले" "आती जाती सांस का क्या भरोसा", "जैसी उसकी मर्जी", "मालिक की रजा", आदि आदि असंख्य वाक्य मृत्यु तिथि नियतता संबंधी अज्ञान की उपज हैं। इन सब वाक्यों में कोई सार नहीं है।

चिकित्सा विज्ञान के प्रयासों से मानव की औसत आयु में वृद्धि मानवीय प्रयासों से मृत्यु तिथि को समग्र रूप से पीछे ढकलने का सामूहिक रूप से पीछे ढकलने का प्रमाण है। दो शत प्रतिशत समान परिस्थितियों में मृत्यु संभावना में एक व्यक्ति द्वारा चिकित्सा शरणागत होने दूसरे के न होने से प्रथम के बचने की संभावना का अधिक होना इस बात का प्रमाण है कि मृत्यु तिथी को पीछे ढकेला जा सकता है। आंतरिक रक्तस्राव के हजारों मरीजों को खून चढ़ाकर आपरेशन कर उनकी मौत तिथि को पीछे ढकेला जा चुका है। यह सब "सतचित" के प्रयास के फलस्वरूप हुआ है। "सतचित" जो कार्य करने में स्वतंत्र है। तीव्र कार्यों के द्वारा मृत्यु तिथि को स्वतः की या पर की को आगे पीछे ढकेल दे सकता है। वह इतना स्वतंत्र है कि निर्बाध स्वतंत्र है कि पौटेशियम सायनाइड खाकर आज को ही अपनी मृत्यु तिथि तय कर दे.. तथा इस कार्य के लिए उस पर कोई रोक नहीं है।

मृत्यु तिथि तय- निश्चित तय होने पर खान पान, चिकित्सा विज्ञान, रहन सहन, पाप पुण्य, कर्मफल आदि की पूरी व्यवस्था इस जीवन की भरभरा कर ढह जाएगी। तैरना न जानने वाला व्यक्ति समुद्र में कूद जाएगा.. मरेगा नही, लोग हवाई जहाज से बिना पैराशूट कूद जाएंगे.. मरेगें नही, पोटेशियम सायनाइड खा लेगें.. मरेंगे नहीं, किसी को किसी की मृत्यु करने पर दंड नही दिया

जा सकेगा, मानव प्रकृति नियमों के अनुरूप चलना छोड़ देगा। मृत्यु तिथि तय है एक घोर घातक विचार है। कुछ मूर्खों द्वारा प्रदत्त इस विचार ने मेरे उभरते अति उन्नति सम्भावना युक्त सत्ताइस वर्षीय एकलौते भतीजे- भैया परिवार के वारिस के असामायिक प्राण ले लिए।

मेरे भैया धार्मिक थे.. साठ इकसठ वर्ष की उम्र में उन्हे हृदयघात हुआ.. वे खानपान में नियमित थे.. पर स्निग्धतादि में संयमित नही थे.. उन्हें पारिवारिक चिन्ताओं की भीड़ घेरे रहती थी.. भाभी ने उन्हे जीवन में कभी स्वस्थ (वैदिक) सहयोग नही दिया। कुछ हृदयघात पश्चात की सावधानियों में भी त्रुटि हुई.. प्रातः आघात पश्चात् वे सामाजिक कार्य हेतु स्कूटर चला कर चले गए साथ तनिक ठीक महसूस होने पर दूसरे आघात पश्चात उठकर बाथरूम चले गए.. कार से उतरकर पैदल ही वार्ड में गए. . सांय आघात में उनकी मृत्यु हो गई। अति उच्च रक्त चाप ग्रस्त मेरे जीजाजी की रक्तचाप सबंधी सावधानियों को न लेने से तथा घर की चिन्ताओं के कारण तिरसठ वर्ष मे हृदयघात से मृत्यु हुई.. मेरे भतीजे ने इस पर मुझसे कहा "भापा मरने का दिन तय है.. किसी के करने से कुछ नहीं होता" मैने उसे समझाया "भैय्या तथा जीजाजी की मृत्यु के कारण दूषित खान पान प्रणाली तथा पारिवारिक जीवन प्रणाली में निहित है.. मृत्यु का दिन तनिक भी तय नहीं है, न हो सकता है.. वेद की भावना है हम सौ वर्ष तथा सौ से अधिक स्वस्थ अदीन जिएं.. तिथि तय होने से यह भावना निरर्थ हो जाएगी" नीटू ने कहा "नहीं भापा खान पानादि से कोई फर्क नहीं पड़ता मृत्यु तिथि तय है" मैने पुनः समझाने का प्रयास किया पर भीड़ की मान्यता यही रही कि मृत्यु तिथि तय है। नीटू भारी शरीर का है आधी अधूरी जांच में उसके खून में कोलस्ट्राल की मात्रा २५० से अधिक आई वह हवाई जहाज से बम्बई गया आया.. उसने भरपूर नानवेज खाया.. घर आने पर सायं मामी ने उसे पराठे खिलाए आलू के घी सिके.. सुबह उसने पूड़ियां खाईं.. फिर मक्के की घी सनी रोटी खाई.. उसे शेयर हानि ऋणादि की चिन्ताएं थीं ही.. बारह बजे उसने उल्टी जी मिचलाना महसूस किया.. ईशा (हमारी बहू) ने उससे कहां कि थोड़ी अदरख ले लो.. उसने कहा मैं मर जाऊंगा पर अदरख नहीं खाऊंगा (यह उसकी विशिष्ट तल मल खाने की विशिष्ट आदतों की ओर इंगन है).. वह लेटा.. सोया.. तीन बजे उठा.. बोला "मम्मी अच्छा नहीं लग रहा" मामी ने शुचि से कहां चाय बना.. शुचि ने चाय बनाई.. सबके साथ उसने ली.. घूंट भरा प्याला लुड़क गया.. नीटू हृदयघात से बैठा ही लुड़क गया। "मृत्यु तिथि तय है" ने एक जवान उभरता असंख्य संभावनाओ युक्त युवक खा लिया। सारी मूर्ख भीड़ मृत्यु तिथि तय है मानने वाली अपना सत्य भूलकर हाऽऽय हाऽऽय स्वर में रोने लगी। भीड़ कई दिनों बाद स्वस्थ होने पर पुनः बोली "लिखी को कौन टाल सकता है।"

लिखी को कौन टाल सकता है? पहले तो जो लिखी है कोई जानता नहीं है... दूसरा जो लिखी जा रही है वह सतचित अर्थात जीवात्मा लिख रहा है.. लिखी को लिखने में सत चित शत प्रतिशत स्वतंत्र है.. शरीर तो पल पल परिर्वतनीय है.. और अपनी इच्छा मानव खून को रक्त वाहिनियों में कोलेस्ट्राल की उल्टियां करने से रोक दे सकता है.. उन उलटियों को बढ़ा दे सकता है। शरीर की कोषिका कोषिका लिखी को सतचित टाल सकता है.. बचा सकता है। तीव्र कर्मों का फल इसी जन्म मिल जाता है. . सहज कर्मों का फल इसी जन्म मिलता ही है.. श्वास प्रश्वास प्राणायाम, योगासन, खान, पानदि कर्मों के फल इसी जीवन में मिलते हैं और ये मृत्यु तिथि को सीधा प्रभावित करते हैं। पर मृत्यु तिथि को अंत हीन आगे नहीं बढ़ाया जा सकता और इसका अर्थ यह होता है कि मृत्यु तय है मृत्युतिथि नहीं। तय मृत्यु भी सप्रयास सद्गति में बदली जा सकती है।

मृत्यु तय है.. कि परिर्वतन तय है.. दुनियां क्षर है.. जो गति करता है जगत है.. संसृत है संसार.. इतना सशक्त है यह प्रवहण कि सारे संसार में मानव इसे रोकने जुट जाए तो इसे रोक नहीं सकता। सारी दुनियां चाहे कि एक निमेष संसृत न हो... आगें न बढ़े.. वहीं रुक जाए तो पल को नहीं रोक सकता है। देखो समय कटना कितना आसान है.. यह आसानतम् चीज है.. और मानव कहता है समय कटता ही नहीं है.. इससे हास्यास्पद और कोई बात नहीं है। जैवशक्ति संतुलन उत्पन्न प्राकृतिक असंतुलन जब प्राकृतिक संतुलन के निकट पहुचता है तो जीव मृत्यु के निकट होता है.. ये अत्यंत विषाद पल होते हैं.. इन विषाद पलों में समय मापक चैतन्य (जड़ समय नहीं मापता है मात्र उससे प्रभावित क्रमबद्ध अक्रमबद्ध होता है) समय ठीक से माप नहीं सकता है तथा कहता है समय कटता ही नहीं है समय बड़ा भारी है और समय उसे वैसे ही काटने के निकट पहुंचा देता है जैसे वह प्रकृति को काटता है। "न ममार न जीर्यति" अमर काव्य नियम कितने सूक्ष्म हैं।

"इच्छा जीवन"

जीवन अवधि में मानव इच्छा मृत्यु है पर इच्छा जीवित नही है यह एक अद्भूत सत्य है जो वस्तुगत है। इस सत्य को मानव लांघ नही सका है.. भौतिक स्तर पर इसे लांघने का मानव प्रयास कर रहा है। मैं इसी पल पौटेशियम सायनाइड खाकर श्वास अवरुद्ध कर मृत्यु को प्राप्त कर सकता हूं.. बिना हृदय हृदय यन्त्रों से मानव को जीवित रखा जा सकता है। "इच्छा मृत्यु" हूं पर "इच्छा जीवन" नही हूं। सारे मृत्यु भय ग्रस्तों का चिकित्सा विशेषज्ञों का, चिन्तकों का लक्ष्य है "इच्छा जीवन" प्राप्त करना। क्या "इच्छा जीवन" लक्ष्य मानव पा सकता है? दयानंद से पूछा गया- "आप कहां हो?" वे बोले-"हे ईश्वरेच्छा में".. सुकरात ने

कहा था- "अब मैं चल दूं".. बिस्मिल ने कहा- "हम तो सफर करते हैं".. यह ही इच्छा जीवन है, सच्चा जीवन वरण है। "आत्मा" इच्छा जीवन है। शरीर भस्मान्तम् है। भस्म ही अंत है इसका? यह चिन्तनीय तथ्य है।

"चैतन्य-स्वीकृति से ही जड़ स्थानापन्नता"

अति चिन्तनीय तथ्य है यह कि **भस्मांतं शरीरम्?** यह वर्तमान विज्ञान उपलब्धियों के कारण चिंतनीय हो गया है। शरीर भस्म हो जाने पर भी संभव है आंखे, हृदय, किडनी, त्वचादि अमर रहे? पर इस जीवन को अमर नही किया जा सकता अंततः फिर भंस्मांतम् शरीर होगा ही? क्या ऐसा मनुष्य बनाया जा सकता है जिसमें हर अंग प्रत्यारोपित हों? इससे आगे क्या ऐसा मनुष्य बनाया जा सकता है जिसमें हर अंग कृत्रिम हो? पर वर्तमान में चतुर्थ स्तर कैंसर से त्रस्त जीवित नहीं रह सकता है। बिना वृक्क यंत्र वृक्क से मानव को जीवित रखा जा सकता है? सारे कृत्रिमों से क्या मनुष्य गढ़ा जा सकता है? उत्तर की ओर विज्ञान अपने औजारों में बढ़ रहा है। पर अध्यात्म के पास सदियों से इसका उत्तर है। "हृदय प्रत्यारोपण" तथ्य इस बीज सूत्र में निहित है कि **"आरोह इमं सुखं रथम्"।** "सुखं रथम्" "उत्तम इन्द्रिय युक्त रथम्" रथम्- अनुत्तम इन्द्रिय युक्त भी हो सकता है तथा अनुत्तम इन्द्रिय युक्त भी। रथम् तो जड़ है- जड़ स्थानापन्न हो सकता है पर चैतन्य की स्वीकृति से। जड़ जड़ से स्थानापन्न भी हो सकता है तथा जड़ शरीर से स्थानापन्न भी हो सकता है तथा शरीर शरीर से स्थानापन्न भी हो सकता है परकाया प्रवेश तो जन्म मरण सिंद्धात की आत्मा है।

कौन अस्वीकारता है अंग प्रत्यारोपण? गलत रक्त चढ़ा देने से आदमी मर जाता है। मांस पेशी इन्जेक्शन शिरा में, धमनी में लग जाने से मर जाता है आदमी। आखिर क्यों ? कोई तीव्र अस्वीकार करता है इस विजातीय है का। यह विजातीय अस्वीकार क्षमता से अधिक शक्तिशाली होता है। मम और न मम के मध्य एक और पदार्थ है मम भी न मम भी और जीवन में यही मुसीबत की जड़ है। यहीं से सारा मानव मृत्यु पतन आंरभ होता है। मम भी न मम भी में मम न मम के कई अनुपात हैं। आंशिक हानिकर से हानिकर से अतिहानिकर तक। इस मिश्र से जैव शक्ति समझौता कर लेती है। अंश अंश प्रभावित होती है.. सौम्य से लेकर तीव्र नशे इसी श्रेणी में आते हैं। दहलीज सीमा पार की आवाज, गंध, स्वाद, रूप, स्पर्श, भी इसी सीमा में आते हैं और दहलीज सीमा पार की अर्थवत्ता ज्ञान घटिया से सामान्य तक इसी सीमा में आते हैं पर मिश्र सीमा बचाव चैतन्यता पूर्वक करना पड़ता है। इन्द्रियों, मन, बुद्धि, अर्थ, सभी कचरा डाल कचरा निकाल, ब्रह्म डाल ब्रह्म निकाल सिंद्धात से बाध्य है। असत से सत की उत्पत्ति नहीं होती के सिंद्धातानुसार कचरा डाल ब्रह्म निकाल या ब्रह्म डाल कचरा निकाल सिंद्धात हो ही नहीं सकता - इतना सा तथ्य मिल्टन की एक दाहिने हाथ से लिखी एक मात्र पुस्तक "एरिगापेटियोका" की प्रजातंत्री प्रकाशन स्वतंत्रता का मटियामेट कर देता है उसे बायें हाथ की छीनी अंगुली के नाखून मैल से लिखी पुस्तक साबित कर देता है।

"न मम" अस्वीकार तन में स्वनिर्मित है। बड़े सूक्ष्म धरातल में ***("पूर्व पेन समाप्त")*** स्वनिर्मित है कठोरता पूर्वक निर्मित है पर मानव उसके उलंघन पर आमदा है। द्वितीय महायुद्ध में लंदन वासियों पर जर्मन अग्नि बम्ब बरसाए गए.. हजारों लोग जले. . एक चिकित्सा समस्या पैदा हुई। प्रयोगशाला के डाक्टर भी मैदान मे कूदे.. "चमड़ी दान" का आह्वान किया गया.. बड़ी संख्या में लोग चमड़ी दान करने पहुंचे.. पर निरर्थ... चैतन्यता ने जली चमड़ी पर नई चमड़ी अस्वीकार कर दी। डाक्टरों को बात समझ में नहीं आई। उनकी खोज जारी रही.. खोज जीन स्तर तक पहुंची और डाक्टर आश्चर्य चकित रह गए कि उस स्तर अस्वीकार होता है। डाक्टरों ने प्रयोग किए "समजीन" परिशुद्ध चूहे प्रयोगशाला में पैदा किए.. ये चूहे जुड़वा से अधिक जुड़वा थे। और इनमें चमड़ी प्रत्यारोपित की.. उन्हे सफलता मिली। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा यह देख कर कि एक सेल या कोशिका में या अंग में अगर एक जीन का भी अंतर है तो वह अंग प्रत्यारोपित करने पर मूल अंगयुक्त जैवशक्ति उसे अस्वीकार कर देती है।

खून मे होती है हीमोग्लोबिन जो रहस्यमय प्रोटीन है। हीमोग्लोबिन के कई प्रकार हैं जिन्हे ए, एफ, एस, सी, डी, ई, जी, एच, आई, जे, के, एल, एम नाम दिए गए हैं.. भ्रूण में हीमोग्लोबिन ए (अति ओषजन बंधक) होती है.. जड़ों मे हीमाग्लोबिन 'ए' (सामान्य ओषजन बंधक) होती है.. चार माह के शिशु में सारी हीमाग्लोबिन 'एफ' हीमाग्लोबिन 'ए' में बदल जाती है। ऐसे परिवर्तन जीन स्तर पर होते हैं। इसका संकेत विवरण भर यहां दिया जा रहा है। माता पिता से दो जीन मिल शिशु भ्रूण बनता है जीन स्तर ऊंच नीच होना सीधा हीमोग्लोबीन 'एच' से 'ए' परिवर्तन को दुष्प्रभावित करता कई तरह की रक्ताल्पता एफ से 'ए' परिवर्तन को दुष्प्रभावित करता टूटन बीमारियों को जन्म देता है दोनो जीन दोष हीमोग्लोबिन "ए" निर्माण प्रक्रिया में रुकावट द्वारा हीमाग्लोबिन एफ मात्र रह जाने से शिशु मृत्यु का कारण होता है। जन्म मरण तिथि का रहस्य बीज यहां प्रतीत होता है। पर यह इतना सरल नहीं है। गर्भ झिल्ली आर पार हीमाग्लोबिन 'ए' मां की ओर और हीमोग्लोबिन 'एफ' शिशु की ओर होती है। अतिबंधकता (ओषजन की) के कारण शिशुओं में ओषजन प्रवहण होता है। विश्व की विभिन्न जातियों/प्रदेशों में विभिन्न हीमाग्लोबिन (ए, एफ, सी, जे, के आदि आदि) विभिन्न अनुपातों में रहते हैं। खान पान रीति रिवाजों रहन सहन की विभिन्नता सूक्ष्म स्तर परिवर्तन करती है। मानव

जीवन में जीन स्तरीय परिवर्तन होते रहते हैं पर ये अंशतः होते हैं.. दहलीज सीमा मे होते हैं.. दहलीज सीमा के बाहर परिवर्तन कैंसर, एड्स, पार्किसन, एडीशनादि बीमारियों की ओर खीच ले जाते हैं.. तथा मृत्यु तिथि को प्रभावित करते हैं.. इन परिवर्तनो में वासना, काम, विवाह, यौन संबंध, स्वच्छन्द यौन, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ ब्रह्मचर्य आदि के नियम नियमन अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

"म्यूटेशन"

शिशु में भ्रूणावस्था में माता पिता जीनों से परिवर्तन (चिकित्सा विज्ञान में मात्र नकारात्मक वास्तव में सकारात्मक भी होता है) म्यूटेशन (Mutation) कहा जाता है। भारतीय संस्कृति में विवाहों के प्रकार ब्राह्म से पैशाच विषम परिर्वतनों के रोकने की ओर कदम माना जा सकता है। 'एस' हेमोग्लोबिन अतिकमजोर ओषजन बंधक है यह अफ्रिकन क्षेत्रों के लोगो में पाया जाता है तथा वहां मलेरिया भी ज्यादा होता है।

रसायनिक तौर पर ये हेमोग्लोबिन तनिक भिन्न है तनिक सी भिन्नता से महान भिन्नताएं जन्म लेती हैं। हेमोग्लोबिन 'ए' तथा एस के अणुओं में आठ आठ हजार परमाणु हैं। इसमें उन्नीस प्रकार के एमीनो एसिड हैं। कुल एसिडों की संख्या छै सौ है। इन एमीनो एसिडों के प्रकारानुसार अनुपात एक से पछहत्तर गुना तक है। मध्य में विभिन्न श्रेणियां हैं। इनके व्यवस्थापन प्रकार $१०^{६९६}$ है.. एक के आगे छै सौ तीस शून्य। हेमोग्लोबिन अणु द्वि सम भाग निर्मित है जो बराबर है। तीन तीन सौ एमीनों एसिड इसमें हैं। इस आधे भाग को एक एन्झाइम किण्व ट्रिप्सिन की प्रक्रिया से तोडकर लाइसाइन एवं अर्गिनाइन में बहने दिया जाता है। जहां अर्ध टेमोग्लोबिन चौदह हिस्सो में टूटता है। ये हिस्से पेपटाइड कहलाते हैं। जिसमें दो तीन से बारह एमीनो एसिड होते हैं इनको फिल्टर पेपर पर रखकर इसमें विशिष्ट द्रव्य डाल धन ऋण इलेक्ट्रोडों की मदद से इनका विश्लेषण किया जाता है। प्रोटीन विद्युत वैभव अनुरूप धन ऋण इलेक्ट्रोडों की ओर आकर्षित होते हैं हेमोग्लोबिन 'ए' तथा हेमोग्लोबिन 'एस' पर अलग अलग फिल्टर पेपरों पर अट्ठाइस दाग प्राप्त किए जाते हैं। ये दाग इनमे मूल चिह्न हैं इन चिह्नों की तुलना मनोरंजक है.. इनका पता रंजन पराबैंगनी किरणों के कारण से उत्सर्जित विभिन्न रंगो के कारण करते हैं। ये अट्ठाइस करीब करीब समान थे। पर चौथे दाग में तनिक अंतर था चौथा दाग तनिक बाया दाया था एस और ए हेमोग्लोबिन में। चौथा दाग नौ एमीनो एसिडों से बना था इन नौ नौ का एक क्रम था इस क्रम में हिस्टीडाइन वेलाइन लियोसाइन लियोसाइन थ्रियोनाइन प्रोलाइन ग्लूटेमिक एसिड ए में/वेलाइन एस में। ग्लूटेमिक एसिड लाइसाइन थे। दोनो में अंतर मात्र ग्लूटेमिक एसिड और वेलाइन का था ग्लूटेमिक एसीड पर ऋणावेश तथा वेलाइन बिना आवेश था तथा हेमोग्लोबिन सी में भी जो चौथे दाग का अंतर था उसका कारण उसमें लाइसाइन एमीनो एसिड पर ऋणावेश था।

"भारतीय संस्कृति और नोबल पुरस्कार"

इतने लघुत्तम अंतर महानतम जाति, कर्म, रहन सहन, सोच विचार, अंतरों को जन्म देते हैं या महानतम जाति कर्म रहन सहन सोच विचार अन्तरों से ये लघुत्तम अंतर पैदा होते हैं इनमें क्या सच है द्वितीय ही सत्य है। कारण मूल विक्षेप या अंतर नहीं होते हैं मूल सम सामंजस्य होते हैं। अर्थ विक्षेप बुद्धि विक्षेप मन विक्षेप इन्द्रिय विक्षेप एमीनो एसिड आवेश विक्षेप हेमोग्लोबिन विक्षेप रहन सहन विचार प्रणाली विक्षेप विचार प्रणाली सुधार अर्थ विक्षेप सुधार अर्थ सामंजस्य बुद्धि सामंजस्य मन सामंजस्य इन्द्रिय सामंजस्य एमीनो एसिड आवेश सामंजस्य हेमोग्लोबिन सामंजस्य। "अर्थ सूक्ष्मतम्" आधार स्थल है जीवन प्रणाली का। धर्म अर्थमय है - धन (अर्थ) धर्ममय हो काम धर्म मय हो हेमोग्लोबिन अमीनो एसिड एमीनो एसिड आवेश आण्विक नियंत्रण एन्जाइम माध्यम से चतुर्बल जैव शक्ति असंतुलन जैव शक्ति संतुलन मोक्ष इसी प्रकार का क्रम कल वैज्ञानिक निश्चित्तः सिद्ध करेंगे ही। गीता, दर्शन, उपनिषद, अरण्यक, ब्राह्मण, वेद विचार बीज व्यवहार धरातल पर सिद्ध हो नोबल पुरस्कारों की भरमार कर दे सकते हैं।

"मम स्वीकार ही स्वीकार होता है"

मम स्वीकार ही स्वीकार होता है न मम अस्वीकार ही अस्वीकार होता है पर मिश्र वर्ण संकरता मात्रानुसार खतरनाक होती चली जाती है।

कोषिका जीनों में परिवर्तन म्यूटेशन दुर्लभ होते हुए भी सुलभ हैं। परिवर्तित म्युटेंट कोषिकाओं में रहते हैं। आज के आम आदमी में पाए जाते हैं। ये एक प्रतिदस लाख कोषिका होते हैं। $१०^{१३}$ कुल कोषिकाओं में करीब एक करोड़ परिवर्तित जीन रहते हैं। ये परिवर्तित जीन मानो शांत आतंकवादी हैं पर अगर ये अशांत आतंकवादी हो जाएं तो मानव को दमा, कैंसर, पार्किन्सन बीमारी, या एलर्जी आदि हो जाए और हो भी जाती है।

"स्वस्वास्थ्य व्यवस्था हीन डेविड"

स्वस्वास्थ्य व्यवस्था या संस्थान मम न मम खूब समझता है। इसकी कोषिकाओं के माध्यम से व्यवस्थाए हैं.. बाह्य या आंतरिक न ममों के आधिक्य से लड़ने की। हमारा तन जीवाणुओं, बैक्टीरियाओं, वाईरसो का घर है और इनमे अधिकांश

हमेशा हमें मृत कर देने के लिए तैयार है क्योकि ये हमें मृत करने के लिए तैयार है.. हमारी व्यवस्था इनसे लड़ने के लिए तैयार है। क्या कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है जिसमें ये सब न हों? हां एक व्यक्ति इस संसार में कम से कम ऐसा है। वैसे कुछ बच्चे कुछ समय तक ऐसे रखे जाते हैं.. पर डेविड ऐसा व्यक्ति है जिसमें वाइरस, बैक्टीरिया आदि पैरासाइटस का प्रवेश ही नहीं हुआ। हम सोचते हैं कि उसकी जिन्दगी शानदार तथा भव्य होगी? नहीं उसकी जिन्दगी दयनीय है.. और उसे मजबूरन यह जिन्दगी जीनी पड़ रही है उसने जीवन में कभी फूलो की महक नहीं ली है, उसने मात्र जीवन के प्रथम पांच सेकंड सामान्य हवा में सांस ली है. . १९७४ में जन्मा डेविड नहीं जानता माता का चुम्बन.. पिता से लिपटने का प्यार क्या होता है? वह दोस्तों के साथ खेला नहीं है.. वह एकाकी जिन्दा है.. उसने किसी से हाथ नहीं मिलाया है.. सह दोस्तों से गले नहीं मिला है.. पांच वर्षों तक वह प्लास्टिक विशिष्ट डिब्बे से बाहर ही नहीं निकला है.. छे वर्ष की उम्र में उसके लिए विशेष वायु अवरोधक सूट बनाया गया.. जिसमें बाहरी हवा नहीं जा सकती.. प्लास्टिक डब्बे से सरककर वह इसमे प्रविष्ट होता है... डेविड के इर्द गिर्द सभी कुछ जीवाणु वाईरस रहित है जल वायु कपडे रुमाल खाना सूक्ष्म जीवाणु रहित वातायन ही डेविड का जीवन है.. जीवाणु प्रवेश का अर्थ है शुद्ध डेविड की मृत्यु। शुद्ध डेविड की महा मजबूरी है यह शुद्धता कि उसके शरीर में स्वस्वास्थ्य व्यवस्था ही नहीं है। डॉक्टर प्रतीक्षारत हैं कि कभी उसकी यह व्यवस्था लौट आए और वह दुनिया हो सके? मैं डेविड के विचार जानना चाहता रहा? पर मुझे कहीं भी उनकी भनक न लगी।

यदि मुझे डेविड के वातायन में रख दिया जाता तथा पाला जाता और बाकी जीवन मैं ऐसा ही जीता तो मै शतप्रतिशत आप्त होता और वेदों का सटीकतम अनुवाद कर सकता। मैं संसार में ही मोक्षित होता। जीवन को देखता। मैं देखता कि जैवशक्ति किस तरह वस्तुतः भौतिक धरातल पर प्राकृतिक संतुलन के समानांतर उच्च सम होती संतुलित होती है। मेरा रथं सुखं रथम् होता। भू अंतरिक्ष, द्यौ मेरा सहज आरोहण होता। भूः भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यम् मैं ओऽम् होता.. षोडसी ओऽम् होता.. द्वादषी ओऽम् होता.. अस्तु।

"आधा औना पौना मानव"

आज जिन्दा मानव जिन्दा कहां है? स्थैर्य एवं संतुलन जीवन का मूल लक्षण है। शांति जीवन का मूल लक्षण है और मानव द्यौ अशांत, अंतरिक्ष अशांत, पृथ्वी अशांत, आपः अशांत, औषधि अशांत, विश्वदेव (बाह्य अंतरिक्ष) अशांत, वनस्पति अशांत, ज्ञान अशांत, शांति - अशांत (यथा डेविड), समस्त अशांत, आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक अशांत है - घायल स्वस्वास्थ्य संस्थान, घायल संवेदन, घायल इन्द्रिय, मन, बुद्धि, अर्थ, मानव आधा औना पौना त्रस्त जी रहा है.. डेविड इसी मानव की उपज है। विश्व में इसी मानव के कारण डेविड वृद्धि हो रही है पर हर डेविड को जीवाणुरहित वातावरण नहीं मिलता लाखों पूर्ण तथा अर्ध डेविड मर जाते हैं.. मर रहे हैं। स्वस्वास्थ्य संस्थान के आधार अर्थ (विज्ञान) यहां तक नहीं पहुंचा है पर बदविचार का महा महा बोझ है प्रजातंत्र के विकृत विचार स्वातन्त्र्य के कारण और इन्हीं सारी अशांतियों के साथ मानव अशांति का मूल कारण है। पाणिनी के शुभ ही शुभ वाक् की ओर लौंटना... तत्काल लौंटना जरूरी है।

स्व-स्वास्थ्य कोषिका जन्म मरण पुर्नजन्म वत उम्र के साथ बढ़ता घटता है। स्वस्वास्थ्य संस्थान का सीधा संबंध मृत्यु से है। बचपन और बुढ़ापे की बीमारियों का कारण यही है। मम न मम इस पर आधारित है। कैंसर अन्य घातक तथा वंशज बीमारियों में भी इसी की भूमिका होती है। स्वस्वास्थ्य संस्थान की प्रथम कड़ी है चमड़ी तथा इनके नीचे चर्बी तह यह औसतः अभेद्य है तथा जीवाणु रक्षक है। पुरुष नारी में इस तह की मोटाई में मूलतः भेद है। नारी में तन लावण्य का कारण इस तह द्वारा दी गई भरावट है। खरोंचों घावों द्वारा यह तह टूटती है.. तनिक टूटन और टूटन से बाहरी जीवाणु आक्रमण कभी कभी खतरनाक होता है.. कुछ जीवाणु पैरों के माध्यम से तथा कुछ चमड़ी के माध्यम से भी भीतर जाते हैं.. कुछ इस तह में इन्जेक्शन द्वारा वायरस प्रविष्ट करा देते हैं यथा मच्छर.. स्वेद ग्रंथियों के माध्यम से यह तह बाह्य भीतर जोड़ती है.. इस तह खाई गई दवा बड़ी मुश्किल से पहुंचती है.. यह तह क्रमशः नवीनीकृत होती रहती है। आंख नाक, मुंह के लसीले भागों पर यह चमड़ी बड़ी पतली होती है। अतः ये स्थल बाह्य जीवाणुओं के द्वारा सहज अतिक्रमित किए जाते हैं।

"तलित जलित न मम और कैंसर"

श्वेत रक्त कण (कोषिकांए) वह सेना है जो तन में चलती फिरती दूसरी स्वास्थ्य व्यवस्था है। लाल रक्त कोषिका केन्द्रक विहीन होती है पर श्वेत रक्त कोषिका सकेन्द्रक होती है - नुकसान देह जीवाणु यह फौज युद्ध करने दौड़ती है और जीतती या हारती है। जीतने पर यह वे जीवाणु खा डालती है और कम संख्या होने पर यह हार जाती है.. घाव की स्थिति में पीब इसके अवशेष को कहते हैं। इनकी संख्या प्रति घन मिलीमीटर सात आठ हजार होती है.. पर बीमारी में बढ़ती है.. रक्त कैंसरों यह बोन मारो से इतनी धारा प्रवाह निकलती है कि इनकी संख्या लाख दस लाख तक पहुंच जाती है और उसी मात्रा में रक्त लाल रक्त कोषिकाओं की संख्या कम हो जाती है.. यह भयानक रक्ताल्पता मृत्यु का कारण होती है.. रक्त कैंसर को श्वेत खून भी कहा जा

सकता है। इसका कारण जीन संरचना में लघु दोष उसकी सत्रहवीं सीढ़ी के चौथे भाग में होना है। मेरे विचार मे इस दोष का मूल कारण काम संबंधी अर्थ विकृत होने पर, व्यवहार विकृत होने पर, जैव शक्ति सूक्ष्म धरातल पर मिश्र न मम (विशिष्ट प्रकार के धूम रूपी अति जलित - जैसे स्टेनलेस स्टील मे तेल जलीत तह सूक्ष्म होती है) को त्यागती नहीं तथा कोषिका में जीन स्तर तक प्रविष्ट हो भौतिक स्तर जीन संरचना दोष पैदा करती है.. इससे दो तरीकों से बचा जा सकता है तथा लोग बचे रहते भी हैं। एक अर्थ स्तर पर काम चिन्तन विकृत न हो। दो मानव तलित जलित सूक्ष्मतः तलित जलित इसमें तम्बाखू धूम्र आदि भी सम्मिलित हैं न ले। अर्थ स्तर विकृति अति सूक्ष्म धरातलीय है तथा इसे कैंसरग्रस्त मानव के लिए भी समझना कठिन कार्य है। दूसरे के द्वारा इस कारण के स्वरूप को जानना अत्यंत कठिन कार्य है पर व्यापक तौर पर इसके मोटे सिद्धांत तय किए गए हैं। वैदिक जीवन गृहस्थ के भी ब्रह्मचारी नियत सुव्यवस्थित काम विचार से यह अर्थ सुधार संभव है। खान पान का सुधार भी मृत्यु को पीछे ढकेल दे सकता है मेरी माता जी को तृतीय स्तर कैंसर था... आपरेशन निरर्थ था.. कमजोरी, पक्षाघात, पैर की तिरछी जुड़ी हड्डी के कारण वह चल फिर भी नहीं सकती थी डॉक्टरों ने हताशा अभिव्यक्त कर दी थी तथा उन्हें माह दो माह का मेहमान बताया था।

"आहार संयमन और मृत्यु"

मां दो शब्द कहती थी मेरा नाम तथा हरिद्वार, गंगाजी। उनकी हरिद्वार, गंगाजी जाने की अदम्य लालसी थी। इस स्थिति में मैंने उन्हे हरिद्वार ले जाने का निर्णय लिया। पिताजी और भैय्या ने कहा- "ले तो जा रहा है पर लाश वापस लाएगा।" मैंने अपना निर्णय न छोड़ा प्रथम श्रेणी पूरा आरक्षण कराया तब प्रथम श्रेणी सर्वोच्च श्रेणी थी... मां का आहार मात्र फलों का रस, दूध, दाल का छना पानी रखा.. मेरी पत्नी ने भरपूर सहयोग दिया.. मां हर स्थल गाड़ी परिवर्तन मैने गोद में उठाकर किया।

इलाहाबाद स्टेशन रात के बारह बजे मैं आरक्षण तथा ट्रेन का समय पूछने बाहर तरफ टिकट खिड़की गया.. मैने गुरु कुर्ता सकरी मोहरी सी पेन्ट पहनी हुई थी यह उस समय का नया नया फैशन गिना जाता था। मैं एक अंधेरे स्थान से वापस आ रहा था कि अचानक एक आदमी सांवला ठिगना सा गठे बदन का मेरे सामने आकर खड़ा हुआ तत्काल उसने जौनपूरी चाकू मेरे सामने खोल दिया.. मै कुछ पल हतप्रभ रह गया.. कुछ भी समझ न सका.. उस आदमी ने कहा - "साहब कोई रिस्क विस्क काम करना है तो अपन तैयार है।" मुझे होश आया (हतप्रभता से) मैं यह कहते कहते "नहीं भाई एसी कोई बात नहीं है" तेजी से वहा से हट आया। आज भी सोच स्तर सोचता हूं कौन सी मेरी त्रुटि थी जीवन त्रुटि थी की उस आदमी ने मुझे ऐसा घटिया सोचा।

कैंसरित मृत्यु आवरणित (डॉक्टरों, भैय्या, पिताजी के अनुसार) मां को सूक्ष्म स्तर अर्थ सत्य गंगा जी (पवित्रता संदर्भ) में जुड़ी मां को लखनऊ तथा बरेली रुकते हम हरिद्वार ले गए। मेरी गोदी मां की काया बचपन में मां की गोदी मेरी काया द्वि व्यवहार में अन्तर न था मैने मां को मां ने मुझे उष्म जल भिगोया। सुदेश जी ने भी मां की गजब सफाई सेवा की.. मां के आशीष हैं मेरा जीवन। मुझे स्मरण है मां का आह्लादित हो गंगा में हर की पेढ़ी पर नहाना.. पानी में हाथ मार मार कर नहाना.. और खुश होना.. आह्लादित होना। इसके बाद मां मेरे साथ तीन साढ़े तीन वर्ष रही.. आहार संयमन जारी रहा। एक दिवस मेरी अनुपस्थिति पीताजी उन्हे बीलासपुर ले गए.. वहां उन्होनें तले चिप्स खाए, अन्य खाद्य पदार्थ खाए.. मुझे तार मिला वे मौत कगार हैं.. मैं गया.. उनकी सद्गति का गवाह बनने।

"मृत्यु का व्यापार"

मृत्यु विभीषिका दहला देती है आदमी को। इस दहल के कारण आदमी मृत्यु का व्यापार करता है। इलाहाबाद है मृत्यु व्यापार का बाजार और मां की अस्थिया विसर्जित करने (मां की अंतिम इच्छानुरूप) मैं पहुंचा इस बाजार.. घिनौने बाजार.. तो इलाहाबाद से पांच छैः स्टेशन पूर्व शुरू हुआ। रिक्शा तय करने से पंड़ा पिडदान तक का घिनौना पन मैंने तर्क और वेद मंत्रो के सहारे पार किया अंतिम विवरण इस प्रकार है- मैंने नाव तय की मांसल अधेड़ उम्र मल्लाह ने नाव गंगा में उतारी.. गंगा उफान पर थी.. एक दुबला पतला पंडित मेरी इजाजत ले लालचवश साथ हो लिया... नाव गंगा मध्य पहुंची.. अकेला मल्लाह लहरें नाव को झकझोर रही थी। गंगा समुद्रवत उससे अधिक ही लहर रही थी.. मैं तरत् समंदी धावति आह्लाद डूब रहा था। साथ का पंडित घबराहट स्तर मल्लाह से पूछता है- "नाव खे लोगे न भैय्या!" मल्लाह चुप रहता है। लहरें नाव के आर पार भी कुछ बुंदिया बिखेर रही है.. मैं फुहार आह्लाद में हूं.. लहरों का उत्ताल विकराल रूप देख रहा हूं। अचानक एक बड़ी लहर नाव से टकराती है। नाव अंनियत्रित हो जाती है.. लहर की पानी सतह नाव के आर पार मुझे भिगो जाती है.. मैं चरम आह्लाद वेद मंत्र तरत् समंदी गाता हूं.. और मौत का व्यापारी पंडित पानी से कम पसीने से ज्यादा नहाता है। मल्लाह के सामने गिड़गिड़ाता सा है मल्लाह नाव सम्हालता है.. मैं पंडित से कहता हूं "वेद मंत्र गाओ पंडित क्या आह्लाद है" गंगा मध्य अचानक पांच छैः डोंगिया आती है.. मल्लाह कहता है "अस्थियां विसर्जित कर सकते हैं आप" मैं अस्थियां लाल झोलिया से गिराता हूं... झोलिया फेंकता हूं डोगिंया मछुआरे में से एक गंगा कूदता है.. डुबकी मारता है... गजब फुर्ती.. गजब साहस.. गजब क्षमता और उसके हाथ में लाल झोली और कुछ अस्थियां है। वह मृत्यु अस्थि व्यापारी मुझसे कहता है "पचास रुपए दीजिए" मैं कहता हूं "क्यों दूं" वह कहता है "तब अस्थियां

गंगा में डालूंगा।" मैं कहता हूं "नहीं दूंगा तो क्या करोगे?" वह कहता है "जमीन पर फेंक दूंगा कौए उठाएगें" मै कहता हूं- "देखो भाई मेरा कार्य था अस्थि प्रवाहित करना तो वो मैने शांति मंत्र पढ़ प्रवाहित कर दीं उसका फल मुझे मिलेगा। कार्य अस्थियां नदी से निकाल लेने का तुम्हारा है उसका तुम्हें फल मिलेंगा.. यह तुम जानो.. मैं तुम्हे पैसे क्यों दूं?" "अच्छा साहब" वह कहता है "बीस रूपए दे दीजिए"। मैं कहता हूं "मैं अपनी बात कर चुका.. आगे तुम चाहो करो" वह आगे कहता है "अच्छा साहब मैं अस्थियां नदी में फेंक देता हूं" वह फेंकता है.. "अब तो दस रुपये दो" मैं उसकी बात अनसुनी कर वेद मंत्र पढ़ता गंगाजल से स्वयं को सींचता हूं.. किनारे पहुंच नहाता हूं। दुबलू पंडित मेरे साथ है.. रिक्शा करता हूं.. पंडित मुझसे पैसे मांगता है.. मैं कहता हूं "किस बात के? बल्कि तुम मुझे नाव का आधा किराया दो" वह खीसे निपोडता है.. "मैं इतनी दूर आया" मैं कहता हूं "वह तुम जानो?" "अच्छा साहब मेरे को रास्ते में-मुहल्ले छोड़ दोंगे" -वह कहता है। "ठीक है बैठ जाओ" -मैं कहता हूं। वह गमछे से पसीना पोछंता है। रास्ते में मुझे ज्ञानी आदि कह मक्खन लगाता है अपने मुहल्ले उतर जाता है और नया गमछा रिक्शें में भूल जाता है.. वह मैं रिक्शें वाले को दे देता हूं।

"श्वेत रक्त कोशिका"

श्वेत रक्त कोशिका व्यवस्था को सत भोजन, सत विचार, सत आचार अर्थात अर्थ स्वस्वास्थ्य से शक्ति मिलती है। सत अर्थ जीवन में आह्लाद भरता है। और जैवशक्ति स्तर जो चारों शक्तियों से सूक्ष्म चारो शक्तियों का उपयोग करती शक्ति है, सशक्त होती है।

"न मम व्यवस्था स्थापक-कैंसर नष्टीकरण"

श्वेत रक्त कोशिका के पश्चात् तृतीय स्तरीय स्वस्वास्थ्य व्यवस्था भी है। श्वेत रक्त कोशिका व्यवस्था के साथ साथ अन्य रक्ताणु (कोशिकाएं) भी जिनकी संख्या करीब १००० से २०,००० तक हो सकती है उत्पन्न होती है.. यह औसत आदमी के बदन में इनकी कुल संख्या ३० से ४० अरब (बिलियन) होती है। इसके तीन प्रकार होते हैं - एक "टी" लिम्फोसाइट, दूसरा बी लिम्फोसाइट तीसरा शून्य (न टी न बी) लिम्फोसाइट। टी लिम्फोसाइट - थाइमस में बी लिम्फोसाइट बुर्सा ऑफ फैब्रिसियस (बड़ी आंत के पास) में जो मात्र अंडजो में स्पष्ट होता है। स्तनजों में माना जाता है कि यह आंतो के लिम्फायड धब्बों में या बोन मारो में होता है (इसकी निश्चयात्मकता ढूंढों नोबल पुरस्कार प्राप्त करो) अंडजो से उत्पन्न नामकरण से स्तनजों तथा मनुष्यों में इसे बी लिम्फोसाइट कहा गया है। मूलतः ये रीढ़ोत्पन्न हैं तथा इन्हें तना कोशिका (स्टॅम लिम्फोसाइट) कहा जाता है। तना रक्ताणु ही विभिन्न श्रेणियों में विभाजित होता है। इनका आदमी अनुपात टी = ५०.६० प्रतिशत बी = २०.३० शून्य = १०.२० प्रतिशत। बी लिम्फोसाइट न मम व्यवस्था के स्थापक हैं - विषम अंग अस्वीकार, वाइरस प्रतिकार, कैंसर नष्टीकरण इनसे ही होता है। थाइमस निकाल देने पर बदन में एन्टीजन बनते रहने पर भी जीव बीमारी मृत्यु को प्राप्त होता है। अंडजो में बुर्सा ऑफ फैब्रिसियस निकाल देने पर एन्टीबॉडी नहीं बनती। टी लिम्फोसाइट आणविक सरंचना में विदेशी न मम नुकासानदायक तत्वों को भयानक शिंकजें में विभिन्न आकारित हो कस करके नष्ट करते हैं इनके आकार को एन्टीजन कहते है तथा बनते प्रोटीन को एन्टीबॉडी इस शिंकजे में न मम बैक्टीरिया या वाइरस अशक्त हो जाता है श्वेत रक्ताणु से लड़ नहीं सकता और दम तोड़ देता है या दूसरे बैक्टीरिया से चिपक निरर्थ हो जाता है। बुर्सा निकाल देने पर यह नहीं होता है पर वाइरसों का भौतिक त्याग डामाफिक अनुपयुक्त अंगो का अस्वीकार, होता रहता है। शून्य लिम्फोसाइट की भूमिका का अभी पता नहीं है (ढूंढ लो नोबल पुरस्कार पाओ)।

"अनाहत ग्रंथि"

थाइमस ग्रंथि जो लिम्फोसाइट बनाती है या परिवर्तित करती है अनाहत ग्रंथि कही जा सकती है तथा इस टी लिम्फोसाइट को अनाहत रक्ताणु कह सकते हैं। बी लिम्फोसाइट को मूलाधार रक्ताणु या बुर्सा को मूलाधार कहा जा सकता है। क्या चक्र व्यवस्था स्वस्वास्थ्य व्यवस्था है? मूलाधार से सहस्राार चक्र मानव जीवन केन्द्रक है.. इसमें सहज मस्तिष्क, विचार मस्तिष्क, युगल मस्तिष्क का अस्तित्व है.. बोन मारो व्यवस्था है.. जो अजस्र रक्त धारा प्रवाहिणी है.. समस्त आसन व्यवस्था इसे ही स्वस्थ रखने की योजना है।

शरीर व्यवस्था में तन रक्ताणु प्रतिपल हड्डी सार से उत्सर्जित होते हैं। इनमें से पचास साठ प्रतिशत अव्याहत चक्र से गुजर अनाहत रक्ताणु तथा बीस तीस प्रतिशत मूलाधार चक्र से गुजर (विज्ञान को सटीकतः नहीं मालूम- ढूंढो नोबल पुरस्कार पाओ) मूलाधार रक्ताणु तथा दूसरा बीस प्रतिशत माणिपूरक चक्र से गुजर (सभंवतः) मणिपूरक (शून्य) रक्ताणु बनाते हैं। ये यहां से (स्प्लीन) यकृत तथा लिम्फ नोड में इकट्ठे होकर पूरे शरीर में युद्धक रूप में फैल जाते हैं। पूर्व में बता आए हैं कि लाल रक्ताणु केन्द्रक रहित भी मूलतः सिर की हड्डी, रीढ़ की हड्डी एवं पसलियों में निहित हड्डी सार से व्यक्ति में बनते हैं बच्चों में लम्बी हड्डियों में भी बनते हैं। प्रथमतः यह एक बड़ी कोशिका अरक्तिम रूप में "मेगालोब्लास्ट" नामी महाविभाज्य रूप में पैदा होता है तब इसका रंजन होता है और यह इरिथ्रोब्लास्ट या रक्ताभाज्य कहलाता है। इसका पुनर्विभाजन जारी रहता है आकार सिकुड़न होती है तथा इसे

"नार्मोसाइट" कहते हैं। यहां तक इसमें केन्द्रक रहता है। मान्याकार इसका केन्द्रक लवलीन हो जाता है तथा यह "रेक्टीकुलाइट" सुधारित रूप में रक्त प्रवहण में आ मिलता है कुछ घंटो में यह लाल रक्ताणु रूप में परिष्कृत होता है। खून में आधा प्रतिशत खून रेक्टीकुलाइट सुधारित रूप में हमेंशा रहता है। लाल रक्ताणु कार्य पश्चात् मृत्यु को प्राप्त होता है विभाजित हो बढ़ता नहीं है। यह कोशिका नहीं अकोशिका कहलाता है अकोशिका यह सकेन्द्रक कोशिकाओं का जो द्वि चतुः विभाजित होती हैं का आधार तथ्य है।

"कुंडलनी चक्र योग"

"हड्डी सार सुषुम्ण" एक महत्वपूर्ण तथ्य है। कुंडलनी चक्र योग व्यवस्था इसके सुसंचालन हेतु प्रतीत होती है। भू जनः, स्वः, महः, तपः, अनाहतः, भुवः, सत्यम् व्यवस्था संभवतः स्वस्वास्थ्य विधान व्यवस्था है। हो सकता है इतने प्रकार के रक्ताणु उत्सर्जन परिवर्तन केन्द्र सुषुम्ण नाड़ी में हो। विज्ञान को यह पथ मृत्यु रहस्य पाने जीतना है।

कई मुर्दे अमेरिका में जीवन का इंतजार कर रहे हैं। जिन्दा प्राणी अतिशीतल व्यवस्था जमा दिया जाए तो वह एक जड़ सुषुप्ति अवस्था पहुंच जाता है इसे क्रमशः ऊष्म करने पर ये जीवन में वापस लौट आता है। अमेरिका में हृदय मृत्यु पश्चात् तत्काल मुर्दों को अतिशीत जमा रखवा दिया गया है उनके परिवारजनों द्वारा। कल विज्ञान उन्नति शायद ये भूत (जो होकर न रहे) जी उठे। आदमी में अदम्य लालसा है जीने की और हर अति जीने के प्रयास में आदमी मरने की ओर बढ़ता चला जाता है।

"मौत से भयंकर है भूख तड़पन"

एक मनहूस था.. जिस काम में हाथ डालता असफल होता था.. उसने बच्चों के स्कूल के सामने सस्ता भोजनालय खोला.. सरकार ने स्कूल में खाना मुफ्त कर दिया.. एक कार्यालय के सामने चाय नाश्ता दुकान खोली.. उस कार्यालय में ही सबको टेबल पर ही नाश्ता देने की व्यवस्था व्यवस्थापकों ने कर दी। एक मित्र ने मनहूस को सही सलाह दी "तुम कफन बेचने का काम शुरु कर दो" और मनहूस ने वह काम शुरु कर दिया.. परम मनहूस था वह.. सच! लोगो ने मरना ही छोड़ दिया.. पर दुनियां में इतनी भीड़ हो गई कि लोगों का खाना पीना ही नहीं मिल सका और वे भूख से तड़पने लगे.. आदमी भूख से तड़पे और न मरे यह स्थिति मौत से भंयकर है। मौत जीतने का मूर्ख प्रयास करने वाले आदमी कहीं तू इसी नियति की ओर तो नहीं बढ़ रहा है?

"मृत्यु अपवाद नियम नहीं है"

मृत्यु एक समझ है जो बड़ी देर से समझ आती है। एक बार युधिष्ठिर के पास एक भीखारी आया जो चीथड़े पहने कंगाल था उसने युधिष्ठिर से भीख मांगी युधिष्ठिर के पास उस समय कुछ भी उसे देने के लिए नहीं था। उन्होंने कहा "भाई कल आकर ले लेना।" भीम वहीं खड़ा था भीम ने मुनादी पीट दी ढोल पीटते हुए कि "युधिष्ठिर ने काल तथा मृत्यु को जीत लिया है युधिष्ठिर को मालूम है कि भिखारी और वह भी कल जिंदा रहेगे.. उन्हें ये भी मालूम है कि वे राजा और भिखारी, भिखारी ही रहेगा।"

भीम ने अपवाद को सदा सत्य मानकर अपनी बात कही थी। अपवाद सदा सत्य नहीं होता है तभी तो किक्रेट मैच, ओलंपिक, चुनाव, निर्माण आदि भूतकाल में तय किए हुए समयों दिनों पर होते हैं। मृत्यु अपवाद नियम नहीं है पर मृत्यु तिथि अपवाद नियम है ये भीम ने मुनादी पीटते समय नहीं सोचा था।

"मरघट का मुर्दा नगर"

महाभारत और शैक्सपियर के नियमों के अनुसार तो हम सब मरघट के मुर्दा नगर में रह रहे हैं। इस मुर्दानगर में मुर्दे चलते फिरते हैं.. बोलते चालते है.. हाथ मिलाते हैं.. बातचीत करते हैं.. बिल्कुल जिंदो की तरह। युधिष्ठिर ने अर्जुन के गांडीव का अपमान किया अर्जुन का संकल्प था कि गांडीव के अपमान करने वाले का वध कर दूंगा। अर्जुन युधिष्ठिर का वध करने को तत्पर हुआ कृष्ण ने तर्क दिया "बड़ो का अपमान ही बड़ो का वध है" अर्जुन ने युधिष्ठिर को 'तुम' कह दिया युधिष्ठिर का वध हो गया। प्रजातंत्र वह घटियातम पद व्यवस्था है कि बड़े इसमें हर पल अपमानित है अतः करीब करीब हर व्यक्ति वधित है यह मरघट का मुर्दानगर है।

"महाभारत, रामायण- मृत्यु प्रकार ग्रंथ"

महाभारत तथा रामायण मृत्यु प्रकार ग्रंथ है। मृत्यु रहस्य है इस रहस्य की विचित्रता के साथ मृत्यु तय है का संवाद इन ग्रंथो की विशिष्टता है। महाभारत तथा रामायण से यदि मृत्यु प्रकरण निकाल दिए जाएं या सहज सम कर दिया जाए तो महाभारत तथा रामायण पचास प्रतिशत से भी कम रह जाएगी। महाभारत का आंरभ "इच्छा मृत्यु" शांतनु पुत्र भीष्म से होता है भीष्म प्रतिज्ञ भीष्म "इच्छा मृत्यु" थे और उन्होने भी शिखंडी के आड़ से अर्जुन के बाणों से शर शय्या शयन किया शर गंगाजल छः माह प्राण रक्षण कर इक्कीस मार्च (सूर्य के उत्तरार्ध प्रवेश दिवस) प्राण त्याग दिए थे। सौ गालियों क्षमा शिशुपाल का सुदर्शन चक्र द्वारा एक सौ एकवीं गाली सिर कटकर मृत्यु, अपराजेय द्रोण की अश्वत्थामा हतो अस्त्र त्याग बैठ जाने पर धृष्टद्युम्न द्वारा सिर काट कर मृत्यु, कर्ण कुडंल कवच दानी सुरक्षित दक्ष धनुर्धर कर्ण की रथ पहिया धंसने से अर्धकुशल हो जाने से मृत्यु, दुःशासन की मृत्यु

पश्चात् छाती चीर भीम द्वारा रक्तपान, कीकच हीडम्ब की वध मृत्यु, सिर काट भूमि गिराने के सिर के सौ टुकड़े वर प्राप्त, संध या तक अविजित, अर्जुन अग्नि प्रवेश काल, अति संध्या काल रवि किरण कारण सिर काट जयद्रथ का सिर तप करते पिता की गोदी में गिरने के पिता के उठने से सिर भूमि गिरने से पिता सिर सौ टुकड़े, मृत्यु यह द्वि मृत्यु, गांधारी तप दृष्टि वज्र शरीर मात्र जांघ गुप्तांग छोड़ अजेय मल्ल गदा योद्धा दुर्योधन की कृष्ण द्वारा प्रतिज्ञा स्मृत भीम द्वारा गदा से जांघ भंग हत्या, निस्तेज अर्जुन अरक्षित बहेलिए के चक्षु लक्ष्य तीर से पगाहत कृष्ण का मृत्युवरण, अश्वत्थामा का मणिहरण अर्धमृत्यु, अभिमन्यु की सप्त योद्धा आक्रमणित अस्त्रहीन चक्रव्यूह हत्या, पांडव पुत्रों की रात्रि में पांडव धोखे में अश्वत्थामा द्वारा हत्या तथा पांडवों की हिमालय गलन क्रमशः चलते चलते स्वर्गारोहण मृत्यु, महाभारत मृत्यु प्रकार का शास्त्रीय ग्रंथ है इसी प्रकार रामायण ताड़का, सुबाहु, मारीच, प्रक्षेपण, तथा मृगरूप मृत्यु, दशरथ मृत्यु, जटायु मृत्यु, अहिल्या मोक्ष उद्धार, सात इरछ तिरछ ताड़ वृक्ष भेद वालि मृत्यु, रावण, कुम्भकरण, मेघनाथ आदि की मृत्यु, सीता धरती समाना, अग्नि परीक्षादि, महाभारत मृत्यु प्रकारों से भी भिन्न है - लक्ष्मण, रामादि मृत्यु इससे सिद्ध है कि मृत्यु एक महान सत्य है जिससे महानतम सत्य की उपज हुई है।

"मृत्यु ने इतिहास उत्थान नहीं देखे"

मृत्यु ने इतिहास पतन देखे हैं मृत्यु ने इतिहास उत्थान नहीं देखे है। शानदार स्वर्गारोहण से पूर्व शानदार मोक्षरोहण था। शानदार स्वर्गारोहण से मानव ने हत्या विभिन्न तरीकों की आत्महत्या नींद की गोलियां खा, कीटनाशक पी, ट्रेन से कटकर, आदि आदि तरह की मृत्युओं तक इतिहास सफर तय किया है और लगातार मनुष्य करता रहा है। आत्मा अमर है।

"ज्ञान-कदम सबसे लम्बे, सबसे सूक्ष्म"

पांच युग है इतिहास के मानव इतिहास के जो मर गया है वो मृत युग है जो सोता है वह कलयुग है जो करवट बदलता है वो द्वापर है जो उठकर खड़ा हो गया वह त्रेता है और जो चल पड़ता है वह सतयुग है। ज्ञान के कदम सबसे लम्बे सबसे सूक्ष्म हैं जो ज्ञान कदमों से चलता है वह सतयुग छोटा कर देता है।

मृत्यु के इतिहास पतन विचित्र हैं वेद, अरण्यक, ब्राह्मण, उपनिषदों, गीता, दर्शनों, भक्ति साहित्य में मृत्यु विवरण यथोचित है यदि परिशुद्ध भारतीय संस्कृति को लिया जाए तो उसमें मृत्यु को सामान्य से अधिक महत्व औसतः नहीं दिया गया है महाभारत तथा रामायण की मृत्युएं युद्धों की उपज हैं जो आवश्यक है। इसके विपरीत पाश्चात्य संस्कृति या इस्लाम संस्कृति तथा भारतीय पुराण संस्कृति में मृत्यु विवरण, मृत्यु आधारित राज्य परिवर्तन, स्वर्ग नरक प्रकरण, इस्लाम में पांच नमाजों के समय मृतक लाश को भी सांप काटने, कब्र सिकोड़ दर्द देने, उसमें आग झोंकने आदि की संकल्पानाएं ईसाइयो के भूत प्रेत लाश जीने आदि की संकल्पानाएं न्याय दिन की संकल्पनाएं, पुराण की स्वर्ग नरक की भौतिकी धारणाएं सब अज्ञान की उपज हैं। अब तो इतना मृत्यु पतन हो चुका है कि सारे समाचार पत्र मानों मृत्यु समाचार पत्र हो गए हों भारतीय नेताओं का दूसरा नाम मजार (समाधि) पूजू हो गया है। प्रधान मंत्रियो, राष्ट्रपिताओं की मृत्यु जिस शाही शान से होती है उससे कोई सोच ही सकता कि एक मजदूर या भिखारी की मृत्यु भी मृत्यु है? मृत्यु जैसी सम सर्व सम चीज के क्षेत्र में भी प्रजातंत्र ने विषमता की महादीवारें खीच दी हैं।

"मानवता संवेदनहीनता पर कफन"

भिलाई नगर में पिछले दिन दो महिलाओं की मृत्यु एक ही दिन हुई। सयंत्र के बाहर फारेस्ट एवेन्यू के किनारे एक जवान पागल महिला जिसका चेहरा नुचा हुआ था अधोवस्त्र ओढ़ा हुआ अर्धनग्न भरे वक्ष लाश पड़ी थी.. हजारों लोगो ने उसे देखा.. पुलिस ने भी देखा पर किसी ने न देखा कि मृत नारीत्व अर्धनग्न कुचला हुआ पड़ा है.. मैने उस अर्धनग्न कुचले मृत नारीत्व को लट्ठे का श्वेत कफन वस्त्र दे दिया। वह कफन वस्त्र मेरे से पूर्व सारे गुजरनेवालों के लिए भी था जो मानवता संवेदनहीन थे।

इसी दिन प्लांट के अंदर एक पंप हाउस के पास एक यूनियन की सदस्या विझवारिन बाई की लाश नग्नावस्था में पाई गई.. अर्ध ज्ञात विवरण इस प्रकार है विझवारिन बाई के पति के अतिरिक्त कईयों से आम अनैतिक संबंध थे.. जो पैसे आध ाारित थे.. दो द्वारा तय शुदा संभोग स्वरूप में अचानक किसी तीसरे द्वारा देख लेने पर सहभागिता मांगने के अस्वीकार पर झगड़ा जुआ झगड़े मे विझवारिन बाई की मृत्यु हो गई।

हा प्रजातंत्र तेरा नाम "राई का पर्वत", तेरा नाम "तिल का ताड़" तीन चार दिन तक सारे स्थानीय समाचार पत्र सारे यूनियन नेता, सारी संयत्र व्यवस्था विझवारिन कांड चीखती रही और कुछ के सिवाय पगली की बलात्कार मृत्यु का किसी को पता भी नहीं चला।

"कहानी, उपन्यास, फिल्मों में मौत"

प्रमुख उपन्यासों कहानियों मे भी मृत्यु की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता है डॉ.जिवागो का इसी नाम के उपन्यास से पूरी कड़वाहट के साथ एक स्थल रूसी व्यवस्था पर कड़े शब्दों में ट्रेन डब्बे में लाश मुआइने के बाद यह कहना कि यह नई बीमारी है रूस की जिसका नाम है भूख और इसका विवरण ही शायद बोरिस पेस्टरनक को नोबल पुरस्कार दिला देता है। पर्ल एस.बक

ने नोबल पुरस्कार प्राप्त गुड अर्थ में चीन के अकाल की मृत्युओं तथा स्थितियों का मार्मिक यथार्थ वर्णन किया है। नोबल पुरस्कार हंगर में भूख का मरणासन्न करीबी चित्रण है। लांग जर्नी १९११ नोबल पुरस्कार पुस्तक के आंरभिक पृष्ठों में जीवन मृत्यु बर्फ युग संघर्ष का तथा जंगल में वृक्ष गिर्द भीड़ का सटकर सोने तथा तथा रात्रि जानवरों द्वारा खा लिए जाने का यथार्थवत चित्रण है। नोबल पुरस्कार प्राप्त "ओल्ड मैन एंड सी" तो मानव जन्म मरण संघर्ष का ही मार्मिक चित्रण है और संघर्ष मृत्यु के साथ मानव विजयान्त कथा है। नोबल पुरस्कार प्राप्त गीतांजली अमर भाव काव्य धारा है। प्रेमचंद की सप्रयास दाहिने हाथ लिखी एक कहानी का नाम है कफन। प्रेमचन्द की बाकी सारी कहानियां सहजतः लिखी गई हैं। कफन कहानी प्रगतिशीलो जनवादियों की जीभ की नोक पर धरी है। यह कहानी मृत्यु तथा लाश भुलाने की कहानी है। प्रेमचन्द का प्रसिद्ध उपन्यास गोदान- अप्रतिम जीवन योद्धा होरी की पत्थर खोदते जीवन हार जाने से डोली में घर लौट महाप्रयाण क्षमा पश्चात् सवा रुपये गोदान प्रतीक के हाथों से फिसलने के साथ समाप्त होता है।

फिल्मी मृत्युएं अधिकांशतः मूर्खता पूर्ण अज्ञानी तरीके से फिल्माई जाती हैं। तथा इनमें विलेन की मृत्यु जितनी मूर्खतापूर्ण अज्ञानमयी होती है उतना ही शायद जनता उसे पंसद करती है। इसीलिए तो उसे बारम्बार अधिक मूर्खतापूर्वक दिखाया जाता है। जेम्सबांड फिल्मों में ००७ को पर मृत्यु के तथा स्व अमरता के सर्वाधिकार प्राप्त होते हैं। वह हर बार मरते मरते बच जाता है सर्व देखी मधुयामिनी के साथ। भयावह डरावनी फिल्मों या हारर सीरीयलों में ड्राकुला या जिदें हो गए मुर्दो को भी अतंतः मरना ही पड़ता है पर ये मुर्दे मरते मरते भी जाने कितने अंधविश्वास जिन्दों में जिन्दें कर जाते हैं। वर्तमान में कुछ मृत्युओं रुदाली मां तथा बीबीयों को मैने हारर शो मुर्दा जीवित होने की कल्पना अपने मृत परिजनों में करते सुना है।

"श्मशान घाट"

वह क्या है जो मरने के बाद और अधिक प्रखर जिन्दी हो उठती है? उत्तर है मृत्यु। भिलाई नगर बिलासपुर राजहरा के श्मशान घाट भी कोई श्मशान घाट है जहां मुर्दो का भी जलने का मरने का मन नहीं होता है। श्मशान घाट तो है बरेली का. . वाह क्या चीज है! उसे देखो तो जिन्दों का भी वहां मरने का मन हो जाता है। श्मशान घाट हो तो बरेली जैसा!

"अन्तिम संस्कार"

मरण संस्कार कराना कभी कभी गुनाह लगता है तनजानिया सोंगेया में वडगांवा कन्सट्रक्शन कंपनी में एक भारतीय की मृत्यु हो गई। तुरंत से तत्काल मुझे बुलाया गया.. छिपी गाड़ी, मुर्दा लकड़ी, मिट्टी तेल आदि दूर अपरिचित घने जंगल ले जाए गए. . आनन फानन द्रुततम गति लकड़ियां सजी.. मिट्टी तेल नहाई और लाश भभका दी गई.. फिर किसी ने मुड़कर भी न देखा उसका क्या हुआ.. सारे संस्कार मंत्र मेरे मुंह में धरे के धरे रह गए.. सोंगेया में श्मशान घाट नहीं कब्रिस्तान है.. जो हिन्दुओं के लिए बेकार हैं और मुर्दा जलाना वहां गुनाह है। इतना आनन फानन मैंने कभी भी दाह संस्कार नहीं कराया है।

दाह संस्कार करा.. स्नान करा.. तत्काल नामकरण संस्कार कराया या अन्न प्राशन संस्कार कराना यही तो आदमी को बड़ा करता है। समझाता है दो दिन की जिन्दगी है.. दो दिन का मेला आए भी अकेला जाए भी अकेला। मैं जीवन सच मृत्यु सच खूब खूब समझता हूं.. समझता हूं टूटे अंग.. अर्ध अंपग.. खाट पड़ा.. टाट पड़ा.. घिसटता.. खिसकता.. खांसता वांसता.. ग्लूकोज़ चढ़ा.. दर्द कराहता.. पुकारता चीत्कारता.. आदमी आधा नहीं होता है। पूरा का पूरा ज़िन्दा है रहता और मरता है तो पूरा है मरता। मौत पूर्ण है। अर्ध अपूर्ण नहीं। हर ज़िन्दा आदमी मौत से कहीं कहीं बड़ा है। खुद ही खुद को गर वह मुर्दा न समझे।

मौत ने तरस तरस कर, मेरी जिन्दगी की भीख मांगी- मैंने मौत को कुछ न दिया- जीवत्व के सिवा- वो जिन्दगी हो गई।

सिफर नहीं मौत सफर है मौत! साधना सीढ़ी है मौत! मोक्ष सीढ़ी है मौत! हर आदमी की सबसे बड़ी शिक्षक दोस्त है मौत।

"पुनर्जन्म और योगी"

पूर्व जन्म की सच्ची घटनाएं कितनी सच्ची हैं मैं नही जानता। यह जानता हूं कि पुनर्जन्म तय है कि मुसाफिर थमता नहीं कार्य थमता नहीं। अगर पुर्नजन्म की कुछ घटनाएं सत्य मानी जाएं तो पुर्नजन्म झूठ मानना पड़ेगा। पुर्नजन्म की इतनी कम घटनाएं यह कहती हैं कि बस इक्का दुक्का कभी कदा पुर्नजन्म है होता बाकी सबका नाश है होता। सच्चा प्रमाण एक सटीक हर बार सटीक होता है। "मैं हूं" सच्चा प्रमाण है अतः पुर्नजन्म है। मैं था बच्चा, मैं हूं युवक, मैं होऊंगा अधेड़, मै होऊंगा बूढ़ा मैं होऊंगा बच्चा यह चक्र प्रमाण है पुर्नजन्म का।

पूर्वजन्म योगी को याद आ सकता है अतः उच्च स्तर पंहुचे शंकराचार्य, कुमारिल, सुकरात, दयांनदादि का, यह इतिहास तथ्य धार्मिक वैज्ञानिक, सामाजिक खोज का विषय है कि महापुरुषों ने पुर्नजन्म पश्चात पूर्व जन्म विवरण क्यों नहीं बताया? पुर्नजन्म के सारे प्रमाण औसत आयु जीवन जीने वालों के हैं। क्या महापुरुष महापुरुष नहीं थे? और ये आम आदमी महापुरुष थे? या इसका स्थान, काल, परिस्थिति, मृत्यु प्रकार से भी संबंध है? मृत्यु सबसे बड़ा प्रश्न चिह्न है.. जीवन जितना बड़ा उत्तर है उससे बड़ा

प्रश्न चिह्न मृत्यु का छोटा सा सच है।

"जड़ से जड़ की खोज"

सारा भौतिक शरीर क्रिया प्रतिक्रिया है। सारा विश्व धन ऋण खेल है। सारा ब्रम्हांड एक आवेश संतुलन असंतुलन खेल है - इलेक्ट्रान निगेटिव्ह का धलेक्ट्रान पाजिटिव्ह ढूंढ लिया गया है ऐसा विज्ञान का मानना है पहले नहीं मानना था। **विज्ञान नाम ही संदेहों का है** पहले विज्ञानको को संदेह था इलेक्ट्रान निगेटिव्ह तथा प्रोटान पाजिटिव्ह संतुलित है। आज विज्ञान क्वार्कों के अबुल सलाम के "अ" "ब" आदि अल्प महा सत्यों के संदेहों भटक अटक लटक रहा है। कौन जाने फोटान का प्रतिफोटान, ग्रेवीटान का प्रति ग्रेवीटान विज्ञान ढूंढे.. क्योकि स्वतः फोटान या ग्रेवीटान या चुम्बकान गतिशील नहीं हो सकता.. गति चिह्न ही असंतुलन है। शरीर विज्ञान में मानव इस असंतुलन क्षेत्र में अपेक्षाकृत बहुत कम पहुंच रखता है.. वह बोन मारो (हड्डी सार) के टी तथा बी लिम्फोसाइटस के नियंत्रकों (ऋणात्मक रूपों) तक पहुंच रहा है पर इससे आगे जहां और भी है। पूरा विज्ञान एक बात भूलता है यह है कि वह मात्र सत है अर्थात जड़ है तथा जड़ साधनों से जड़ की खोज कर रहा है।

"विज्ञान मूर्खताएं उसे कर देती है और बौना"

मूर्ख है विज्ञान बीमारियों के जीन स्तरीय वंश दर वंश प्रवाहित होने वाले कारण ढूंढता है - बीमारी नामक तथ्य जो कि कुतथ्य है से भी बौना विज्ञान.. छिः! इतना बौना कि जो दर्में से छोटा है, कैंसर से छोटा है, एलर्जी से छोटा है, पार्किन्सन बीमारी से छोटा है.. मानव बनाने का दम भरता है। विज्ञान मानता है संस्कृति जीन संक्रमणित नहीं होती है। जिस तरह दुर्घटना पर आध ाारित दुर्घटना से छोटा कारखाना अधिनियम दुर्घटना समाप्तनहीं कर सका है न कर सकता है जब तक कि वह सुमानव तथा सुघटना आधारित नहीं होता है इसी तरह मृत्यु विजय विज्ञान या चिकित्सा विज्ञान तब तक मृत्यु से या बीमारियों से बड़ा नहीं हो सकता जब तक कि वह सुमानव, सुस्वास्थ्य आधारित नहीं हो जाता है। सर के बल खड़ा चिकित्सा विज्ञान आज यह सोचता है कि कैसे स्वास्थ्य संस्थान को संवेदनहीन मुर्दा करके मानव में न मम प्रत्यारोपित कर उसे स्वास्थ्य दिया जा सके यह मूल चिन्तन ही विकृत है.. यह चिन्तन ही मुर्दा है.. स्व स्वास्थ्य संस्थान को मुर्दा करके अगर शरीर के एक अंग न मम प्रत्यारोपित किया जाएगा तो संवेदन हीनता कारण स्व स्वास्थ्य संस्थान दूसरी जगह क्षमता खो देगा। दर्द निवारकों का सतत उपयोग करने वाले सतत दर्द पाल लेते हैं।

"आधुनिक चिकित्सा विज्ञान और शहरी नाक्षरी मुर्दे"

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान मुर्दे पैदा कर रहा है.. इसका अंतिम लक्ष्य संसार को मुर्दो से भर देना है.. चलती फिरती लाश को क्या जिन्दा कहा जा सकता है? संवेदनहीनता क्या है? मस्तिष्क कोषिकाओं में सोडियम पोटेशियम के झिल्ली आर पार के असंतुलन का न होना या कम होना? बारम्बार के तीव्र शमन दवा प्रयोग से यह असंतुलन कमी (मुर्दापन या जीवत्व ह्रास) स्थायी हो जाता है। ऐसे जीवत्व ह्रासित व्यक्तियों से समाज भरा पड़ा है। मैं अपने जीवन मे जब इन सतत् दवाखोरों से मिलता हूं तो दो पल भी चर्चा नहीं कर सकता.. इनका थोड़ी ही देर में फ्युज उड़ जाता है.. ये कहते हैं उपर से निकल गई, ऊंची बात है, अजीब बात है, तुम अपवाद हो, समझ नहीं आती, भाषा क्लिष्ट है आदि। ये सारे वर्तमान चिकित्सा व्यवस्था के मुर्दे हैं। ऐसे मुर्दो की शहरों में भरमार है.. संवेदनहीन पद, धन, यश, पुत्त लोलुप संकीर्ण कटे हुए छोटे छोटे। लोग गांव में अभी बचे हैं। वहां चर्चा में आज भी लोगों का फ्यूज नहीं उड़ता है.. वे आक्षर लोग हैं जिन्होने रामायण, महाभारत, उपनिषद, गीता, भागवत, श्रुत अक्षरों से पाया है। शहरी लोग नाक्षर हैं.. पढ़कर भी न पढ़े हैं, सारे डॉक्टर, सारे इन्जीनियर, सारे वकील, सारे नेता शपथ लिए हुए शपथ हीन जीवन जीते हुए जिनमें से नब्बे प्रतिशत से भी अधिक वर्तमान चिकित्सा पद्धति के मारे हुए हैं। ह्रासित जीवन शक्ति ह्रासित जीवन शक्ति के आधार को जन्म देती है। अर्ध पूर्ण को जन्म नहीं दे सकता है.. अर्ध को चतुर्थांश से पूर्ण नहीं किया जा सकता है। यह मोटा सा सिद्धांत वर्तमान मृत्यु विजय जीवन गढ़ने, शरीर प्रत्यारोपित करने वाले, नोबल पुरस्कार के झंडे गाड़ने वाले विज्ञान को नहीं समझता। राजहरा की एक सच्ची घटना है.. एक मेकेनिकल इंजीनियर की व्यवस्था त्रुटि के कारण एक रेलगाड़ी राजहरा पहाड़ के नीचे ढाल पर पांतों पर दौड़ गई.. फिर पटरी बदल व्यवस्था का मानव सहारा ले उस गाड़ी ने एक स्टापर तोड़ा और सामने की छोटी पहाड़ी पर चढ़ते इंजन डब्बे गुत्थम् गुत्था हो गए। उसी मेकेनीकल इन्जीनीयर ने डब्बे इन्जनों के पुनर्निर्माण का द्रुत कार्य किया और उसे विशिष्ट पुरस्कार देकर प्रमोशन भी दिया गया। वर्तमान चिकित्सा सार भी यही है। मानव एक वृक्ष है ऊर्ध्व जड़ों का मनुष्य वृक्ष। चिकित्सा विज्ञान इस वृक्ष की जड़ को काट काट के संवेदनहीन करके कमजोर कर कर के दीन कर कर के जिला रहा है.. भूल रहा है कमजोर जड़े कमजोर डाले होंगी। भविष्य में और कमजोर बीज कमजोर वृक्ष होंगे और कमजोर वृक्षो को और कमजोर करने की विधियो के नोबल पुस्कार होंगे। उलट घटिया क्रम अवनति का कहां थमेगा? काश यह पुस्तक इसे रोक सके? इससे यह थम सके??

"वेद विज्ञान"

वेद इस विज्ञान को सिर के बल खड़ा कर देता है। **पश्येम शरदः शतम्**... शतवर्ष स्वस्थ देखें। **शृणुयाम शरदः शतम्**.. शतवर्ष स्वस्थ सुनें। **प्रब्रवाम शरदः शतम्**.. शतवर्ष स्वस्थ बोलें। **अदीनाः स्याम शरदः शतम्**.. शत वर्ष अदीन स्वस्थ होएं। **जीवेम शरदः शतम्**.. शतवर्ष स्वस्थ जीएं। **बुध्येम शरदः शतम्**.. शतवर्ष स्वस्थ बोध करें। **रोहेम शरदः शतम्**.. शतवर्ष स्वस्थ बढ़े। **पूषेम शरदः शतम्**.. शतवर्ष पुष्ट रहें। **भवेम शरदः शतम्**.. शतवर्ष स्वस्थ बने रहें।

भूयेम शरदः शतम्.. शतवर्ष स्वस्थ भव्य रहें। **भूयसीः शरदः शतात्**.. शताधिक वर्षों तक स्वस्थ, देखें, सुनें, बोलें, अदीन होएं, जिएं, बोध करें, बढ़ें, पुष्ट रहें, बने रहें, भव्य रहें।

"न मम चिकित्सा और आदमी कुतरन"

मानव बड़ी दिव्य चीज है। अव्यक्त दिव्य है जीवन इसे व्यक्त दिव्य होने मिला है.. इसे किसी भी विधा से काटो मत, छांटो मत, टुकड़े छोटा मत करो.. न मम मत करो.. कम मत करो.. अदीन मत करो.. अबोध, अभव्य, अरोह, अपुष्ट मत करो।

न मम चिकित्सा सद्गति मृत्यु के स्थान पर दुर्गति मृत्यु देती है ।

मैंने देखे हैं वे अर्ध मुर्द लोग
दवा ही है जिनके जीवन का रोग।

"अदीन जीवन ही है सद्गति मृत्यु"

सारी सद्गति मृत्युएं गवाह हैं अदीन जीवन की। अदीन जीवन बड़ी ऊंची चीज है। दीपक तले उजाला कहावत यहां चरितार्थ होती है। दीपक तेल बाती रोशनी सभी अगर रोशनी हो जाएं तो? नीचे लौ उपर लौ दिए तले उजाला।

मैने अहसासें है वे पूर्ण लोग।
अमृत ही है जिनके जीवन का योग।।

निवृत्ति, ज्ञानदेव, सोपान देव, मुक्ताबाई.. द्वि द्वि वर्षीय उम्रांतर युक्त त्रि भाई एक बहन.. आत्म निष्ठ विलक्षण सामर्थ्यशाली.. चारों ने अपनी जीवन लीला कृतकृत्य हो युवावस्था में ही संजीवन समाधि में समेट ली। इनके गुरु निवृत्तिनाथ स्वयं इनके बड़े भाई थे.. निवृत्ति ही मलिका हो जिस जीवन की उसकी अदीनता के क्या कहने हैं? निवृत्तिनाथ निवृत्ति स्वरूप थे। ज्ञानेश्वर उनकी निवृति गा.. १) सुख प्रेम धैर्य पा.. २) वैराग्य जागृत हो.. ३) वासना गांठ मुक्त हो.. ४) नेत्रों मे ज्ञानांजन लगा, ५)आत्म दर्शन कर, ६) स्थिर बोध हो, ७) धर्म संस्थापना कर ज्योत से ज्योत मिला संजीवन समाधि रूपी सदगति मृत्यु को प्राप्त हुए।

साठ वर्ष अदीन जीना शतवर्ष दीन जीने से बेहतर है। विष मरण से क्या कभी मरण का इलाज होता है? मरण का इलाज अमृत से होता है। क्या विज्ञान के पास कोई अमृत विधान है? क्या अमृत प्रणाली है? लक्षणों में भटकता क्या लौटेगा कभी मूल की ओर? डालियों का इलाज क्या जड़ें ठीक कर देगा? विज्ञान की भूल महा भूल है कि संस्कृति और जीन अलग हैं। जीन से सूक्ष्म संस्कृति है इसके मध्य कई स्तर विज्ञान को मात्र अंश ज्ञात हैं।

भ्रूण आधार है जीवन का.. भ्रूण बीज है मानव वृक्ष का। क्या विज्ञान के पास भ्रूण पुष्टि, भ्रूण स्वस्थता, भ्रूण निरोगता की कोई योजना है? भ्रूण जीवन का नक्शा है। सारा जीवन भ्रूण पर निर्भर करता है। इसके जीवन लक्षण मूल जीवन लक्षण है। इस भ्रूण का आधार माता पिता हैं। क्या आज विश्व के किसी भी डाक्टर के पास इन माता पिता द्वारा निर्मित भ्रूण के स्वस्थ निर्माण की योजना है? नहीं है.. उन्मुक्त काम, हा-हू, उछल-कूदमय जीवन.. स्कूटर कार बस धचकों में दौड़ती जिन्दगी की गाड़ी.. स्वतंत्र अश्लीलता.. सत मानकों से भटके खाद्य.. सिगरेट, तम्बाखू, गुटके, पराग शब्द का अपमान करते अपराग, अमानक चंद.. ओर इसके साथ संवेदनहीन करती दवाइयां, कोषिका तोड़ कम्प्यूटर, टी.वी. ट्यूब लाइटों के अप्रकाश.. चिकित्सा किरणों के अप्रकाश.. न मम चिकित्सा.. द्यौ, अंतरिक्ष, धरा, वनस्पति, औषधि, आप, विश्वेदेवा (सब में तारकासुर) अशांति.. स्वतंत्र पतनशील ज्ञान.. यह सारी योजना माता पिता अर्धीकरण की है। आधा आदमी आधी औरत मानव को सबसे बड़ी गाली है। पर वर्तमान प्रजातंत्र स्वतंत्रता काल आधा आदमी आधी औरत गढ़ने की पूरी योजना है। पुरुष पुरुष विवाह, नारी नारी विवाह की जिस व्यवस्था छूट हो.. और तो और पुरुष स्त्री कृत्रिम अंग, स्त्री पुरुष कृत्रिमांग व्यवहार की जिस तंत्र छूट हो.. जिसमें गृहस्थाश्रम तथा काम संबंध ा उम्र समझ न हो तथा स्कूलो में काम शिक्षण हो.. उस व्यवस्था मानव भ्रूण की ऐसी तैसी तो होनी ही है और जीवन की ऐसी तैसी तो होनी ही है। सारी व्यवस्था ही जहां रोगों की हो और रोग उपचारों की नहीं रोग लक्षण उपचारों की नोबल पुरस्कारी भीड़ उच्च विज्ञान दौड़ हो.. वहां कौन स्वस्थ मानव भ्रूण की अलख जगायेगा? कौन प्रजतंत्र, सांतसा, मम चिकित्सा, संस्कार मय, पुरुषार्थ मय जीवन प्रणाली को स्थापन करेगा?

"भ्रूण और भूषण भूत सम्यकीकरण"

भारतीय संस्कृति जानती है कि मरण रक्षण पूर्व भ्रूण काल से प्रारंभ हो जाता है। ग्यारह संस्कारों द्वारा भूषण भूत सम्यक्-कृत समावर्तनी युवक एवं समावर्तनी युवति विवाह पश्चात (समावर्तन गुण, विवाह परिभाषाएं, परिवार पुस्तक में देखें) क्रमशः

चालीस वर्ष की उम्र तक परिपक्वता प्राप्त करते हैं.. यह नियमानुसार जीवन जीने पर होती है। वर्तमान में पाश्चात्य में यह उम्र ३२ से ३५ तथा भारत में ३० वर्ष के करीब है। गर्भाधान में युवक युवति सम गुण बल सामर्थ्य क्षेत्रानुसार पश्चात वैद्यक शास्त्रानुरूप वर्ष दर वर्ष धातु रज परिपक्वता एवं गुण का ध्यान रख संतान प्रारूप तय कर गर्भाधान समय निर्धारित किया जाता है। ऋतुकाल (रजदर्शन से चार रात्रि छोड़ अन्य रात्रि ऋतु दान दिवस है। यह सोलह रात्रि तक में ही है अन्त्य रात्रियां उत्तम माने गईं हैं) से तेरह दिवस पूर्व गर्भाधान प्रक्रिया तैय्यारी प्रारंभ होती है। इसकाल युवक तथा युवति को सर्वौषधि घृत युक्त अति सात्विक भोजन कर ऋत एवं श्रृत नियमानुकूल सप्रयास जीवन जीना चाहिए पंच यज्ञों का इसमें निश्चिततः समावेश होगा ही। इसके पश्चात ऋतुदान काल नियत दिवस गर्भाधान संस्कार पूर्ण होगा। यज्ञ करने के पश्चात समस्त माता पिता, आचार्य, अतिथियों का अभिवादन कर. . आर्शीवाद ले.. रात्रि प्रथम प्रहर पश्चात अंतिम पहर पूर्व गर्भाधान करे। स्त्री पुरुष का उस काल सम, सौग्य, प्रेममय, उदात्त भाव, उच्च मानसिक रहना आवश्यक है।

गर्भाधान भाव होते ही यज्ञ करे तथा इसके पश्चात सतत नियमबद्ध सात्विक एवं विशेष भ्रूण स्वस्थ विकासाहार योजनाबद्ध करे। स्वाध्यायादि पंच यज्ञमय जीवन रहे। इसके दूसरे माह पश्चात जब भ्रूण शरीरांग बीज बनने का समय हो तो पुंसवन संस्कार तथा चौथे माह एवं सातवें माह सीमन्तोन्नयन संस्कार करे। ये संस्कार माता के माध्यम से शिशु भ्रूण में अवतरित होते हैं। इन संस्कारों मे खान पान, पठन पाठन सात्विक से रहने के भी निर्देश हैं। यह वह भ्रूण विकास सकारात्मक योजना है जिसमे मरण विजय, बीमारी विजय, स्वस्वास्थ्य संस्थान सशक्ति के आधार बीज हैं। इसके पश्चात भी शिशु विकास के साथ ही साथ जातकर्म संस्कार, नामकरण संस्कार, निष्क्रमण संस्कार, अन्न प्राशन संस्कार, चूड़ाकर्म, कर्ण वेध, उपनयन, वेदारम्भ संस्कार शिशु बालक के स्वस्थ सशक्त सामाजीकरण, व्यवहार सीखना, समझ बढ़न, भूमिका सीखन-समझन के हैं। यह सूक्ष्म संस्कृति योजना है जो दिन ब दिन समस्या रूप में विकराल होते चिकित्सा क्षेत्र को सीमित कर दे सकती है। विश्व में फैलती बीमारियों, दीन दवा जिन्दा या मुर्दा जिन्दों की उपजो पर, चिकित्सा क्षेत्र के नियंत्रण के बाहर की बीमारियों पर रोक लगा सकती है।

"वैदिक जीवन प्रणाली अमृत है"

अमृत का एक अर्थ अल्प मृत्यु रोग निवारक है। वैदिक जीवन प्रणाली जो संस्कार मय, वर्णाश्रमयुक्त, ऋतु ऋतु संधि युक्त, मम चिकित्सा पथ महायज्ञ युक्त, तथा वैदिक कार्य परिस्थिति युक्त है.. अल्प मृत्यु रोग निवारक है। त्रि क्लेश मुक्ति से ऊपर यह स्वस्थ आमोद प्रमोदमय आह्लाद मय अमृत जीवन की संकल्पना है.. त्रिक्लेश हैं- एक आध्यात्मिक जो आत्मा शरीर तथा मन व इन्द्रियों की अशांति अर्थात विकार, अशुद्धि, चपलता से होते हैं। इनमें अ) भ्रूण विकाराधारित.. ब) अविद्या, रागद्वेष, मूर्खता, इर्ष्या, क्रोध, अधैर्य, चिन्ता, तटस्थता विक्षेप आदि जनित मानसिक आधिरूप.. स) ज्वर, पीड़ा, शिरोवेदना, अतिसार, अर्धांग, चोट, न मम उत्पन्न शारीरिक व्याधिरूप.। दो आधिभौतिक दूसरे प्राणियों से प्राप्त.. शत्रु, वाहन, दुर्घटना, सांप, कुत्ते आदि का काटना, चोरी, झूठारोपण, असत्यापवाद आदि। तीसरा आधिदैविक जो भूकम्प, अतिवर्षा, अनावर्षा, अतिताप, अतिशीत, विद्युतपातादि। वैदिक जीवन प्रणाली अमृत है।

अमृत शब्द के अन्य कुछ अर्थ हैं- १) स्वरूप से नाशरहित, २) सदामुक्त, ३) जलवत शांत स्वरूप, ४) ब्रह्मअमृतात्मक, ५) परमात्मा, ६) जलादि पदार्थ। एक से पांच तक आध्यात्मिक एवं छठवां आधिभौतिक है। छठवें में वे सब पदार्थ आते है जो "मम चिकित्सा" में प्रयुक्त होते हैं।

"विज्ञानखोजों की अन्त्य सीमा वेदमन्त्र या उपनिषद श्लोक"

आधुनिक जीवन मृत्यु की, विज्ञान की संकल्पनाएं तथा भौतिक विज्ञान की सूक्ष्मतम होती जा रही संकल्पनाएं, वेद के मंत्रो या उपनिषद के श्लोकों के छोटे छोटे टुकड़ों की बड़ी बड़ी व्याख्याएं है। ये ओर टुकड़े हैं- **"अणोर अणीयान महतो महीयान"** का आधा प्रथम टुकड़ा.. **तदेजति तन्नैजति** का प्रथम आधा टुकड़ा, अक्षर शब्द की अक्ष- र इन्द्रियों का रमण। इन तनिक से सत्यों की अर्ध भौतिकी व्याख्या का भटकाव है अटकाव है, अर्ध सुलझाव है वर्तमान का विज्ञान। संस्कृति अति विश्वास पूर्वक तन शरीर, (स्थूल शरीर) सूक्ष्म शरीर, संकल्प शरीर की बात कहती समझती है.. पर विज्ञान अर्धविश्वास पूर्वक स्थूल शरीर भर की बात कहता है। वर्तमान में पदार्थ के रूपों में ठोस, द्रव, वायु, तथा प्लाजमा रूपों के भान के साथ साथ जैव रूप की भी अवधारणा उभर रही है।

"स्वस्थता के संस्कृति-प्रारूप"

सूक्ष्म धरातलीय स्वस्थता के संस्कृति में कई प्रारूप उपलब्ध हैं.. ये प्रारूप मृत्यु को परे ढकेलने तथा रोगों से मुक्ति के हैं.. स्वस्थता के हैं। जीवात्मा पारखी मन द्वारा वाक् धारण करता है। वाक् धारणा करता अंतः गर्भ में बोलता है (परा) मन से उत्प्रेरित, (पश्यंती) प्रकट रूप में द्योतित, (मध्यमा) स्वर रूप में परिणत, (वैखरी) वाक् को ऋत् पद में गहन प्रयुक्त करते है। (ऋग्वेद १०/१७७/२) जीवात्मा पारखी, अंतः गर्भ (परा) पश्यंती, मध्यमा, वैखरी, अभिव्यक्ता की ऋत् आपूर्त स्वस्थता का वह प्रारूप है जो इन्द्रियों की इन्द्रियों द्वारा ढूंढा जा सकता है। इन्द्रियों निर्मित औजारों का सूक्ष्म औजार तो बड़ा ही भोथरा है। परा पश्यंती मध

यमा, वैखरी अभिव्यक्ता (वाक् सम्पूर्ण) ऋत् से प्राकृतिक नियमों नियम बीजों (अणोर अणीयान, महतो महीयान, मनसा जवीयो, अनेजदेकं, एवं ब्रह्म, तत्त्वमसि, तदेजति तन्नेजति, वातरश्ना (वायु की वायु रज्जु-सूक्ष्मतम प्राण) पारे रजसः (रजगुण से अतिपार), अछिद्रोहनीं (सूक्ष्मतम वह पात्र जिसमें छिद्र न किया जा सके) आदि से ही नहीं वरन श्रुत नैतिक नियमों से भी आपूर्तता की अमृत संकल्पना वेद में है यह योजना "शिव संकल्प" यजुर्वेद ३४/१-६ में दी हुई है यहां हम मात्र इंगनार्थ अर्थ दे रहे हैं। जिससे सदा कर्म धर्म निष्ठा मनस्वी मननशील, ध्यान करने वाले बुद्धिमान लोग अग्निहोत्रादि वा धर्म संयुक्त व्यवहार वा योग यज्ञ और विज्ञान संबंधी व्यवहारों में इष्ट कर्मों को करते हैं जो अपूर्व सामर्थ्ययुक्त अर्थात सर्वोत्तम गुण कर्म स्वभाव वाला, पूजनीय और प्राणी अन्तस रहने वाला है अथवा प्राणी मात्र के हृदय में संगत एकी भूत हो रहा है। वह मेरा मनन विचार करना रूप धर्मेष्ट अर्थात सत्य ध र्म के अनुष्ठान की इच्छायुक्त होवे। मन "अंतःकरण बुद्धि चित्त अंहकार" रूप वृत्तिवाला चार प्रकार से (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद) भीतर प्रकाश करने वाला, समस्त कर्म साधक है। वह न्याय और सत्याचरण प्रवृत हो। (सप्त होता) पांच ज्ञानेन्द्रिय बुद्धि आत्मा यह योग विज्ञान युक्त मोक्ष रूप संकल्प वाला हो।

चिकित्सा विज्ञान को अस्वस्थता के घटिया स्तर से स्वस्थता के बढ़िया स्तर तक उठना ही होगा और यह समझना होगा की अस्तित्व मात्र औजार मापित जांचित आकार नहीं है। अस्तित्व वह स्वस्थता है सूक्ष्म धरातलीय स्वस्थता है जहां मानव में वाणी ऋग्वेद रूपी ऋचा से रचा पचा, मन यजुर्वेद रचा पचा, प्राण सामवेद रचा पचा, इन्द्रियां अथर्ववेद रची पची हों तथा अस्तित्व प्राणमय ओजमय दिव्य हों। इस उच्च स्तर की तनिक सी क्षति से बीमारीयां मृत्यु का प्रारंभ होता है। इसकी स्वस्थता होने पर कभी मृत्यु नहीं आती है.. वरन मानव स्वयं सद्गतित मृत्यु में सहजतः प्रवेश करता है।

"मननात मंत्र"

वेद विचार बीज है। मननात मंत्र नियमानुसार एक एक विचार बीज से कई कई विचार सूक्ष्म आवेश उत्पन्न होते हैं.. तथा आयन आवेश से कहीं सूक्ष्म होते हैं.. एवं आयन आवेश के संतुलन पर एक असंतुलन होते हैं। शरीर हजार हजार से भी अधिक एन्जाइमों से सूक्ष्म परमाणु स्तरीय आयन आवेश व्यवस्था है जो एक व्यापक क्षेत्र एन्जाइमों के माध्यम से शरीर की प्रकृति विपरीत तथा प्रकृति अनुरूप क्रियाओं का नियंत्रण करती है। इन क्रियाओं शक्ति उत्सर्जन उपयोगन होता है यह व्यवस्था जड़ या सत् धरातलीय व्यवस्था है। इससे सूक्ष्म करोड़ करोड़ से भी अधिक विचार स्तरीय अयुत आवेश व्यवस्था है जो परमाणु स्तरीय आयन आवेश अवस्था के भी सूक्ष्म प्रकंपनावेश व्यवस्था के माध्यम से परमाणु स्तरीय आयन आवेश का नियंत्रण करती हैं। ये उत्तरोत्तर आवेश उत्तरोत्तर नियंत्रण या असंतुलन करते हैं इन असंतुलनों से संतुलन की ओर गमन से मृत्यु चरणों का आरभन विकसन प्रस्फुटन होता है जो अति क्रमशः पहले आदतों फिर शरीर में आग्रहण के माध्यमो से प्रस्फुटित होती है।

उपरोक्त का प्रमाण कई वेद मंत्र हैं

"परीवृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च।
मा मा प्रपन्निषवो देव्या या मा मानुषीरवसृष्टा वधाय।।
प्रजापतेरावृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं कश्यपस्य ज्योतिषाः वर्चसा च।
जरदष्टिः कृतवीर्योः विहायाः सहस्त्रायुः सुकृतश्चरेयम्।।"(अथर्ववेद-१७/ १/२८-२७) (वेद मंत्र जो अनायास मुझे मिल गए (ब्रह्म कृपा) मेरे उपरोक्त विचार को ज्यादा स्पष्टतः सुव्यवस्थित अभिव्यक्त कर रहे हैं।)

"स्वास्थ्य और नोबल पुरस्कार"

संपूर्ण स्वस्थ मानव स्वरूप स्थूल से सूक्ष्म दूसरे मंत्र में इस प्रकार है। १) बह्म स्वयं नारायण- नर घर- सूक्ष्मतम, २) आत्मा अहं, ३) ब्रहम ज्ञान, ४) वेद ज्ञान ज्योति, ५) वर्चस् ज्योति विस्तार, ६) बड़ाई गरिमा पूर्ण प्रवृति (भोजन) युक्त, ७) कृतवीर्य - पराक्रम शक्ति रूप, ८) विहायाः - विविध असंतुलन युक्त, ९) सहस्त्रायु - सहस्त्र अन्न युक्त - सहस्त्र अन्नीय, १०) सुकृतः सुनिर्मित सुकर्मयुक्त, ११) गतित।

इस मंत्र से यह स्पष्ट होता है कि स्वास्थ्य को छोटे छोटे नोबल पुरस्कार प्राप्त चिकित्सकों तथा अन्य चिकित्सकों ने जो बच्चों का खेल समझ रखा है वह वह नहीं है। स्वास्थ्य बड़ी व्यापक संपूर्ण योजना है। वर्तमान विज्ञान इसके ६) से ११) चरणों में अर्धभटक रहा है। वेद इस भटकाव को तीव्र बाणों के समान निरूपित करता इससे सावधान करता हैं। अथर्ववेद १६/१/२८ का अर्थ इस प्रकार है। वर्चस, वेद ज्ञान ज्योति (विचार समूह), वेदज्ञान आवरणित आत्मा मुझ तक (मैं इतना दृढ़ स्वस्थ आवरणित रहूं) आधि दैविक (दैव्या) और मानुषी (आधिभौतिक) वैचारिक आहारिक विक्षेप (इषवः - तीव्र बाण) न पहुंचे न मेरा वध करे।

यह एक संपूर्ण अवध योजना है.. अमृत योजना है। अवध नारायण इस योजना तक विज्ञान को गति करनी है।

"मैं तो चला था नन्हे कदम सत्य के रास्ते पे।
परमात्मा ने कदम ऊंगली पकड़ अमृत पहुचां दिए।"

ब्रह्म स्वयं और जीवात्मा से संदर्भ में **"यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्यु"** तथ्य महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार परमात्म गुणों से हटते ही मृत्यु चरण हमारी ओर बढ़ना शुरु हो जाते हैं। सुकर्म स्वास्थ्य के लिए सुगति के लिए प्रथम स्वास्थ्य ढांचा है सहस्त्रायु सहस्त्र सहस्त्रीय अन्न प्रभाव इसके विज्ञान नाम है वायु, जल, अन्न, सब्जियां, फलादि जो बहुस्वादीय मोटे तौर पर तैंतीस स्वादीय तैंतीस वर्णाक्षर संघाती वत है। यह अन्न शरीर में सूक्ष्म विभाजित होकर गतित रक्त तथा मद्धिम गतित जल व्यवस्था के साथ वायु व्यवस्था द्वारा वितरित होता है। सहस्त्रायु कवच बड़ा स्थूल स्थायी विद्युत आवेश रहित व्यवस्था का नाम है। इस पर विहायाः स्थूल कवच कार्य करता है जो पूर्व की तुलना में सूक्ष्म है। सहस्त्रायू का निन्यानवे प्रतिशत भाग ओषजन, उदजन, नत्रजन, और ओषजन का बना है। विहायाः नाम बड़ा महत्वपूर्ण है.. यह एन्जाइमों द्वारा चय अपचय शक्ति ग्रहण एवं अवशेष त्याग व्यवस्था (द्वि विहायाः - अवशेष त्याग तथा शक्ति उत्सर्जन) है। विहाया असंतुलन अवस्था है पानी के साठ बिलियन अणुओं में एक अणु में उदजन (H) एवं उदजन अर्धओषिद (OH) धन ऋण आवेश होते है। इनकी कुल मात्रा निश्चित होती है पर आपसी मात्रा में कमाधिक अनुपाती परिवर्तन होता है H बढ़ने से OH^- कम होता हैं और OH^- बढ़ने से H कम होता है। इसके साथ ही साथ $H_2CO_3 \rightleftharpoons H^+ + HCO_3^-$ आवेश व्यवस्था भी है। इस पर चिकित्सा विज्ञान करीब अर्ध सीमा तक खोज कर चुका है। विस्तृत विवरण यहां नहीं दिया जा रहा है। इससे अगला कवच (वर्मण) कृतवीर्य या उत्सर्जित विभिन्न शक्तियों की व्यवस्था का है इस क्षेत्र विज्ञान कदम रख रहा है। अभी इस क्षेत्र विज्ञान के कदम अंधे हैं। इससे सूक्ष्म कवच है सप्त ऋषि कवच बड़ाई गरिमापूर्ण प्रवृति युक्त। इस क्षेत्र में विज्ञान को अस्पष्ट इंगन मात्र मिलें हैं। इससे सूक्ष्म वर्चस, वेद ज्ञान ज्योति, ब्रहम ज्ञान, अहं-आत्मा , ब्रहम के विवरण ग्रंथ सूक्ष्मतम विज्ञान ग्रंथ गीता, दर्शन, उपनिषद, ब्राह्मण, अरण्यक तथा इनके आधार वेद है जो पूर्णतः वैज्ञानिक है।

सहस्रायू सुक्रतु गतित के बाह्य चरणों में स्थैर्य संतुलन की परिपुष्ट अवधारणा वेद में इस प्रकार है १२) आनंद क्रियाएं, १३) सर्वेदेवाः, १४) विश्वेदेवाः, १५) वनस्पतयः, १६) औषधयः, १७) आपः, १८) द्यौ, १९) अन्तरिक्ष, २०) पृथिवी। ये नैसर्गिक हों. . इनमें क्रूर, घोर, तथा अनिष्ट शमन में हो। (अथर्ववेद १९/९/१४)

यह वैदिक स्वस्थ योजना है जिससे मृत्यु का मरण होता है तथा शताधिक वर्षों तक मानव बढ़ता, स्वस्थेन्द्रिय अदीन, अभय, दिव्य, नियमबद्ध रहता हैं।

डॉ. त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय

पी. एच. डी. (वेद), एम. ए. (आठ विषय),
सत्यार्थ शास्त्री, बी. ई., एल. एल. बी.,
डी. एच. बी., पी. जी. डी. एच. ई.,
एम. आई. ई., आर. एम. पी. (१०७५२)
६ए/सड़क ४२/ से.५, भिलाई नगर, (म.प्र.)

□□□